साहित्यलहरी सटीक

अर्थात्

श्री सूरदासकृत साहित्यलहरी का तिलक

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संग्रहीत ।

जिसको हिन्दीभाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये
क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक श्री म० कु० बाबू रामदीन सिंह ने
प्रकाशित किया ।



"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।
साहबप्रसाद सिंह ने मुद्रित किया ।

१८९२ ई०

हरिश्चन्द्र संवत् ८.

प्रथम वार १०००]. [मूल्य २) दो रुपया ।

राधे कियो कौन सुभाव । प्रानपति
बेदन विभूषित सुनगुन चितचाव ॥टेक॥
भानुबंसी रस सुधाग्रह ते न निकसन
पाव । रजनिचरगुन जानि दधिसुत
धरन रिपु हित चाव ॥ रजनिचरहित
भक्ष सो तन सरस दीपत भाव । सूरस्याम
सुजान सुकिया अघट उपमा दाव ॥१॥

टीका—राधे इति यह पद विषे स्वकिया नाइका पूरनउपमा अलं-
ार सारोपा लच्छना है ।

ाकिया लच्छन—निज पति की अनुरागिनि होई ।
स्वकिया ताहि कहै सब कोई ॥

भानपति के बेदन श्रवनन विभूषन है सुन आकास ताको गुन शब्द
ानुवंश मिथु तिन का रस हांस सुधाग्रह अधरन में रहत है । रजनिचरगुन
ाप उदधिसुत चंद धर महादेव तिन को रिपु काम मात जानत है काहे
को नाम मनसिज है जो मन में रहै सो जानै । रजनिचरहित महादेव
नको भष धतूर नाम कनक कनक नाम सुवरन सो है तनु कनक उपमा
र उपमेय से वाचिक दीपत धरम ताते पूरनउपमा अलंकार ताको लच्छन ।
ोरठा—उपमेयो उपमान, धर्म सहित बाचक जहां ।
पूरनउपमा जान, कहत सकल कवि मत समुझ ॥
अरु बराबरी के संबंध ते सारोपा लच्छन ।

टिप्पणी—सरदार कवि ने अपने टीका में इस पद को पाठांतर भी किया
और कुछ अर्थ में भी बदला है वह ज्यों का त्यों नीचे लिखा है ।

'श्री राधे कियो कौन सुभाव । प्रानपति बेदन बिभूषित सुन्यगुन चित चाव ॥ मानसरवासी सुधाग्रह तें न निकसन पाव । रजनिचरगुन जान दधिसुतधरन रिपुहित पाव ॥ रजनिचरहित भच्छ सो तन दिपत दीपक आव । सूरदास सुजान सुकिया अघट उपमा गाव ॥ १ ॥

राधे इति । सखी बचन राधा प्रति । वेदन श्रवन-में परत । सुंन आकास गुन शब्द ।-मानसरबासी हास सुधाग्रह अधर में रहत । रजनिचरगुन कोप । दधिसुतधरनरिपु काम जानत । रजनिचरहित सिव भक्षन कनिक । सुवरन सो तन दिपत में पूरन उपमा । स्वकिया नाइका ।

भदवर (ज़िला शाहाबाद परगने भोजपुर) के ताळुकेदार बाबू परमेश्वर सिंह इस पद का एक दूसरे अर्थ करते हैं बह रजनिचर का अर्थ चंद्रमा करते हैं और चंद्रमा का हित शिव और उन का भक्षण धतूरा और धतूरा को कनक कहते हैं । और इस अर्थ की पुष्टता निम्न लिखित रीति से करते हैं ।

चन्दनराम कवि कृत अनेकार्थ में लिखा है ।

दोहा—बिधुमित हरि हर सिंधु रवि, बिधुमित रतन चकोर ।
निशिचर उडगन चन्द्रमा, निशिचर राछस चोर ॥ १ ॥

अब रजनिचर और निशिचर का एक अर्थ है इस युक्ति से राक्षस का अर्थ चन्द्रमा हो गया फिर और बातों में तुल्यता ही रही । कनक का अर्थ कोष में यों लिखा है । कनक (; कन् चाहना वा चमकना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, धतूरा । रस कौमुदी में लिखा है ।

दोहा—कनक कनक ते सौ गुनो, मादकता अधिकाय ।
वा खाये बौरात नर, या पाये बौराय ॥ १ ॥

घ० क०—एक तें सरस एक जग में अनेक मद यामें गुन सबही ते नूतन लखात है ।
रसिकबिहारी रीत न्यारी या निहारी परे समुझे बनै सों कछु बरनी न जात है ॥
कनक कनकहू ते मादकता सौ गुनी है अमल अनूप सो सदाहीं अधिकात है ।
वाको जब खाय नर तबहीं सु बौरा होय याके ढिग आये पाये नेक में बिहात है ॥ १ ॥

हरि उर पलक धारो धीर । हित तिहारे करत मनसिज सकल सोभा तीर ॥ भूमिसुतअरिमित्ररिपुपुर ते निका-

सत आय । सुद्ध आषर भरत ग्रीषम
रीपुन मद्धे साय ॥ भानुतियजननी सु
हित की सहचरी गुन लेत । प्रथमहिं
उपमान सारंग सी करावत हेत ॥ हान
दिनपति सीस सोभा रंच राजत आज ।
सूर प्रभु अग्यान मानो छपी उपमा
साज ॥ २ ॥

हरि उर पलक इति या पद विषै उक्त ते मुग्धा नाइका लुप्ता अलंकार होत है ।

दोहा—नव जोबन को आगमन, मुग्धा कहिये ताहि ।
इक बिन दो बिन तीन बिन, लुप्ता भूषन आहि ॥

हे हरि पलक धीर धारो तिहारे हेत मनसिज सब वाके अंग में शोभा धरत है भूमसुत केवांच अरि बानर मित्र राम शत्रु रावन पुर लंका लंक जो कटि है ताते सुअच्छर सुवरन निकासे है ग्रीषमरिपु पयोधर कुचन में भरत है भान ते तीसरे मंगल ताकी जननी भूमि ताके हित घन ताकी सहचरी बिजुरी ताको गुन चंचल ताके करै प्रथम पहिल ताते सारंग मृग है जाके उपमान ऐसे नेत्रन में धरत है अर्थ चंचल करे है हान दिन रात को पति ससि कैसी सोभा रंचक थोरी राजत है मुष में इहां मुष उपमेय नाही है ससि उपमान सी बाचिक ताते लुप्ता है अज्ञान कहै अज्ञात छबि उपमा ते लुप्तोपमारीति ।

टिप्पणी—इस दूसरे पद में भी थोड़े अक्षर मूल और टीका में बदलकर सरदार कवि ने लिखा है ।

हरि उर पलक धारो धीर । हित तिहारे करत मनसिज सकल सोभा तीर ॥ भूमिसुत अरि मित्ररिपु पुर तें निकासत आप । सुद्ध आषर भरत ग्रीषम रिपुन मध्ये साप ॥ भानुत्रय जननी सु हित की सहचरी गुन लेत । प्रथम ही उपमान सारँग सो करावत हेत ॥ हान दिनपति सी सुसोभा रंच राजत आज । सूरप्रभु अज्ञान मानो छपी उपमा साज ॥ २ ॥

हरि उर पलक इति। या पद बिषे सखी की उक्त तें मुगधा नाइका लुप्ता अलंकार होत है।

दोहा—नव जोबन को आगमन, मुगधा कहिये ताहि।
इक बिन दो बिन तीन बिन, लुप्ता भूषन आहि॥

हे हरि पलक धीर धारो तिहारे हेतु मनसिज सब वाके अंग में सोभा धरत हैं। भूमिसुत किवाछ अरि बानर मित्र राम शत्रु रावन पुर लंक लंक जो कटि है तातें सुअछर सुवरन निकासै है ग्रीषम रिपु मेघ पयोधर कुचन में भरत है। भौंन ते तीसरे मंगल ताकी जननी भूमि ताके हित घन ताकी सहचरी बिजुरी ताको गुन चंचलता लेकर प्रथम पहिल तातें सारँग मृग है जाके उपमान ऐसे नेत्रन में धरत है अर्थ चंचल करे है। हान दिन रात भय तें रात्री को पति ससि ताकी सी सोभा रंच थोरी राजत है मुख में। इहाँ मुख उपमेय नाहीं है ससी उपमान सी वाचिक तातें लुप्ता है। अज्ञान कहै अज्ञात छपी उपमा तें लुप्तोपमा इति।'

बराढ़ी (ज़िला शाहाबाद परगना भोजपुर) निवासी पंडित महादेव पाठक इस सूरसागर का अर्थ निम्न लिखित करते थे। भूमिसुत का अर्थ भौमासुर अर्थात् नरकासुर और उस का शत्रु कृष्ण और उन का मित्र बलराम और बलराम का अर्थ राम कर के फिर रघुवंशी राम को लगाते थे और उन का रिपु रावन वा कुंभकर्ण उस का पुर लंका और शेष अर्थ पूर्ववत् करते थे।

रही यह शंका की बलराम का नाम राम नहीं है परंतु यह शंका व्यर्थ है क्योंकि मंगलकोष में राम का यों अर्थ लिखा है। राम० ना० पु० परशुराम, श्रीरामचन्द्र जी, श्रीबलराम जी गु० ३। और शब्दकोष में यों लिखा है। सं० राम (रम् खेलना, जिस में योगी रमते हैं अर्थात् जिस के ध्यान में लगे रहते हैं) पु० परशुराम (यह विष्णु का अवतार यमदग्नि ऋषि के घर त्रेता युग के शुरू में अन्यायी क्षत्रियों को दंड देने के लिये हुआ था) २ रामचन्द्र; दशरथ राजा का बेटा (यह विष्णु का अवतार अयोध्या के राजा दशरथ के घर त्रेता युग के अन्त में लंका के राजा रावण को मारने के लिये हुआ) ३ बलराम; श्रीकृष्ण का बड़ा भाई जो द्वापर युग के अन्त में रोहिणी के पैदा हुआ; ४ गु० सुन्दर, मनोहर, शुभ, ५ सुखदाई। और अनकार्थ मंजरी में लिखा है।

दोहा—राम सितासित सुभग पसु, परसुराम बलराम।
राम ब्रह्म आतम पवन, रामा ताको बाम॥ १॥

दूसरा अर्थ पं० महादेव पाठक यों भी करते थे कि भूमिसुत का अर्थ आग इस का रिपु पानी मीत सांप (शेष) रिपु मेघनाद पुर लंका और पूर्ववत्।

आज अकेली कुंजभवन में बैठी बाल बिसूरत । तररिपुपतिसुत को सुच सांची जान साँवरो मूरत ॥ दरभूषन षनषन उठाइ दै नीतन हरिघर हेरत । तनु अनुगामी मनि मै भैके भीतर सुरुच सकेरत ॥ ताहि ताहि सम करि करि प्यारी भूषन आनन माने । सूरदास वै जो न सुलोचन सुंदर सुरुच बषाने ॥३॥

आज अकेली इति उक्ति सषी की कै आज अकेली कुंजभवन में बाल बिसूरत है तररिपु जमुना पति कृष्ण सुत काम की स्याम मूरत जान कर के दर दुआर ताको भूषन पट छन छन उठाइ के नीत नयनन हरिघर पयोधर कुच हेरत है तनु अनुगामी जो छाया सो मनि मै भय कहै भीत में सुंदर रुच सो देषत है ताके समान ताही के करत प्यारी अनन्या-अलंकार मानत है सब जान ग्यातजोबना नाइका सुंदर अपनी रुच ते बषानत है ताको लच्छन ।

दोहा—जोबन ही के ग्यान ते, ग्यात जोबना होइ ।
उपमे को उपमान ते, कहत अनन्या सोइ ॥

टिप्पणी—३ रा सूरसागर के अर्थ में सरदार कवि ने ज्यों का त्यों रक्खा है। तररिपु नदी नदी से अर्थ यहां जमुना लिया है । जमुनापति कृष्ण इन का पुत्र प्रद्युम्न काम का अवतार हैं अतएव काम का अर्थ लिया गया ।

पं० महादेव पाठक जी हरिघर का अर्थ यों करते थे हरि बानर घर वृक्ष और वृक्ष का नाम पयोधर है और पयोधर का अर्थ कुच है. अथवा हरि अमृत घर समुद्र उस का नाम पयोधर है क्योंकि पयोधर का अर्थ यह है ।

दोहा—मेघ पयोधर बृच्छ कुच, अद्रिपयोधर आक ।

सं० पयोधर (: पयस पानी, वा दूध, धर रखनेवाला; धृरखना) पु० मेघ, बादल; २ स्त्री की चूंची ; स्तन ; ३ नारियल ; ४ गन्ना ; ५ सुगंधित घास । शेष अर्थ पूर्ववत् । एक बात और ध्यान देने की है कि पं० महादेव पाठक सूर-सागर का टीका कोई नहीं देखे थे अनुमान से अर्थ लगाते थे ।

सारंग सम कर नीक नीक सम सारंग सरस बषाने । सारंग सब भय भय बस सारंग सारंग बिसमै माने ॥ सारंग हेरत उर सारंग ते सारंगसुत ढिग आवै । कुंती-सुत सुभाव चित समुझत सारंग जाइ मिलावै ॥ यह अदभुत कहिबे न जोग जुग देषतही बनि आवै । सूरदास चित समै समुझ करि बिषई बिषै मिलावै ॥४॥

यह पद में उपमानो उपमेय अलंकार मध्या नाइका है ताको लच्छन ।

दोहा—उपमा लागत परसपर, उपमानो उपमेय ।
मध्या लाज मनोज सम, बरनत कवि रस भेय ॥

सारंग मृग समान ते नीक कहै अछ नेत्रन को माने है अरु नीक जे चच्छु हैं तिन को जो सारंग मृग है तिन के सम बषान कहत हैं काहे के सारंग जो राग (अनुराग) है ताके बसते तो भय बिसारत है अरु भय के बसते सारंग जो राग ताके बिसारत है सारंग मृग याते बिसमै माने है नेत्र जो है सो कैसे है कि सारंग कृष्ण तिनको देख करि उर जो सारंग कमल है ताते उतसाह होत सारंग सुत काजर लो आवत है फिर कुंतीसुत करन सुभाव सषी तिन को समुझ के सो फेर उर समुद्र में मिल जात है यह अदभुत नेत्र मृगन को कहिबे जोग नाहीं है देषत बनत है सूरदास बिच मध्या समै समुझ के (बिषई नाम उपमान बिषै नाम उपमेय) उपमानो उपमेय अलंकार ठहरावत है ॥ ४ ॥

टिप्पणी—इस पद में सरदार कवि कुछ घट बढ़ नहीं अर्थ किया है एकाध स्थान पर जो है उसे परेन्थिस (चापावरण) में लिखा है ।

राधे रात सुरत रंग राती। नंदनँदन संग कुंज भवन में मदन मोद मदमाती॥ कारन अंत अंत ते घटकर आदि घटत पै जोई। मद्ध घटे पर नास कियो है नीतन में मन भोई॥ गिरजापति पतनी पति जा सुत गुन गुन गनन उतारे। तनसुत कन से धन बिचार के तुरत भूमि पै डारे॥ सारंग ओर निहारत फिर फिर थिर चित चतुर न पावै। सूरस्याम कोबिदा सुभूषन कर बिपरीत बनावै॥५॥

राधे इति या पद में प्रौढा नाइका प्रतीप अलंकार होत है। ताको लच्छन।

दोहा—काम कला कोविद कहै, प्रौढा सो कवि लोइ।
उपमेयो उपमान ते, कहि प्रतीप चित जोइ॥

सखी की उक्ति सखी प्रति कि राधे आजु सुरत में रती हैं कुंजघर में कृष्ण के संग काममद ते मतवारी भई है कारन को अंत काज सो अंत ते घट करो तब होइ अरु आद घट ते जल होइ है मद्ध के घटे नास नाम काल ऐसो काजल सो नीतन नाम नयन ते घटायो है गिरजापतिपतनी गंगा ताको पति सिंधुजा सीपसुत मुक्ता तिन को गुन प्रात सीतल हो जात है सो जाने कै नाइक चल जे है ताते गन नाम समूह उतार के तन सुतस्वेद ताके कन से बिचार के धनि ने भूम पर डारत है सारंग जो दीप है ताकी ओर फिर फिर देखत है कि मलीन तो नाही भयो है याते चित थिर नाहीं होत ऐसी जो कोविदा है ताको विपरीत नाम प्रतीप अलंकार कर कहत है॥ ५॥

लषि ब्रजचंद चंद मुष राधे। दधिसुतपति पतनी न निकासत दिनपति सुत पतिनी प्रिय बाधे॥ इंदीबरसुत कर कपोल मेंहै सिंगार रस राधे। दधिसुत बेद खैच अपनो कर सकुच सुभाव सु नाधे॥ ग्रहमुनि दुत हित के हित कर ते मुकर उतारत नाधे। सूरज प्रभु लष धीर रूप कर चरन कमल पर धाधे॥६॥

लषि ब्रजचंद इति या पद विषै धीरा नाइका रूपक अलंकार है ताको लच्छन।

दोहा—बिंग कोप जामैं लखो, जानो धीरा सोइ।
उपमेयो उपमान मिलि, मानो रूपक सोइ॥ १॥

लखि के ब्रजचंद को मुष चंद का कलंकित दधिसुतसुत ब्रह्मा ताकी पतनी गिरा सो न निकासी दिनपति भानु सुत सनि पतनी करकसा ताके प्रिय क्रूरबचन ते बाधे नाम बाध राखे दधिसुत चंद ताते बेद चौथो ब्रहस्पति ताको नाम जीव सो जीव खैच के अपनो कीनो गिरजापतिसुत बाहन मयूर भष सर्प ता भष पवन सो सुगंधावारो करन लगी ग्रहमुन सप्तएं ग्रह मंद दुत देषराइबे के हेत आरसी कर ते उतारी तब नंदनंदन धीरा नाइका जान के अरु रूपक अलंकार सो चरन कमल पर धाधे नाम चितवन लगे॥ ७॥

टिप्पणी—इस पद के अर्थ को भी सरदार कवि ने ज्यों का त्यों रक्खा है। बलिक दूसरे सूरसागर का अर्थ भी भ्रम से जोड़ दिया है।

आज सषिन संग सुरुच साँवरी करत रही जल केलि। आइ गयो तहां सरस साँवरो प्रेम पसारन बेलि॥ अघहर एक

सुकर सारंग ते सहज संभारन लागे। अंतरिक्ष श्रीबंधु एक को चाषत अति अनुरागे॥ भूषन हित पर नाम छोटबड दोहुन को कन राषी। सूरज प्रभु फिर चले गेह को करत सचु सिव साषी ॥७॥

उक्तिसषी की सषी से कै हे सषी आज सामरी स्यामा राधा सषी के साथ जलकेलि करत रही तहा सुंदर स्याम आए प्रेमवेली पसारत अघहर बेनी एक की विवरन लगे अरु एक को अंतरिछ कहै अधर श्री वंधु सुधा सो चाष के बहुत अनुरागे भूषन अलंकार पर नाम के हेत छोट बड़ कहै जेष्ठा कनिष्ठा दोहुन को बनाइ ग्रेह को चले शिवसत्रु काम को साछी दै के इहां प्रेमबेल पसारब क्रिया ते परनाम अलंकार अरु बेनी बिबरन में कनिष्ठा अधर चूमत में जेष्ठा ताको लच्छन।

दोहा—बरननीय होके बरन, करत क्रिया पर नाम।
अधिक न्यून स्नेह ते, जेष्ट कनिष्टा बाम ॥ १ ॥७॥

दिनपति चले धौं कहा जात। धराधरनधररिपुतन लीनो कहो उदधिसुत बात॥ लव उलटो दो जाउ तिहारी ताको सारंगनैन। तुम बिनु नँदनँदन ब्रजभूषन होत न नेको चैन॥ मुरली मधुर बजावहु सुष ते रुष जनि अनतै फेरो। सूरज प्रभु उल्लेख सबन को हौ परपतनी हेरो॥ ८॥

उक्ति ऊढा की के हे दिनपत (दिन पति सूर्य्य सूर्य्य का नाम मित्र) मित्र कहा जात हो धरा पृथ्वी धरन (शेषधर) शिवरिपु काम तें सो तन ले कै उदधिसुत सुधा बोलव लब उलटे ते बल बल जाउहो हे सारंग कमलनयन चितवहु मुरली बजावहु रुप अनत जिन फेरो यह में उल्लेख अलंकार परकियानाइका है ताको लच्छन ॥

दोहा—बहुबिध बरने एक को, सौ उल्लेख गनाइ ।
दुरे करत परपति सुरत, सो परपतनी आइ ॥ १ ॥ ८ ॥

जूप मोहि बहुपाद मिलावो । सुन सजनी यह प्रन हमार लषि हिय ते हरष बढ़ावो ॥ सुचहीपति पितु प्रिया पाइ पर धर सिर आप मनावो । नीतन हीनपुचरिपुजननीसुतपितजा ढिग जावो ॥ सूर समूह पय धार परमहित आषत अमल चढावो । बार बार बिनवत हो तुम ते लषि निसपति मुरझावो । सूरज प्रभु पर होहु अनूठा सुमिरन जनि बिसरावो ॥ ९ ॥

उक्ति नाइका की सषी सें कै हे सषी जूप नाम पीपर ताको नाम बासुदेव बहुपाद नाम बर अर्थ यह हम को कृष्ण बर देहु हे सषी हमारो प्रन लखि के हिय में हर्ष बढ़ावो सुचही ते बरही मयूर पति षडानन पितु शिव प्रिया शिवा (पार्वती) ताके पाइन पै सिर धरो नीतन नयन ते हीन धृतराष्ट्र सुत दुर्योधन रिपु भीम जननी कुंती सुत करन पिता सूर्य पुत्री जमुना ताके नजीक जावो सूर समूह सुमन दूध अछत चढ़ावो बारबार तुम सो बिनवत है निसपति चंद देष मुरझाइ कै सूरज प्रभु नंदनंदन तापे हो अनूठा भई है

सुमिरन अलंकार कर के इहां अन बिबाह ते नाइका अनूढा चंद देष उपमान उपमेय की सुधि आई ताते सुमिरन अलंकार ताको लच्छन ।

दोहा—उपमे सुध उपमान लष, सुमिरन भूषन होइ ।
अनबिबाह अनुराग ते, कही अनूढा सोइ ॥ १ ॥९॥

उलटो रस सारंग हित सजनी कबहु तीर न जैहै ।बिन समुझे बिपरीत माल-का अंगन आप लगैहै ॥ पगरिपु लगत सघन घन ऊपर बूझत कहा बतैहै । ग्रह बसु मिलत संभु की सैना चमकत चित न चितैहै ॥ मोहि आन वृषभान बबा की मैया मंत्र न लैहै । सूर छेक ते गुप्त बातहू तोको सब समुझैहै ॥ १० ॥

नाइका की उक्ति सषी से कै हे सषी रस उलटे ते सर (तलाब) होत है सो सारंग कमलहित सर को न जैहै बिना समुझै मालका ते बिपरीत कालमा अपने अंग में न लगाइहो पगरिपु कंटक सो सघन घन पयोधरन में लगे जो बूझि है ताको का बताइहै ग्रहबसुअष्टम राहु में संभु सैना प्रेत मिलत है तिन को देष चित चमकत है सो न चितैहैं मोको वृषभान की सपत है माता को यह मंत्र नाही लैहैं सूर कहत यामें छेकापन्हुत (ते गुपता नाइका की बात तो सों सब समुझाइ है इहां रत गोपत ताते गुप्ता अलंकार दुराइबे ते छेकापहुतन अलंकार) अलंकार ताको लच्छन ।

दोहा—सुरत छपावै जो त्रिया, सो गुप्ता उर आन ।
देत दुराइ अकार सो, छेकापहुनित जान ॥ १ ॥१०॥

सुरभी रस राती नँदनँदन सुरभी रस जिन राती । ग्रहसुनि पिता पुत्रिका की

रस अति अदभुत गत माती ॥ सुत कृसान सुत प्रबल भए मिल चार ओर ते आये । ते जिन जान घने तम के गज साजत सरस सवाये ॥ आजु मोहि मैया बिचार के गैया ओर पठाई । निरबिकार जहां सुर पहुंनत बात न चतुर बताई ॥ ११ ॥

(सुरभी इति) उक्ति नाइका की नाइक प्रति हे नंदनंदन सुरभी नाम गो नाम इंद्री ताके रस से रतो सुरभी गोरस सो का रते हो ग्रहमुनि सातएं सनि पिता सूर्य पुत्रिका जमुना ताको रस जो जल है सो महारस में मतवारो भयो है अर्थ जमुना बड़ी है कृसान सुत धूम ताके सुत मेघ जो प्रबल भए हैं चार ओर ते जो आए हैं सो नाहीं हैं जो सघन अंधकार के गज है आजु मोको माता ने बिचार कर के गाई की ओर पठायो है निरबिकार यह परम पहुंनत यह सुधापहुंनत अलंकार है । बचन बिदगधानाइका है घन को धरम मिटाइ तम के गज कहे ताते सुद्धापहुंनत बातन में मिलाप करन चाहत संकेत सुचित करत ताते बचन बिदगधा ताको लच्छन ।

दोहा—धरम दुरो आरोप ते, सुद्धापहुंनत जान ।
बचन चतुरई ते कहत, बाकबिदगधा नाम ॥ १ ॥११॥

देषत हूं वृषभानदुलारी । नँदनँदन आवत ब्रजबीथिन भीर संग लै भारी ॥ सिवआनन लिखि चंद बिंदु दै कर निज कुचन मिलाए । भूषन स्वल्प क्रिया ते सुंदर सूरस्याम समुझाए ॥ १२ ॥

उक्त सषी की कै वृषभानदुलारी राधा नंदनंदन देष के अरु सषन की भीर चतुराई करी शिवआनन पंचमी को चंद लिषो तापै बिंदु दयो कै पांच घरी रात बीते में मिलिहैं अरु कर कुचन सो मिलाए में तुम को हृदय में राखत है यामें स्वल्प कहे सूछमअलंकार क्रिया बिदगधा नाइका ने स्याम समुझाए यामें नाइक को अभिप्राय जान अपनो अभिप्राय जनायो याते सूछम अलंकार अरु क्रिया ते चातुरी (तातें क्रिया बिद्-ग्धा नाइका ताको लच्छन) ते कहे क्रिया विदगधा भई

दोहा—सुच्छम पर आश्रय लखें, करै क्रिया कुछ भाइ ।
क्रिया चातुरी ते कहैं, क्रिया बिदग्धा आइ ॥१॥१२॥

कुंजभवन ते आज राधिका अलस अकेली आवत । अंग अंग प्रति रंग रंग की सोभा सुख दरसावत ॥ दिनपतिसुत अरिपितापुत्रसुत सो निज करन सभारे । मानहु कंज बिच्छ गहि तीजो कंचन भू पर धारे ॥ सीतासत्रुपिता की सैना पाट छिद्र द्रुम षाए । सिंधुसत्रु भषपति पितु मानो रन ते घायल आए ॥ बिथुरि गयो सारंगसुत सिगरो सो मन उपमा भासी । गिरजापतिभूषन पै मानहु मुनि भष पंक प्रकासी ॥ संभावन भूषन कर लच्छित सुघर सषी मुसुकाई । सूरदास वृषभाननंदनी सुर घर चली लजाई ॥ १३ ॥

उक्ति सषी की सषी प्रति कै कुंजभवन ते राधा आज अकेली आवत है अरु अंग अंग में बहुत रंग की सोभा दरसावत है दिनपति सूर्य सुत करन अरि अर्जुन पिता इन्द्र सुत बालि ताके सुत अंगद जे बाजूबंद है सो करन ते सम्हारे है सो कैसै लगत कै मानो कमल जो है सो तीसरो रिछ नछत्र कृतका कंचन भूमि पर बैठ रही है सीता को सत्रु जयंत पिता इन्द्र सेना पयोधर कुच पाट नष ताके छिद्र ऐसे षाए है सिंधु दधि ताको सत्रु बिलार ताको भष मूस ताके पति गणेश पिता संभु मानो रण ते घाएल आए हैं बिथुर गयो है सारंग सुत काजर ताकी उपमा भासे है कै गिरजापतिभूषन ससि तामे मानो मुन अगस्त तिन को भष समुद्र ताकी पंक कीच लगी है संभावन भूषन उतप्रेछा कर लछितानाइका सुघर सषी मुसक्याई सो सुन राधा सुर के घर को लजाइ के चली यामे कुचन बिषे शभु की संभावना नषछद बिषे घाव की ताते उतप्रेछा अरु सषी जान गई रति ताते लछितानाइका ताको लच्छन ।

दोहा—उतप्रेछा संभावना, करत आन की होइ ।
सषी प्रीति जानत कहै, चतुर लछता सोइ ॥ १ ॥

टिप्पणी—बाबू परमेश्वर सिंह निम्नलिखित अर्थ इस पद में करते हैं। दिनपति सूर्य्य सुत सुग्रीव अरि बालि पिता इन्द्र, पुत्र बालि, बालि पुत्र अंगद। परंतु इस अर्थ से ऊपर का अर्थ अच्छा है। अंत में फल अंगद ही दोनों ने निकाला है शेष अर्थ पूर्ववत् ।

गृह तें चली गोपकुमारि । षरक ठाढो देष अदभुत एक अनुपम मार ॥ कमल ऊपर सरल कदली कदलि पर मृगराज । सिंघ ऊपर सर्प दोई सर्प पर ससि साज ॥ मध ससि के मीन षेलत रूपकांत सुजुक्त । सूर लषि भई मुदित सुंदर करत आकी उक्ति ॥ १४ ॥

उक्ति कवि की कै अपने घर तें गोपकुमारि राधा ने एक अद्भुत देषे की कमल नंदनंदन के चरण कदली जांघ मृगराज कटि सर्प भुज ससि मुष मीन नेत्र देष रूपजुत कर मुदित अनंदित भई या पद में उपमान ते उपमेय बोध किये अरु चितचाही बात देष के मुदित भई ताते मुदिता नाइका ताको लच्छन।

दोहा—रूप कांत उपमान ते, होइ बोध उपमेय।
चितचाही लषि बात ते, मुदिता ही को भेय ॥ १ ॥१४॥

गिरजापति पितु पितु पितु ही ते सौ गुन सी दरसावै। ससिसुत बेद पिता की पुत्री आजु कहा चित चावै। सूरजसुत माता सुबोध की आपुन आदि ढहावै। सूरज प्रभु मिलाप हित स्यानी अनमिल उक्ति गनावै ॥ १५ ॥

उक्ति नाइका की कै गिरिजापति शिव पितु ब्रह्मा पितु कमल पितु समुद्र तै सौ गुनी देष परत है ससिसुत बुध ताते चौथो सनि पिता सूर्य पुत्री जमुना आजु कहा चित में चाहत है सूर्य सुत करन माता कुंती बौध जैन आदि वरण ते कुंजै का नास कर है सूर के प्रभु के मिलाप के हित (हेतु समुद्र तें सौ गुनी जमुना में) अतिउक्ति अरु कुंज गिरबे कारन दुष होइबो काज सो कारण के प्रथम भयो ताते अक्रमातसयउक्त अरु जमुना बढत मात्र दुष भयो ताते चपलातसउक्ति अरु सहेट कुंज में रहो ताको नास देषत दुष पायो ताते अनुसैना नाइका लच्छन।

दोहा—कारज कारन भाव ते, अक्रमात सब उक्त।
विनसत देष सहेट को, अनुसेना की जुक्त ॥ १ ॥१५॥

निसा अंतपतिसुत सुभाव सुन आजु कहां तें आई। पुत्रपुत्र के पास गई किन

सूरजसुता नहाई ॥ हरिग्रहजननी हितन सरस कह सुरभी सुतर गमाई। सारंगसुत नीकन तै बिछुरत सर्पबेलि रस जाई ॥ भानु भानुसुत सी सु भान मम सबहित सरस कमाई। सूरज पर आनंद दूषित कर सर संजोगता जाई ॥ १६ ॥

उक्ति नाइका की सषी सो कै निस अंत दिनपाति सूर्य पुत्र करन सुभाव सषी हे सषी तू कहां ते आई है पुत्र नंद ताके नंदन के पास गई कै जमुना नहाई है हरि बानर ग्रह वृक्ष जननी प्रिथी हित पयोधर तिन को सुरभी चंदन कहा गमायो सारंगसुत काजर नीकन अछन ते बिथुरो है सर्पबेलि नागबेल पान का रस जाइ रहो है। भानु सूर्य (अरु भानुसुत) सुत सनि सी मोको भान नास करन तेरी कमाई है। यह परायो आनंद दुषता पर संभोगदुषता सो मेरे बराबर की जोगता तुल्य जोगिता की जाइ है या पद में सषी के संभोग ते अन्नसंभोगदुषता अरु सूर्य सन उपमान उपमेय की तुल्य जोगता अरु मो सम उपमेय की लक्षण।

दोहा—पर संभोगे अति दुषित, दुषिता पर संभोग।
बरण अबरनन ते कहै, तुल्य जोगता जोग ॥ १ ॥१६॥

बीथिन मिली नंदकुमार। उदित उतते भयो सजनी रिछुपति रुच धार॥ भालु बसु पुन पंच दोउ करे अदभुत रूप। मोहिं गहि ले गयो कुंजन मंजु मनिसिज भूप ॥ निकसबी हम कौन मग हो कहै

बारी बैस । मोह को यह गर्व सागर भरो आइ अनैस ॥ १७ ॥

उक्त नाइका की सषी प्रति कै है सषी आजु बीथिन मो नंदकुमार मोको मिलो । अरु उत ते रिछपति चंद उदित भयो भालू रिछ कहे नक्षत्र वसु आठ पंच तेरहे हस्त हाथ इन के हाथ ते कर कहिये कि नर ते दोई अद्भुत रूप करै है सो मोको गहि कर कुंजन मैं लै गयो काम रूप हम कौन मग ते निकसै हमारी बैस थोरी (बारी) है यह मोह के गर्व को सागर भरो है । इहां व्रजचंद उपमेय चंद उपमान जुदे जुदे धरम ते सोभावान बरने ताते दीपक कोई कहै । नाम पद मैं नाहीं है सोहै सूर ते सूर्ज को नाम सारंग सारंग दीपक । अरु नायक के प्रेम को गरभ करत है । ताते प्रेम-गर्भिता नाइका लच्छन ।

दोहा—सो दीपक निज गुनन तें, बरनत है इक भाइ ।
प्रेम गर्भ को करत हैं, प्रेम गर्भिता आइ ॥ १ ॥१७॥

सिलीमुषसारंग निहारन करौ कौन उपाइ । बान भौर सुजान निकसत धरत धरनी पाइ । चमक चहुँदिस चलत चाही संभु भूषन भाइ ॥ नंदनंदन बैठे हेरत रहत निस दिन गाइ । हो रही हूं बिपत तेरी बिपत होउ सहाइ ॥ सूर सारस सकप गर्वित दीपका हरि चाइ ॥१८॥

उक्त पूर्ववत् के है सषी सिलीमुष सर सर ताल (तलाव) मैं सारंग कमल देषन को कौन उपाइ करैं । बान सिलीमुष नाम भँवर जब धरती पर पाइ देत तब निकसत है मेरो सुगंध पाइकै । अरु संभुभूषण ससि के चाही जे चकोर है ते चारो दिस मे घेर रहत है । अरु नंदनंदन बैठ के मेरे रूप को हेरत रहै निस गावत हैं । या बिपति ते बिना पति की हो गई

है तुम सहाय करो। सूर कहै कै सरस सरूप ते गर्भित हो दीपक की वृत चाहत हैं। अर्थ उक्त रहत यामें विपति ते बिपत दीपका वृत अलंकार। औ रूप गर्भ ते रूपगर्भिता लक्षण।

दोहा—पद आवृत जामे रहै, दीपकव्रत सो जान।
रूप गर्भ ते कहत हैं, रूप गर्भिता मान॥ १ ॥१८॥

देषत तू कत मान डिढ़ायो। भूसुत सत्रुनाथहित पितु त्रिय प्रिय हिय बचन डिढायो॥ नागसुतापतिपितुअरि आधो नाम सु बदन छपायो। सूरसुता अरिबंधुतातअरि भूषन बचन सवायो॥ सुरभीतमजासुतसुत को जनु माता तलफ बढायो। सूरस्याम जब परो पांय तर तब किन कंठ लगायो॥ १९॥

देषत इति देषत तू मान काहे षडो कियो। भू सुत वृक्ष ताकी शत्रु कुठार ताको नाथ परसराम ताको हित महादेव ताको पितु ब्रह्मा ताकी त्रिया सरस्वती ताको प्रिय ब्रह्मज्ञान बिचार सो आपने ही में डिठायो कहे डिढ कियो है। अर्थ यह सब सो निर्बेद। अथवा भू सुत मंगल ताको शत्रु बुध ताको नाथ सूर्य ताके हित चंद्र ताके पितु अत्री ताकी तिया अनसुया ताको प्रिय बिराग कहै प्रेमरहित सो आपनो हिय डिढायो है कहै मजबूत कियो है अथवा चंद्र पितु समुद्र ताकी स्त्री नदी ताको प्रिय टेढ़ी चाल सो अपने हिए में डिढायो मजबूत कियो सूरसुता जमुना ताको अरि बलभद्र ताको बंधु कृष्ण तात कहै पुत्र प्रद्युम्न ताके अरि दुरबासा ताको भूषण क्रोध तेरे दुरबासा ते सवायो है नागसुता सुलोचना ताको पति मेघनाद ताके पितु रावन ताके अरि रामचन्द्र ताको आधो नाम चंद्र सो चंद्रवत बदन छपायो है। सुरभी कहै ग्रौ औ तम दूनो सो

भयो गौतम तिन जा कहै अंजनी ताके सुत हनुमान ताके सुत मकरधुज तिन की माता मीन तेहि मीन की नाही जो तलफ बढायो है। सूर संबोधन कवि को स्याम जब पाय तर परो तब काहे तै ना कंठ लगायो। तात्पर्य पद पद में है कि मान छोड़ कृष्ण सो मिलो ॥१९॥

टिप्पणी 'सरदार कवि ने इस भजन में भूसुत, केंवाच, शत्रु, बानर, नाथ राम, हित, भरथ, पिता, दशरथ, तिय कैकई, प्रिय, कलह । और नागसुता सुलोचना, पति इन्द्रजीत, पिता रावन, अरि रामचंद्र। सुरसुता, जमुना, अरि बल-देव, बंधु, कृष्ण, तात, बसुदेव अरि, कंस, भूषन क्रोध। सुरभीतम, गौतम, जा, अंजनी, सुत, हनुमान, सुत, मकुरधुज, (मकरध्वज) माता मछली अर्थ किया है।

सरदार कवि ने यहां तो पूरा इस का अर्थ न किया परंतु आगे बढ़कर इस भजन को फिर भी लिखकर अर्थ किया है यथा।

'देषत तू कत मान बिडायो । भूसुतसत्रुनाथहित पितत्रिय प्रियहिय बचन डिढायो ॥ नागसुतापतिपितु अर आधो नाम सुबदन छपायो । सूरसुता अरि बंधु तात अरि भूषन बचन सवायो ॥ सुरभीतमजा सुतसुत की जन माता तलफ बढायो । सूर रोस पर जाइ उक्त कत कंठ न स्याम लगायो ॥ २९ ॥

उक्त सषी की कै तू नाइक के देष काहे मान डिढायो। भूसुत कवाछ सत्रु बानर नाथ सुकंठ हित राम पितु दसरथ प्रिया कैकई प्रीय कलह काहेको कियो अथवा हठ ॥ नागसुता सुलोचना पति इंद्रजीत पितु रावण रिपु रामचंद्र आधो चंद वदन काहे छपायो । सूरसुता जमुना अरि बलराम बंधू कृष्ण तात काम सत्रु सिव भूषन विष सो वचन काहे कहे। सुरभी गौतम मिलै गौ तम जा अंजनी सुत केसरीकिसोर सुत मकरधुज माता मीन अब मछरी सी का तलफत है । सूर रोस की परजाइउक्त करके कंठ सो स्याम काहे न लगायो ॥ यामे नाइका रोस कर पछतात सषी समझावत ताते कलहंतरता रचना से सब बातें कहत तातें परजा-उक्त लच्छन॥ दोहा । कलह करै पछतात सो । कलहंतरता जान । रचना बातन

ते कहत, परजा उक्त प्रमान ॥ २९ ॥'

इस सूरसागर में एक भजन और भी सरदार कवि ने जोड़ा है उसका मूल टीका निम्न लिखित है ।

राधे तैं कत मान कियो री। धनहर हित रिपु सुत सुजान कों नीतन नाहिं दियो री ॥ बाजा पति अग्रज अंबा के भानु थान सुत हीन हियोरी । मा पितु

अरि हित पितु सुत बंधु धारत कौन लियो री ॥ सूर स्याम हित अरध फर्यौ कहुं कैसे जात सियोरी ॥

उक्त सषी की नाइका प्रति कै हे राधे तैं ने मान काहे कियो । धन हर चोर ताको हित अंधकार रिपु दीप सुत काजर नितन नयनन में काहे न दियो ॥ वाजल जा लछमी पति कृष्ण अग्रज बलराम माता रोहिनी ताके भानुथान वारहो स्वाती ताको पुत्र मुकता ताते हियो हीन है । मा लक्षमी पितु समुद्र अरि कुंभज हित राम पिता दसरथ सुत रिपुसूदन बंधु लछन के न जीय में धरो है ॥ पारवती पितु परवत अरु तेरो तन अचल सुभाव लियो है यही वस्तु दोहुन में हैं। सूरस्याम हित सषी कही आकास फटै अब को सीस कै थामे परवत तन को एक धरम अरु स्याम को हित आकास की एकता वाक ते सामान्य कियो ताते प्रतवस्तोपम । माननी नाइका लच्छन ।

दोहा—सो प्रतवस्तोपमा कहै, समझ दुवाक्य समान ॥
मान माननी करत है, कछु ईरषा जान ॥

बाबू परमेस्वर सिंह इस पद का निम्न लिखित अर्थ करते हैं । भूसुत, अंकुर । शत्रु, मूस, नाथ, गणेश, हित, राम, पिता, दशरथ, त्रिया, केकई, प्रिय, कलह, और पूर्ववत् । अथवा भूसुत, अंकुर, शत्रु, पक्षी, नाथ, गरुड़, हित, राम, पिता, दशरथ, शेष पूर्ववत् । अथवा भूमिसुत, आग, शत्रु, पानी, नाथ, समुद्र, हित, राम, पिता, दशरथ, स्त्री, केकई, प्रिय, कलह शेष पूर्ववत् । अथवा भूमिसुत, दिगक, शत्रु, तितिर, नाथ, गरुड़, हित, राम, पितु, दशरथ, शेष पूर्ववत् ।

मानिन अजहु मान बिसारो । प्रान नाथ प्रतिपालकरन हित मानो कह्यो हमारो ॥ दो दो पलि बतियां मुष काहि आजहू बेग सिधारो । तीन दोड़ हग पांच सात द्रुक गति मतिवंत बिचारो ॥ दोइ एक करि अंतहीन सोहि सो दो बेर विचारो । प्रथम डार उपमान कहा मुष

बैठी मंच सु डारो ॥ अति गंभीर बनो पद्मापितु सो बुध उदर तिहारो। सूर-दास द्रिष्टांत पाइ पर देखत नंददुलारो ॥ २० ॥

उक्ति सषी की नाइका से कै हे माननी अबहू मान छोडो प्राननाथ प्रतिपाल करबे के हेत हमारी कही मान कैं यामैं नछत्र लगावत है । दो दो चार चौथो रोहणी पति चंद्र धर महादेव तिया पारबती पुत्र गणेश काहि अबहू सिधारिये । तीन दो पांच औ मृग द्दग पांच सात एक तेरहो हस्त हे गजपति अजहू मतिवंत सम्हारो । दो एक तीसरो कृतका अंत ककार ते हीन करै कृत दो बेर ते कृत कृत सोको करो । अथव अस्वनी है उप-मान जाकी ऐसो घूंघट मुष पर कहां डार बैठी है । अति गंभीर बनो है पद्मा पितु समद्र तैं सोइ बुद्ध तैं तिहारो उदर है । द्रिष्ट ते देषत पाइ पर देषती हो नंददुलारो । यामे माननी नाइका पूर्ववत लच्छन । अरु समुद्र उपमान उर उपमेय को बिंब प्रतिबिंब भाव याते दृष्टांत अलंकार है ताको लच्छन ।

चौपाई—जहां बिंब प्रतिबिंब बषानो । तहां दृष्टांत अलंकृत जानो ॥

मानिन अजहू छाडो मान । तीन बिन दधिसुत उतारत रामदल सुत सान ॥ तीन लख बल करे तो संग कौन भल अभिजान । हेरु लख कल लेत नाशी प्रान प्रीतम प्रान ॥ तति को कोर परवति पति बुजन दूजी आन । लगी फिरत पचास तितितन पास कार बर

आन ॥ कहा कहि किहिकै बुझावौ देष सकतन हान। सर स्याम सुजान पाइन परो कारो कान ॥ २१ ॥

दूसरा पाठ । भूमिसुत जो लियो गुन सो निदरसन सुहान । मानिन इति । ऐ माननी अजहू मान छाडो । तीन बिब कहै छबि दधिसुत चंद उतारत है। रामदल रिछ ताराजुत। तीन लल कहै छल ओ बल मिल कै छल बल भयो सो छल बल करि कै संग भयो है। अलि कहे है नाइके तोको कौन कहे के उनहि भले कहे जान है। डेढ लल कहै तिल तिल भर कल कहे विश्राम प्राण प्रियतम के प्राण नहीं लेत है। तु ति की की कहै तीन की कीते छकी भई सो तू छकी है कि मेरो रूप रति के सम है पति कृष्ण ताको तो सम वृज कहै बज में दूजी आन कहे अवर दूसरी स्त्री नहीं है तात्पर्य तो सी बहुत है। लगी फिरत पचास तिति सौति फिरत है तेरी पाछे श्रेष्ट बन बनायकै। अरु भूमिसुत को गुन जो सो कर के तू ने लियो है याते निदरना अलंकार लच्छन।
चौपाई—जो सो आन आन गुन ठानो। तहां निंदरन सुकवि बषानो ॥
निदरसन पद श्लेष है।

टिप्पणी—सरदार कवि के अर्थ और मूल में कुछ घट बढ़ है अतएव नीचे लिख दिया है।

मानि अजहु छाडो मान। तीन बिब दधि सुत उतारत राम दल जुत स्रान ॥ ढेड ल कम लेत नाहीं प्रान प्रीतम प्रान । तूति की की रूप राति पति ब्रजन दूजी आन ॥ लगी फिरत पचास तित तब पास कर बर वान । भूमसुत जो लियो गुन सो निदरसन सुषहान । सूरदास सुजान पाइन परो कारो कान ॥ २१ ॥

मानिन इति। हे मानिनी अबहू मान छोडो। तीन बिब कहै छबि दधिसुत चंद। उतारत है राम दल रिछ तारा जुत तडका डेडललते तिल भर कल नाहीं लेत प्रान प्रीतम के प्रान । तूति की की छकी है रूपरत की पति मेरे है बृज में दूसरी नाहीं। पचास तित सोति लगी फिरत है तेरे पाछे श्रेष्ठ बन बनाइ के। भूमसुत वृक्ष को गुन अचल तूने लियो है। सनमुष हान निदर के। देष अबे कान पाइ परे है। नाइका लछन पूर्ववत्। अरु भूमसुत को गुन मंगल का

गुन लाल कहै कृष्ण उन को अनादर करने से हानि है जो सो करके तूने लियो है याते निदरसन अलंकार लछन । जो सो आन आन गुन ठाने । तहाँ निदरसन सुकबि बषाने । निदरसन पद असलेष है ॥ २१ ॥

निस दिन पंथ जोहत जाइ । दधि को सुत सुत तासु आसन बिकल हो अकुलाइ ॥ गंधबाहनपूत बांधव तासु पतनी भाइ । कबै द्रग भर देषवो जू सवो दुष बिसराइ ॥ अजा भष की हान हम को अधिक ससि मुष चाइ । सूर प्रभु बितरेक बिरहिन कब देषैहै पाइ ॥२२॥

उक्त नायका की सषी प्रति निस अरु दिवस(दिन)को पंथ जोवत(देषत)जात है । दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको आसन हंस हमारो हंस जीव अकुलात है। सुगंधबाहन पवन पुत्र भीम बंधु पारथ पतनी सुभद्रा भाई (बंधु) कृष्ण कब नेत्रन से देखिहौं। सत्र दुख बिसराइ कै। अजा भष पाती की हान है हम को शशि तें जिन को मुष अधिक है तिन की चाहना है । सो सूर के प्रभु ते बितरेक जुदी है । बिरहनी ताको तिन के पद कब दिषाइ है । इहां नायक बिदेस ताते प्रोषितभर्तकानायका ससि ते अधिक मुष याते बितरेक अलंकार बितरेक पद श्लेष लच्छन ।

चौपाई—प्रोषित पति परदेस बषानो । बितरेक उपमे बड मानो ॥

सषीरी सुन परदेसी की बात । अधर बीचदै गये धाम को हरि अहार चलि जात ॥ ग्रह नछत्र अरु वेद अरध कर को बरजै मुहि षात । रबि पंचक संग गये

स्याम घन ताते मन अकुतात ॥ कहु सहु ता कबि मिले सूर प्रभु प्रान रहत न तो जात ॥ २३ ॥

परदेसी की बात इति । हे सषी परदेसी की बात सुन धाम को अरध पाष पछ बीच दै कै घनस्याम गये । हरि बाघ अहार मांस महीना जात ग्रह ९ नक्षत्र २७ बेद ४ सब मिल चालीस आधे ते बीस बिष मोको को बरजै । रवि पंचम हुहस्यत नाव जीव सो संग स्याम घन लै गये तासे मनु उकतात । अब सहु सुंदर उक्त कहो नातर प्राण जात है इहां नाइका पूर्बवत स्यामघन के संग गयो है हमारो जीव । ताते सहोक्त अलंकार है ताको लच्छन ।

चौपाई—दोहुन एको संग बषानो । तहां सहित्त अलंकृत जानो ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने जो कुछ लिखा है उस को सूरशतकपूर्वार्द्ध टीका के सातवें पद के नोट में लिखा है उसे देखलेने से मालूम हो जावेगा ।

बाबू चंडीप्रसाद सिंह (रूपस बडुवा निवासी) इस पद को कुछ अदल बदल कर कहते हैं और अर्थ भी कई एक स्थान पर विलक्षण करते हैं वह नीचे लिखा है ।

कहे न कोइ परदेसी के बात । जब ते बिछुरे नंदसांवरो ना कोई आवे न जात ॥ मंदिर अर्द्ध अवधि प्रभु वदि गये, हरिअहार चलि जात । अज्यामख अनुसारत नाहीं, कइसे के समय सिरात ॥ ससि रिपु बरष भानु रिपु जुग सम, हर रिपु कीन्हो घात । नखत जोरि ग्रह बेद अरध करि सोई बने अब खात ॥ मघ पंचम लै गयो साँवरो, ताते जीव अकुलात । सूरस्याम आवन के आसा प्रान रहे नत जात ॥ १ ॥

अर्थ—प्रोषितानायिका कहती है कि कोई परदेशी की बात नहीं कहता है । जब से नन्दसाँवरे कृष्ण बिछुरे हैं तब से नहीं कोई आता है न जाता है । मन्दिर घर अर्द्ध पाख कहिये पक्ष पन्द्रह दिन की अवधि वदि गये परंतु हरि सिंह वा बाघ उस का अहार मांस अब मांस का अर्थ महीना चलाजाता है अज्या बकरी उस का भख पात अर्थात् पाती वह नहीं आती है तो समय कैसे बीते । शशि रिपु सूर्य्य अर्थात् दिन वर्ष के बराबर और भानु रिपु शशि अर्थात् रात्रि

युग के बराबर बितती है और तिस पर हर शिव रिपु काम वह घात करता है। नखत कहिये नक्षत्र को उस का तात्पर्य्य यहां २७ से है और ग्रह नव और वेद चार अब २७+९+४=४० इस का आधा बीस अर्थात् विष यह खाते बनता है। मघ कही मघा नक्षत्र उस से पांचवें चित्रा अर्थात् चित को सांवरे ले गये ताते जीव अकुलाता है। सूरदास कहते हैं कि आवने की आशा से प्राण है नहीं तो जाता रहेगा।

बीती जामिनी जुग चार। जात वेद सुमोहि मारी बीर भूषन जार॥ दनुज पति की अनुज प्यारी गई निपट बिसार। नागरिपुभष लगत नाहीं हों रही पच-हार॥ कपट हीन न मीन एरी मरन बिछुरत त्यार। सूर करत बिनोक्त भूचर चरन करत पुकार॥ २४॥

उक्त पूर्ववत् के जामिनी रात्रि चार जुग तौ बीती। जात वेद अगिन मोहि जारि मारी है। बीरभूषन करवारे चंदनो दनुजपति रावन ताको अनुज कुंभ-कर्ण ताको प्रिय निद्रा निपट बिसर गई है। नाग को रिपु बाघ ताको भष पल (मांस) सो नाहीं लगत है मैं कपट हीन मछरी नाहीं है जो मित्र के बिछुरे ते मरबे को त्यार हो जात है। सूर करत यामे बिन उक्त के भूषन गहना का उक्ति नाहीं चलत है भूचर देवक (दीवक) ताको चरणहार मुर्गा काहै नाहीं पुकारत प्रात काहै नाहीं होत या विषै नाइका पूरब बिनोक्त अलंकार है। मीन जो प्रस्तुत सो बिना कपट तें सोभा पावत है लक्षण। चौपाई—हीन पीन प्रस्तुत बड़ होई। कहत बिनोक्त अलंकृत सोई॥

टिप्पणी—बाबू परमेश्वर सिंह इस पद में नाग का अर्थ सांप करते और उस का भख मांस और मांस का अर्थ पल लगाते हैं। अथवा नाग सर्प रिपु नकुल उस का भख मांस फिर मांस का अर्थ पल अर्थात् क्षण लगाते हैं।

राधे कैसे प्रान बचावै। परी महान बिपत सीसन पर बीसन ताप तचावै॥ सेसभारधरजापतिरिपुतिय जलजुत कबहुन हेरै। बा निवास रिपुधररिपु लै सर सदा सूल सुष पेरै॥ बाचर नीतन ते सारंग अति बार बार झरलावै। देषत भंवर कंज रस चाषत आपुन ते मुरझावै॥ पन्नग सत्रु पुत्र रिपु पितु सुत हित पित कबहु न हेरै। समासोक्ति कर सूर भ्रिंग को बार बार बरु टेरै॥ २५॥

उक्त नाइका पूर्व। राधे इति। राधे कैसे प्राण बचावै महाबिपति सीस पै परी है ताते बिस के ताप सों तचत है। सेस को भार भूधर परबत जा उमा पति शिव रिपु जलंधर तिया (तीय) वृंदा जल बन जुत अर्थ वृंदाबन। कबहूं नाहीं हेरत। बा (जल) निवास कमल रिपु चंद धर महादेव (शिव) रिपु काम सूल से लावत है। बा जल चर मीन नीतन नयनन ते सारंग जल छोड़त है। अरु भँवर कंज रस देषत के आपु मुरझात है। पनंग नाग ते नग परबत ताके रिपु इंद्र पुत्र अर्जुन शत्रु करण पितु सूर्य सुत सुग्रीव हित रिछ नाम नषत ताको पति चंद्र नाहि हेरत है समासोक्त नाम समउक्त कर कर भृंग जो पतंग सूर्य है तिन को पुकारत उदित होहु या पद में भँवर कमल आ प्रस्तुत देष नाइक प्रस्तुत समझो ताते समासोक्त लच्छन।

चौपाई—आ प्रस्तुत ते प्रस्तुत जानै। समासोक्त कबि ताहि बषानै॥

टिप्पणी—इस भजन को सरदार कवि ने आगे बढ़कर कुछ घटा बढ़ाकर लिखा है वह ज्यों का त्यों अथ समेत नीचे प्रकाश किया जाता है।

'राधे क्यौं कर प्रान बचावे। परी बिपत्त महान सीस पै बीसन ताप तचावे॥ सेस भार भर जा पति रिपु तिय जल जुत कबहु न हेरे। बा निवास रिपु धर

रिपु लै सर सदा सूल सुष पेरे ॥ बाचर नीतन तें सारंग सी बार बार झर-कावे । ईसन सीस मनो कंजन तें बैठी बार चढावे ॥ पनंगसत्रुपुत्र रिपुपितु सुत हित पति कबहु न झाँषै । सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि नाम तिहारो भाषै ॥८८॥

उक्त उद्धव की कृष्ण प्रति । एकावरन द्रुमिक कूट उदवेग दसा उपादान लछना व्याघात अलंकार कर राधे क्यौंकर इति । सेसभार भूधर परवत ताकी जा उमा पति शिव रिपु जालंधर तिय वृंदा जल नाम बन वृंदाबन नहीं हेरत बा जल निवास कमल रिपु चंदधर सिव रिपु काम सूल सलावत । बा नाम जल चर मीन नीतन नयन सारंग मेघ सी झर लगावत है । सो मानो कमलन तें संभु कों जल चढ़ावत है कमल नेत्र कुच संभु पन्नग नाग नाम पर्वत सत्रु इंद्र पुत्र अर्जुन रिपु करण पितु सूर्य सुत सुग्रीव हित रिछ पति चंद । अरु कमल कर मानो जल चढ़ावै हैं । यातें फल उतप्रेछा हू हो सकत है तातें व्याघात उतप्रेछा को संकर है ॥८८॥'

बाबू परमेश्वर सिंह इस भजन में भी एक स्थान पर अर्थ को दूसरे ढंग से करते हैं । पन्नग नाम सर्प अब सर्प का नाम महीधर है और पर्वत का भी नाम महीधर है और महीधर (पर्वत) का शत्रु इन्द्र तिन का पुत्र बालि, शत्रु सुग्रीव पितु सूर्य्य सुत सुग्रीव हित भालू अर्थात् ऋक्ष (तारा) पति चंद शेष पूर्ववत् ।

पलटि बरन बृषभाननंदिनी जा पति हित रिपु लास । परी रहत ना कहत कबहु कछु भरि भरि ऊरध स्वांस ॥ बात आदि औ जान अंत मिल रिपु पति पतनी तासु । पितु दल पति लषि उदित जरत जनु महा अगिन के पास ॥ ताकत नहीं तरनिजा के तट तरुवर महा निरास । सूरस्याम घन मिलत छूटि है परकर ग्रीष्म फांस ॥ २६ ॥

उक्त नाइका पूर्व । पलट वरण राधा ते धारा (ताकी) जा लक्ष्मी पति विष्णु हित शिव रिपु काम के त्रास तें परी रहत है कछु कहत नाहीं उर्द्ध स्वासा लेत है। बात नाम पवन जान रथ आदि अंत ते पथ ताकी रिपु जमुना पति कृष्ण पत्नी जामवंती पितु रिछ रिछ नाम नषत ताके पति चंद ताको देष जरत है। तरनिजा जमुनातट के नाहीं ताकत (देषत)। सूरस्याम घन मिले ते ग्रीषम को परकर सामान्य वाके पास तें जाइ। इहां काम तपन चंद तपन तरनिजा तपन ग्रीषम को समाज ताकी तपन मिटावनहार घनस्याम विसेषन है ताते परकर ताको लच्छन।

चौपाई—साभिप्राय बिसेषन होई। परकर ताहि कहै कबि लोई॥

प्राननाथ तुम बिन वृजवाला ह्वै गई सबै अनाथ। व्याकुल भई मीन सी तलफत छन छन मींजत हाथ॥ ग्रह पति सुत हित अनुचर को सुत जारत रहत हमेस। जलपति भूषन उदित होत ही पारत कठिन कलेस॥ कुंज कुंज लषि नयन हमारे भंजन चाहत प्रान। सूरदास प्रभु परकर अंकुर दीजै जीवनदान॥ २७॥

(उक्त नाइका पूर्ववत् हे प्राननाथ जब तें तुम गये तब तें वृजवाल अनाथ होइ गई। व्याकुल मीन सी तलफती हाथ मींजती है।) ग्रहपति सूर्य सुत सुकंठ हित राम अनुचर हनुमान (हनुमंत) को सुत मकरध्वज नाम कहे काम हमेस जरावत है। जल: कही गो गो नाम नंदी पति शिव भूषन चंद उदित होत कलेस पारत है। कुंज कुंज देष के नयन जो हमारे है सो प्राण भंजन चाहत है। हे सूरदास के प्रभु परकर जो बीर है। दाह ताके हे अंकुर

जीवन दान देहु । इहां नयन को अर्थ नीत नहीं जानत है । ऐसो नयन है । याते परकरांकुर अलंकार लच्छन

चौपाई—साभिप्राय बिसेष जहीं है । परकर अंकुर कहत तहीं है ॥

चाहन गंध बैरो बीर । आपनो हित चहत अनहित होत छोडत तीर ॥ नृत भेद बिचार वा बिनु इंद्रबाहन पास । सूर प्रस्तुत कर प्रसंसा करत पंडित नास ॥ २८ ॥

चाहन इति । गंध के चाहनहार भँवर (भ्रमर) बरे बीर बैरी हैं जे आपन हित चाहत है आन को हित होत तीर नाम नजीक छोडत है नृतभेद ताल तातें जब वा जल जाइहै । तब आप इंद्रबाहन हाथी के कपोल पै रहत है सो वाकी करत है प्रसंसा परंत षंडन कपोल चाहत है यामें भंवर को निन्दा कर नाइक प्रस्तुत ताकी निन्दा करत है याते प्रस्तुत प्रसंसा अलंकार । (नाइका प्रात आयो तातें षंडिता लछन । दोहा । अनत रहे आवेस पति, कहत षंडिता ताहिं । प्रस्तुत आ प्रस्तुत कहै । आ प्रस्तुत कवि नाह) ॥ २८ ॥

भई है कहा प्रथम सी बाल । दुतीय सुर मिलि सुता हति हित चाहत तोहि गुपाल ॥ चौथ सिंगार पंच करि कटि बुध करी षष्टयी चाल । सप्तम तोल अष्ट सो मारत फिरत नाथ बेहाल ॥ नवमी छोड अवर नहिं ताकत दस जिन राषै साल । एकादस लै मिलो बेगहूं जानहु नवल

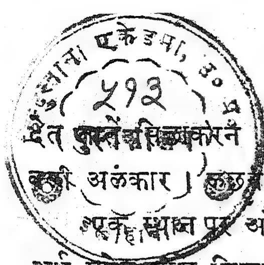
रसाल ॥ द्वादस सो तलफत पिय प्यारो सुरुच सांवरो लाल। सूरस्याम रतनावल पहिरो हो मंडित हितहाल ॥ २९ ॥

प्रथम १ मेष दुती २ वृष सूर्य कहे वृषभान तृतीय ३ मिथुन मिथुन हित चौथो कर्क अर्थ करि कें सिंगार। पंच कहे सिंघ ता सम कटि करि कै षष्ठ ६ कन्या सी चाल करी। सप्त तुला ताकी तोल कहे बराबरी। अष्ट ८ वृछि कहे बीछी सी मारत है। नवमो धन अर्थ ए धन तोको छाड अवर धन नहीं ताकत। दस १० मकर जिन राषे साल कहे गांस एकादश ११ कुंभ कहे उरोज लै मिलो बेग कहे तुरंत। द्वादश बारह मीन प्यारे पीतम के बिरह से मीन सी काहे तलफ बढाये है प्रीतम सो सुरुच सो लाल को समारो स्याम रतनावली पहिरो मंडन करत है हाल तुम्हारो हित।॥ २९ ॥

टिप्पणी—इस पद को सरदार कवि ने अपने टीका के ७० पद में लिखा है और अर्थ में कुछ घटाया बढ़ाया है अतएव ज्यों का त्यों नीचे लिखा है।

भई है कहा प्रथम सी बाल। दुतीय सूर मिल सुता तृती हित चाहत त्योंहि गुपाल ॥ चौथ सिंगार पंच कर षट बुध करी षष्टई चाल। सतई तोल आठ सो मारो फिरत लाल बेहाल ॥ नव तो छोड अवर नहीं ताकत दस जिन राषो साल। एकादस लै मिलौ बेगाहि जानो नवल रसाल ॥ द्वादस सो तलफत पिय प्यारो सुरुच समारो लाल। सूरस्याम रतनावल पहिरो हो मंडिन हित हाल ॥७०॥

मंडन सषी की उक्त नाइका प्रत। प्रथम रास मेष सी अचल कहा भई हो। दुती वृष सूर भानु तें वृषभानुसुता त्रिती मिलन हेत तोहि गुपाल चाहत है। चौथी करक कर कें सिंगार पंचमें सिंह हे सिंह कट करी है षष्टई कन्या की चाल तूने। सप्तम तूला तराजू सो तोल अष्टम बिछीक बिछी सो मारो लाल बेहाल फिरत है। नव धन हे धन तोको छोड अवर कें नाहीं चाहत दसयों मकर जहँ मान रूपी साल नन राषो। एकादस जो कुंभ है कुंभ लै के मिलो नाइक नवीन रसाल हैं। द्वादस मीन सो तलफत है प्यारो प्रीतम सो सुरुच कर कों लाल को समारो। स्याम रतनावली पहिरो है मंडन करत है हाल तुम्हारी हित। या पद में सृंगार करो चाहत तातें सषी मंडन लछन। मंडन सब सृंगार मंडै। सिंछा



हैत कुसलैं अलंकारनैं उपालंभ भी होइ सकत है परहास मिलै यातैं । रतनावली अलंकार । लछन । रनावल प्रस्तुती अरथ क्रम तें औरै नाम ॥ ७० ॥

एक स्थल पर और भी इस पद को सरदार कवि ने लिखा है उसे भी मूल अर्थ समेत नीचे लिखा जाता है ।

भई है कहा प्रथम सी बाल । दुती सूर मिलि सुता त्रिती हित चाहत तोहि गुपाल ॥ चौथ सिंगार पंच करि काटि बुधि करी षष्टई चाल । सप्तम तोल आठ सो मारो फिरत नाथ बेहाल ॥ नव तो छोडि और नहीं ताकत दस जिनि राषो साल । एकादस ले मिलो बेगहुँ जामौ नवल रसाल। द्वादस सो तलफत पियप्यारो सूर समारो लाल ॥ ८४ ॥

उक्ति सषी की मानिनी प्रति । पूर्ववत् अलंकार प्रथमा वर्न है । बाला प्रथम सी यामें बारहो रास जानो प्रथम मेंष सी का भई है । दुती वृष सूर मिले बृषभानुजा त्रितीय मिथुन ते मिलन । चौथे करक सिंगार करिके पंचम सिंह कटि छठई कन्या कैसी बुधी सतई तुला तराजु तोल अठई बिछी को सो मारो नवम धन तो सी अवर नहीं है । दसम मकर नाम मान एकादस कुंभ कुचकुँ ले मिलो बारहो मीन सो तलफत है तुम बिन प्रीतम ताको सम्हारो ॥ ८४ ॥

बृज में आजु एक कुमार । तपनरिपु चल तासु पति हित अंत हीन बिचार ॥ सचीपतिसुतसलुपितु मिल सुता बिरह बिचार । तुम बिना बृजनाथ बरषत प्रबल आंसू धार ॥ बाल गोप बिहाल गाई करत कोटि पुकार । राष गिरधर लाल सूरज नाथ बिनु उद्धार ॥ ३० ॥

कुमार कठिन मार अथवा काम बैरी है रहा है तपन कहे सूर्य तिन रिपु मेघ तिन को चल वायु ताको पति इंद्र ताको हित प्रिय रंभा ताको अंतवरण भा कहे सोभा । तासो हीन विचार कहे बिचारो सचिपति इंद्र सुत जयंत ताको शत्रु राम पिता दशरथ ताकी सुता संता कहे सति

बिरह सांत बिरह कहै बिरह ते थकिबो बिचार है। गाई कहे गाय ऊधौ उद्धार करो ॥ ३०॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने कुछ घटा बढ़ा कर आगे लिखा है वह ज्यों का त्यों का आगे प्रकाश किया जाता है।

बृज में आज एक कुमारि। तपनरिपुचलजा सुपति हित अंत हीन बिचार॥ सचीपतिसुतसत्रुपितु मिलि सुता बिरह बिचार। तुम बिना बृजनाथ बरषत प्रबल आंसू धार ॥ बाल ग्वाल बिहाल आइ करत कोटि पुकार। राष गिरधर लाल सूरज नाथ बिनु उपचार ॥ ८९ ॥

उक्ति सषी की नायक प्रति। दो-मिल द्वावर्न कूट अलंकार पूर्ववत् अथवा उद्धव की उक्ति कृष्ण प्रति तपन रिपु तुहिन तामें चल मिलावहु दोइ मिलि हेमाचल भयो ताकी बा पारवति पति महादेव तिन को हित बृषभ अंत हीन ते बृष सचीपति इंद्र ताके सुत अरजुन तिन के रिपु करन ताके पिता भानु दोउ मिलि बृषभानुसुता भई सो तुम बिना हे बृजनाथ महा बिहाल है॥ ८९ ॥

नंदनँदन बिन बृज में ऊधो सब बिपरीत भई। षगपति व्यास बचन सम कोकिल बोलत बोल हई ॥ भूसुत सत्रु गेह मे काहू दीपत बार दई। पंथ सत्रु पति सुत सुधारि सर करि तन सूल सई ॥ सिवसुतबाहनसत्रु भोग सुत रिपु भष बान लई। बाजापतिबाहन के सैना बोलत जहर मई ॥ अबकी बेर मिलावहु बृजपति जीवनदान जई। सूरबरी लै जाहु जहां तहां कुबजा कूर रई ॥ ३१ ॥

बिपरीत कहै उलटी । षगपति कृष्ण ताको व्यास ऊधो की बचन कोकिल सम हुई । षगपति व्यास कहे काग भसुंड अर्थ काग । भूसुत मंगल कहे अनंद शत्रु अमंगल । दीपति कहे सोभा पंथ कहे राह ते राहु ग्रह ताको शत्रु सूर्य पति विष्णु सुत परदुमन ताको नाम पंचसर सुधार सुधारि सर तन में सूल से करे है । शिवसुत स्यामकारतिक ताको बाहन मोर ताको शत्रु सर्प ताको भोग पवन ताके सुत हनुमान ताके शत्रु सूर्य ता भष दिन कहे दीन बान लई । बा कहे जल जा कहे लक्ष्मी पति विष्णु बाहन गरुड ताकी सेना पछी ये उदीपमान पछी है सो जहरमई बोलत है । सूरकवि सूरबरी पंडिताई कुबजा कूर रई कृष्ण । सूरबरी नाम पंडिताई तहां ले जाहु जहां कुबजा कूर कृष्ण के पास रमे है । तात्पर्य की हमारी बिरह दसा की कथा लेई जाव तो तुम्हारी सूरबरी कहै बीरताई है ॥ ३१ ॥

टिप्पणी—इस पद के अर्थ और मूल में सरदार कवि ने कुछ घटाया बढ़ाया है उसे नीचे प्रकाश किया जाता है ।

नंदनंदन बिन बृज में ऊधो सब बिपरीत भई । षगपति व्यास बचन सम कोकिल बोलत जहर मई ॥ भूसुतसत्रु गेह में काहू दिपत दवार दई । पंथ सत्रु पति सुत सुधार सर करि तन सूल सई ॥ सिवसुतबाहन सत्रु भोग सुत रिपु भष बान लई । बाजापतिबाहन की सोभा बोलत जहर मई ॥ अब की बेर मिलावहु बृजपति जीवन मूर जई । सूर बहुत परजाइ दीन हर कुबजा कूर हई ॥९०॥

नंदनंदन इति । ऊक्त गोपी की ऊधो प्रत । के हे ऊधो बृज में सब विपरीत भई है । षगपति व्यास काग समान कोकिल बोलत है । भूसुत कवाच सत्रु बानर गेह बृछन मे काहू दमार दई है । पंथ सत्रु जमुना पति कृष्ण सुत काम सूल सई करत है । सिवसुत गनेस बाहन मूसा सत्रु बिलाई भष दधि नाम समुद्र सुत चंद्रमा रिपु राहु भष सूर्य की बान कई है । बा जल जा लछमी पति विष्णु बाहन गरुड़ सेना पछी जहर से बोलत है । तातें अब की बेर मिलावहु बृज पति जीवन मूर । सूर कहत जामें परजाइ अलंकार दीनता संचारी है ताको लछन । द्वै परजाइ अनेक कें क्रम सें आथाय एक ॥ दीन बेचन तें दीनता जानत सुकबि बिबेवक ॥ ९० ॥

पिय बिनु बहुत बैरिन बाय । मदन

बान कमान ल्यायो करषि कोप चिढ़ा-य ॥ दिवसपतिसुतमात अवधि विचार प्रथम मिलाय । बान पलटत भानुजा तट निरषि तन मुरझाय ॥ उदित अंजन पै अनोषी देव अगिन जराय । आदि को सारंग बैरी कटु प्रथम देषराय ॥ कौन राषनहार बृज बृजराज बिनु प्रन भाई । सूरदास को सुजन का सो कहो कंठ लगाय ॥ ३२ ॥

बिरहिन नायका की उक्ति । प्रिय कृष्ण बिना बाय बैरी बहत है । मदन बान कमान में करषि आयो कोप सो चढ़ायो दिवसपति सूर्य सुत करन मात कुंती कहै बरछी अवध करार बिचार लागत है । प्रथम मिलये कहे प्रथमही संजोग को वियोग । भानुजातट जमुनातीर बान पलटत कहै प्रकृत विपर्यें होइ है । निरषत ही कहे देषत ही तन मुरझाय कहे मूर्छा होत है यह बिरह दसा में प्रकृत विपर्यें में मूर्छा आदि को सारंग बैरी संजोग दसा को चंद सो प्रथम कहे पहेले ही कटु कहे तीछनता देखावैही बियोग में ब्यंग ते सूचित भयो की मेरी मुख सो याको मान हीन भयो तासो या समय बैर लेय हैं उदित अंजन दये पर अनोषी कहे अपूर्व आगि सी दरसाय है नाम देषाय है तात्पर्य यह की अंजन मति दे अब ताते कौन राषनहारो है बृज में बृजराज बिनु हमारो प्रन कहे नेम तिन को भाय सूरदास कवि को ऐसो सुजान है जासो मैं कंठ में लगाइ कै कहो ॥ ३२ ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस पद के अर्थ में कुछ घटाया बढ़ाया है वह ज्यों का त्यों नीचे लिखा जाता है ।

पिय बिन बहत बैरिन बाय। मदन बान कमान आयो करष कोप चढ़ाय॥ दिवसपति सुन मातु बौध बिचार प्रथम मिलाय। बान पलटत भानुजातट निरष तन मुरझाय॥ आद को सारंग बैरी पठ प्रथम दिषराय। उदित अंगन पै अनोषी देत आग्नि जराय॥ कवन राषनहार बृज बृजराज बिन प्रन भाय। सूरदास सुजान कासो कहो कंठ लगाय॥ ८६॥

उक्त प्रोषितपतिका नायका सषिन प्रति। ब्याघात अलंकार बिरह दसा दुमिलि दूगावन कूट कर कै दिवस पति सूर्य तिन के सुत करण ताके माता कुंती ताको आद को बरन कुं बौध मत कहावै है जैन ताको आद जेन दोनों मिलाय कुंजै भई बान नाम सर ताको परजाय नाम ताल ताको पलटे ते लताभई। सो जमुनातट बिषे जब हैं। सारंग भ्रमर ताको बैरी चंपा ताको आद बरन चंपट को नाम दुकूल ताके आद के दोमिलि चंद भयो सो आगि जरावै है अब बृज में कौन राषनहार है। बृजराज बिना अरु कासों कहों कंठ लगा के॥८६॥

बैठो आजु कुंजन ओर। तकत हैं बृषभाननंदिनि बलित नंदकिसोर॥ भानुसुत हित सत्रु पित लागत उठत दुष फेर। ह्वै गये सुर सूल सूरज बिरह अस्तुत फेर॥ ३३॥

(बैठी है कुंजन की ओर चितवत बृषभाननंदनी नंदकिसोर कों तकत हैं।) भानुसुत करण हित दुरजोधन शत्रु भीम पिता पवन लागे तें दुष होत है सुर कहे सुमन सर (सूल) से हो गए हैं बिरह तें तिनकी अस्तुत मुष निन्दा करति इहां सहेट सून ते बिप्रलबधा अस्तुत मुष तें निन्दा ब्याजअस्तुत अलंकार लच्छन।

दोहा—सुन सहेट संकेत ते, बिप्रलब्ध ठहराइ।
अस्तुत ते निन्दा कढै, ब्याज उक्त कबिराइ॥ १॥३३॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने उठत दुष फेर के स्थान पर उडत चुहुंकत हेर लिखा है और अर्थ में, सुन सहेट संकेत ते, के स्थान पर सूनेही संकेत तें, लिखा है।

फिर फिर उझकि झांकत बाल। बन्हि रिपु की उमड देषत करत कोटिन ष्याल ॥ भक्ष बिध के षरक फरकत अच्छु चारो ओर। केस ओर निहार फिर फिर तकत उरज कठोर ॥ हौं कहत ना जाउ उतका नंदनंदन बेग। सूर कर आछेप राषो आजु के दिन नेग ॥२४॥

उक्ति सषी की बा बाल हर हर बेर (तुम को) झांकत है वन्हि रिपु मेघ की उमंड देषत है बहुत ष्याल कारि के विध नाम अज अजा भष पाती ताके षरकत नेत्र चारो ओर चमकावत है केस नाम बार बार नाम दरवाजा की ओर निहारत है फेर देषत है नीचे मैं नाहीं कहत की (तुम) जाहु बेग उन आज के दिन का नेग आछेपक कर राषे है उतका आछेप पद असलेष है यामें नायका राह देषत यातें उतका सषी कहि रोकत तातें आछेप अलंकार लच्छन ॥ राह निहारै पीय की उतका सोय। कहत रोक आछेपा भूषन सोइ ॥१॥

दुरद मूल के आदि राधिका बैठी करत सिंगार। दधिसुतसुतसुतसुत अरिभषमुष करे बिमुष,दुष भार ॥ जल-चर जा सुत सुत सम नासा धरे अना-सा हार। बानरहितजापति पतिनी से बांधे बार अबार ॥ सारंगसुत नीकन

में सोहत मनो अनीक निहार । सूरज प्रभु बिरोध सो भासत बस परजंक बिचार ॥ ३५ ॥

उक्ति सषी की दुरद हाथी नाम ताको नाम कुंजर मूल नाम जर ताके आदि वरण ते कुंज भए तामे बैठि राधा सिंगार करत है दधिसुत कमल ताके सुत ब्रह्मा ताको सुत कसिप सुत सूर्य शत्रु राहु भष चंद्र मुष ते दुष को भार त्रिमुष करें हैं जलचर मीन जा मछोदरी सुत ब्यास सुत सुक ऐसी नासिका धरे हैं अनासहार बेसर टूटी नाहीं अथवा हार नाहीं टूटे बानर हित जामवंत ताकी पुत्री जामवंती पति कृष्ण पतनी जमुना सेवार अवारे तें बाधे बहु बिलंब ते सारंग सुत काजर नीकन अछन में दिये हैं मानो अनीक हरवल करे है हे सूरज के प्रभु विरोध सो लगत है परजंक पर (पै) बसि बैठ के बिचारो अथवा विरोध सो लगत है इन पदन में ताते बिरोधा भास अलंकार है वासकसज्यानाइका ताको लच्छन ।

दोहा—बिना बिरोध बिरोध सो, कही बिरोधाभास ।
बासकसेज्या जो सजैं, सब सिंगार सुख रास ॥१॥३५॥

हेरत हरष नंदकुमार । बिनु दिये बिपरीत कवजा पग छपाईन भार ॥ रंच उघरत देष नीकन मान उरवर भेद । परे सारंग रिपुन मानत करत अदभुत षेद ॥ निकस सारंग से सु सारंग हरत तन की ताप । सुधाधर मुष पै कपाई धौ कवन कह थाप ॥ श्रीसुतन ते सरस सागर होत छन छन आज । कियो पति आधीन कर कर बर बिभावन व्याज ॥३६॥

उक्त पूर्व या पद विषै बिभावना अलंकार भेद स्वाधीनपतिका नाइका है सो कहत है के नंदकुमार आज हेरत है कबजा बिपरीत तें जावक बिन दीने पग अरुनता छपाइन में है इहां पहिल बिभावना नीकन अछन के रंच उघरत ते उर भेद न मानत है इहां दूसरो बिभावना सारंगरिपु पट प्रतबंध कहै ताको नाहीं मानत है इहां तृतीय बिभावना है सारंग कपोत कंठ ते सारंग कोकिल बचन निकसत तन ताप हरै है इहां चौथो सुधाधर चंद मुष पै रुषाई काने थापी इहां पंचम श्री लक्ष्मी कारज ताते सुषसागर कारन निकसत इहां षष्ठम (याको) लच्छन। भाषाभूषन।

होत छभांत बिभावना कारन बिनही काज १ हेत अपूरन ते जहां कारज पूरन होइ २ प्रतबंधक के होत ही कारज पूरन जान ३ जबै अकारन वस्तु ते कारज परगट होइ ४ काहू कारन ते जबै उपजै काज बिरोध ५ कबहूं कारज ते जबै उपजै कारन रूप ६ अरु नंदकुमार हेरत इत्यादि पद तें स्वाधीनपतिनाइका पति आधीन जहां रहै पतिका सो स्वाधीन ॥३६॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने पग छपाइन भार के स्थान पर पगन लाली भार पाठ और कियो पति आधीन कर कर वर बिभावन व्याज के स्थान पर कियो पति आधीन सूरज कै विभावन व्याज लिखा है।

चरितावली में सूरदास के जीवनचरित्र में भारतभूषण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने इस सूरसागर के टीका को सूरदास का बनाया अनुमान किया है और सरदार कवि ने उसी को कुछ घटा बढ़ा कर अपने नाम से प्रकाशित किया है परंतु जो विशेष अनुसंधान से हरिश्चंद्र जी ने सूरसागर के टीका को संग्रह किया था उसी से यह पुस्तक प्रकाश की जाती है। अब यह निश्चय करना कठिन है कि यह टीका किस ने बनाया है परंतु यह तो ठीक है कि सरदार कवि ने इस तिलक को नहीं बनाया है। क्योंकि कोई २ भजन इस टीके में तीन तीन बार आ गये हैं और अर्थ एकही है। कहीं कहीं कुछ घटाया बढ़ाया है। बराढ़ी निवासी पंडित महादेव पाठक कहते थे कि सरदार कवि ने जो सूरसागर का टीका छपवाया है उस में पचासों भजन का अर्थ मेरे यहां से नारायण कवि ले गये थे। जो हो मेरी राय है कि पुराना टीका और इधर उधर के स्फुट मिले हुए अर्थ को संग्रह कर और आदि तथा अंत में कुछ कविता लिख कर सरदार कवि ने सूरसागर को अपने नाम से प्रकाश किया है क्योंकि हस्त लिखित पुरानी पोथी है।

हरिश्चंद जी ने इस को प्रकाश करने केलिये मुझे दिया था और इस पर बहुत कुछ लिखना चाहते थे परंतु अत्यंत शोच की बात है कि उन के समय में प्रकाश न हुई ।

सरदार कवि ने सूरसागर के टीका के आदि में यह लिखा है ।

'बंदो अंजनी के पाय । जासु उर गिर उदय हनुमत भयो दिन मन आय । कोक सुरवर सोक नासक कोकनद से संत ॥ थोक सुष बिन ओक प्रफुलित जनु बिचार बसंत । दोष दोषा दलन दुषतम दुसह दारुन रूप ॥ अघट अघ के ओघ उलू अंध अंध अनूप । बालषिल्ल मुनीस नारद करत जैजै कार ॥ रामसीताचरन चित नित बसो कवि सरदार ॥१॥

भाषीं भालु भाल बिसाल । को न गुन गनि में न साधो आपु अंजनिलाल ॥ रुद्र रूप अनूप मर्कट कियो कारन जोन । आजु साज समाज मध्यें ताक कीजे तोन ॥ बार सत हित गहत नासो सर्ब सुरपति रोस । बर अजादिक आप दैदै कियो तात सहोस ॥ राम हित मित सिंधु लाँघत लगत नाहीं बार । सुनत सुबरन नाग दूजो प्रभु भयो सरदार ॥ २ ॥

सोरठा—कासीनाथ उदार, उदत उदितनन्द है ।
ताको सरन बिचार, रहत सदा सरदार कवि ॥ ३ ॥

और ग्रंथ के अंत में भी तीन दोहा सरदार कवि ने लिखा है ।

'दोहा—मतन मतन तें सूर कवि, सागर कियो उदार ।
बहुत जतन तें मथन करि, रतन लहे सरदार ॥१॥
तिन पर सुचि टीका रची, सुजन जानिबे हेतु ।
मनुसागर के तरन कों, सुंदर सोभा सेतु ॥२॥
संबत वेद सुसुंन ग्रह, ओ आतमा बिचार ।
कातिक सुदि एकादसी, समुझि श्रुद्ध बर बार ॥३॥'

अब यह बात बिचारने की है कि यह टीका सूरदास का लिखा है अथवा नहीं तो मैं यह अनुमान करता हूं कि सूरदास का लिखा नहीं है क्योंकि इस भजन के अर्थ में भाषाभूषण का प्रमाण दिया है । तो भाषाभूषण के कर्त्ता सूरसागर के कर्त्ता के बहुत पश्चात् हुए हैं फिर सूरसागर का टीका सूरदास का लिखा है यह बात असंगत है । क्योंकि सूरदास का समय इसी ग्रंथ के उपसंहार में वा चरितावली देखने से भलीभांति मालूम हो जायगा । और भाषाभूषण के कर्त्ता का समय शिवसिंहसरोज में यों लिखा है ।

'जसवंत सिंह बघेले राजा तिरवा ज़िले कन्नौज संवत् १८९९ में हुए ये महाराज संस्कृत भाषा फ़ारसी विद्या में बड़े पंडित थे अष्टादश पुराण औ नाना ग्रंथ साहित्य इत्यादि सब शास्त्रों के इकट्ठा किये शृंगारशिरोमणि ग्रंथ नायका भेद में १ औ भाषाभूषण अलंकार में २ औ शालिहोत्र ३ ये तीनि ग्रंथ इन के बनाये हुए-बहुत अद्भुत हैं संवत १८७१ में स्वर्ग बास हुवा।

शृंगार शिरोमणि ग्रंथे।

लै सपने अपने मन की दुलही उलहीं छबि भाग भरी सी। अंक निशंक सो लै परयंक लला मुख चूमि सुचारु बरी सी॥ यों लपटी चपटी हिय सों जसवंत बिशाल प्रशून छरी सी। नैनन के खुलतै वह मूरति पास परी उड़ि जात परी सी॥१॥

छूटी लटैं लटकैं मुख पै जलबिंदु लसैं मनो पोहत मोती। बोलत बोल तमोल बिराजत राजत हैं नथ में शशि गोती॥ ओज सरोज उरोजकली सुभली त्रिवलीतट आनंद ओती। जोरत नेह मिरोरति भौंह सु चोरत चित्त निचोरत धोती॥ २॥

हेरो तौ हेरो न जात भटू हरि हेरे बिना नहिं लागत नीको। नैन जुरै न मुरै न भली बिधि कौतुक कासों कहौं यह जी को॥ को समुझै जसवंत इसै हौं ताको करों बलि पौरि जनी को। जीव कली कहे लाज तुरंग कहौ कहिबो करो लाज कै जीको॥ ३॥

लांबी लांबी लटै लोनी लटकत लंक लौं लौं लीक लागि लोचन उड़त झक झोरि झोरि। छूटि गये सकल सिंगारहार टूटि गये लूटि गये लपटि भुअंग अंग कोरि कोरि॥ सकुचि सयानी अंग रानी प्राण प्यारे बाल प्यारे जसवंत के निकट तन तोरि तोरि। तोरि तोरि चित हित जोरि जोरि लाड़िले सों छोरि छोरि कँचुकी जम्हात मुख मोरि मोरि॥ ४॥

शालिहोत्र ग्रंथे।

जंघे जमाय दुबो घुटुवान लौं पींडुरी ढीली दुहू दिशि चालौ। कानन मध्य में दीठि रहे थिरता करि कै कटि नेकु न हालै॥ जानै तुरंगम के मन की गति चाहिए ता बिधि चाबुक घालै। सोई सवार कहै जसवंत बचाये चलैं जो तमाल दिवालै॥ १॥

भाषाभूषण ग्रंथे।

दोहा—बिघन हरण तुमहौ सदा, गणपति होहु सहाइ।
बिनती करजोरे करौं, दीजै ग्रंथ बनाइ॥'

सूरदास के समय संवत् १६४० और जसवन्त सिंह का समय संवत् १८९९ है और इन दोनों का अंतर २१९ वर्ष का है। और जब भाषाभूषण का उदाहरण टीका में दिया है तो किसी प्रकार से सूरदास रचित यह टीका नहीं हो सकता है।

तात तात पै जात अकेली। दूती समूह दिवसंपतिनंदन संग न सरुच सहेली॥ उरज अनूप उठे चारो दिस सिवसुतबाहन पाद। संभू सैन समारो डोलत पग पग पग रिपु स्वाद॥ तदपि न डरत कूल कालिंदी धारो औ चित सांझ। सूरस्याम संग बिसेषोक्त कहि आई अवसर सांझ॥ ३७॥

उक्ति पूर्व। तात नंद के नंद पह जात है समूह रास दुती व्रष दिवसपति भान व्रषभाननंदिनी उरज पयोधर मेघ चारो दिसि उठे हैं शिवसुत वाहन मोर पाद सर्प संभु सैना प्रेत पगरिपु कंटक डग डग में है तदपि नाहीं डरत है कूल कालिन्दी में (पै अरु) विसेषोक्त अलंकार अभिसारिकानायका है रोकबे के हेत प्रेतादि है कारन सो कारज न कर सके लच्छन।

दोहा—विसेषोक्ति जब हेत तें, कारज उपजै नाहि।
प्रीतम पै अभिसारिका, जात बुलावत माहि॥ १॥३७॥

अब रथ देष परत न धूर। दूर बढि गो स्याम सुंदर वृज सजीवन मूर कामिसि-सुत की देष करनी आदि ते कर हानि।

परे जोबन मद्ध नाहीं रहन पावत मीन॥ अष्टसुर इन को पठाए कंस नृप के चास। तिपी पीपल माझ कीनो निपट जीव निरास। कलहनीपति पिता पुत्री तकत बनत न आज॥ कौन जानत रहे यह बिनु संभवन को काज। आइहै कै कहो सजनी सकल मोहि जनाइ। सूर समुझै गमन पति को करत सुरत सुभाइ॥३८॥

उक्ति नायका कै (की) हे सषी अब रथ की धूर नाहीं देपि परत सजीवन सूर बृज की दूर पहुंचे भूमिसुत अंकूर याकी करनी आदि ते हीन (करते) क्रूर (रहत) परे जो वन कहे जाल मधि मलाह को अत्र कहे जाल बंसी तासों मीन जल में नहीं बचत अष्टसुर बसुदेव इन को पठाए हैं ति पीपी नाम छपी छपी कहें गोपी जीवनिरास पल में कर दई कलहनीपति सनी पिता सूर्य पुत्री जमुना देषत नाहीं बनत यह कवन जानत रहे बिनु संभावन को कार्ज अब कब आइहै सूरपति गमन समुझै सुरत कर कर यामें असंभव अलंकार प्रवस्तक पतिका नाइका लच्छन।

दोहा—कहै असंभौ हेत जहँ, बिन संभावन काज।
गमन सुरतिपति को वहै, होत प्रवस्तक साज॥ १॥३८॥

वन ते आज नंदकिसोर। अली आवत करत मुरली को महा घन घोर॥ द्रगन कछु करत बातें मोह ते दिन अंत। जंगमन ते सुर सुनावत सरल सुषमा वंत॥ देष हुलसत हीय सब के

निरषि अदभुत रूप । सूर अनसंग तजत तावत भयो पति का सूप ॥ ३८ ॥

उक्ति पूर्व । बन ते नंदकिशोर आवत मोह ते दिन अंत राति जंगमन चरणन ते शब्द सुनावत या पद में (आगत पति का नाइका लच्छन ।) असंगत अलंकार आगतपतिका नायका लच्छन ।

दोहा—कारज आन सुआन है, कारज होत असंग ।
पति आवत के होत है, आगतपतिका रंग ॥१॥३९॥

जब ते हों हरि रूप निहारो । तब तें कहां कहोरी सजनी लागत जग अंधियारो ॥ तमहरिसुत गुन आदि अंत कबि का मतिवंत बिचारो । मेरे जान अनीतन इनको कीनो बिध गुन वारो ॥ षचर षिलौना षीर आदि मिल्ल मुष सम बदन सम्हारो । लाग गया याहीतें इनको रथ षा दुजतिय वारो ॥ पूषनसुत सहाय सिवआनन कालष नैन बिचारो । सूरदास अनुराग प्रथम तें विषम बिचारबिचारो ।४०।

जब ते हम हरि रूप देषो तब ते जग अंधेरो लगत है तमहर सुत काजर गुन कहे (को नाम) दाम आदि अंत तें काम भयो सो कवि जो काम ऐसो रूप बरनत (कहत) ताते इन को ब्रह्मा ने अनीत अनयन करो ष आकास षिलौना चंग षीर दूध आदि बरन ते चंद जो इन के मुष समान भयो ताते याके रथषा कहे सुन्न दुज कहे,एक सब बिपरीत ते लिषिए अंक वामगति है तो

दशरथ होत है ताकी तीया कैकई ताको लगो कलंक चंद कलंकित होइ गयो पूषनसुत सुग्रीव सहाय रिछ शिवआनन पंचवां (पंच पांचवों) नक्षत्र मृगसिरा मृग नेत्र देष का बिचारो सूरदास प्रथम अनुराग में बिषम बिचार इन को जानो अथवा प्रथम अनुराग भयो तातें या पद बिषे पूरबा अनुराग अरु कृष्ण स्याम है तिन कों उज्जल कारज में बरनो याते बिषम अलंकार कवि को अभिप्राय लच्छन।

दोहा—कारन काज बिरोध रंग, बिषम कहावै सोइ।
प्रथम भयो अनुराग ते, है पूरबई सोइ॥

परंतु या पद में अदभुत के हेत कियो ताते हेतोतप्रेक्षा है ॥४०॥

सजनी नंदनंदन आज। परक ठाढो हेरि आई हरष बाढो साज॥ ताल नव को ओर चितवत लेत है मन मोल। चमक नैना चलत चहुंदिस कहत अमृत बोल॥ टकमु लटकन देष सजनी करत सुष बिपरीत। सूरस्याम सुजान सम बस भई है रस रीत॥ ४१॥

उक्ति नाइका की सषी प्रति कै हे सषी आज नंदनंदन हों परक में ठाढो दिष (हेर) आई हैं ताल पलटें तें लता की (वोर) नव ते वन की वोर चितवत है मन मोल लेत हैं चमकनाने नैना चलत है चारो वोर टकमु पलटें तें मुकुट होइ है इनको बिपरीति करे सुष है सूरस्याम सुजान मेरे बरोबर कहै करत रसरत अनुराग पूरब अलंकार सम यथायोग को संग॥ ४१॥

बंसीबट के निकट आजु हो नेक स्याम मुष हेरो। नटनागर पट पै तबही ते लटक रहो मन मेरो॥ सिवरिपुतिय घट

मनुज गिरा रस आदि बरन जा केरो। सुतबाहन सिर धरे आप सचु निज कर सम निरबेरो॥ नीरदेव वो कोप सहित कर पूरब रीत बसेरो। भूसुतचिय तलफत सफरी भो बार हीन तन हेरो। सूरज चितै नीच जल ऊंचो लयो बिचित्र बसेरो॥ ४२॥

उक्त अनुराग पूर्व बंसीबट के निकट आज मैं ने नेक स्याम को मुष निरषे है (हेरो) नटनागर के पट में (पै) तब ते मेरो मन लटको है सिवरिपुतिया तुलसी घट हीन मनुज नर गिरा रस इनको आदि बरन ते (लेत) तुहीनगिर जा पारबती सुत स्यामकार्त्तिक बाहन मोर के पछ सिर पर धरें है नीर नाम बा देव सुर कोप रीस आदि बरण ते बासुरी सो बजावत है भूसुत मंगल तें तीसरो बृहसपत नाम जीव सो तलफत मछरी की रीत तें ऐसे के नीचे जल में परिछाहीं न देष तन ऊंचे चढ गयो यह बिचित्रता देष यामें पूर्वा अनुराग में बिचित्र अलंकार है नीचे चितवत ऊंचो होइ तो लच्छन।

दोहा—इच्छा फल बिपरीत ते, कीजै जतन विचित्रं।

अरु मीन उपमान की तरह तें जीव तरफरात ताते दिष्टांत है परंतु कवि अभिप्राइ बिचित्र में है॥ ४२॥

मोहन सो मन बसि गौ माई। को जानै कुलकान कहां है मात तात ग्रह भाई॥ ज्यौं सारंग सारंग के कारन सारंग सहत न डोलै। रंभापति सुत सत्रु पिता ज्यौं नय अहि अंत न तोलै॥ तन पै नीत

आदि सुत सुत की जननी प्रीतम माहीं। रहत तजै परबस प्रहार त्यों आस तजत तन नाहीं॥ नृप भूषन कपि पितु गज पहिलो आस षचर की छोडै। तिथ नछत्र के हेत सदाई महाबिपति तन ओडै॥ त्यों मम प्रान नबान सबन को आन ऐंच सो राषो। सूरजदास अधिक का कहिये करो सत्रु सिव साषो॥ ४२॥

उक्ति पूरब। मोहन मो (मेरे) मन बसो कुलकान मातादि को जानै कहां है जैसे सारंग मृग वा राग वा बान अर्थ मृग राग के हेत बान सहत डोलत नाहीं रंभा पति सुत सत्रु करण पिता सूर्य नाम पंतग ते फतींगा नय नदी अहि साप अंत ते दीप में जरत है तन अंग पय जल नीत के आदि वरण ते अंजनी सुत हनुमान ताके सुत मकरधुज माता मछरी प्रीतम जल में रहत हैं परबस तें तजत है तो भी प्राण नाहीं राषत नृप भूषन चामर कपि पिता त्रिमूरत गज करी आदि ते चात्रिक षचर घन की आस छोड़त (छोड़े) है तिथि पंद्रहे नछत्र स्वाती को चाहत (पपीहा) है तैसही मेरो प्राण सब की वान लई है अधिक का कहै शिव सत्रु काम साषी है इहां जो सब को मोहन आप में राषनहार सो मेरे मन बस गयो यातें कवि को अभिप्राय अधिक को है लच्छन।

दोहा—अधिक दीर्घ आधार ते, जब आधेय गनाय॥ ४३॥

कुंजमग में आज मोहन मिलो मोको बीर। चली आवत थी अकेली भरे जमुना नीर॥ गहे सारंग करन सारंग सुर समा-

रत बीर। नैन सारंग सैन मोतन करी जान अधीर ॥ आठ रबि तें देष तब तें परत नाहीं गम्हीर। अल्प सूर सुजान का सो कहौ मन की पीर ॥ ४४ ॥

कुंज मग मैं आज मोहन मोको मिले मैं जमुना जल लिये आवत रही सारंग कमल करन तें सारंग के सुर सम्हारत रहै अर्थ मुरली के छिद्रन तें अरु सारंग जे मृग द्रग हैं तिन तें मेरे ओर सैनकरी तब तें आठवां ग्रह राहु नाहीं देष परत यह अलपता कासें कहों यामे ऐसो जो मारग सो अल्प हो गयो तो अधार अधेय दोऊ अल्प तें अल्पा अंलकार है लच्छन।

दोहा—अल्प अल्प आधेय ते, सुछिम होइ अधार ॥ ४४ ॥

आजु अलीलषि अचरज एक। सुत सुत लषित ति पीपी गोपी सुत सुत बांधे टेक ॥ पगरिपु अंग अंग दोहुन के झरत धारकननीक। रागमूल भी सिव प्रिय देषत दोहुन नाहि नजीक ॥ दोउ लगत दुहुन ते सुंदर भले अनोन्या आज। सात्युक सूर देष दोहुन को करन सकत है लाज ॥ ४५ ॥

उक्ति सषी की (कै) हे सषी आज यह अचरज देषै सुत कहे नंद के नंद तिन ति पी पी कहे छपी छपी तें गोपी परसपर टेक बांधे देष रहे हैं पगरिपु कंटक दोहुन के अंगन में उठे हैं राग मूल सुर शिव प्रिय भंग दोहुन को भयो है नजीक नाहीं देषत है अरु जे दोई दोहुन तें सुंदर लागत है

भले अनोन्य परस्पर सातुक देष दोहुन को लाज नाहीं करि सकत या पद बिषै सातुक भाव कंटकादि सुर भंग ते अरु परसपर ते अनोन्य अलंकार लच्छन।

दोहा—लष बिभाव जो अंग में, होत सु सातुक जान।
उपकारी जहं परसपर, तहां अनोन्या मान ॥ १ ॥४५॥

सजनी जो तन बृथा गँवायो। नंदनंदन बृजराजकुंअर सों नाहक नेह लगायो ॥ दधिसुत धररिपु सहे सिलीमुष सुष सब अंग नसायो। सिवसुत वाहनरिपुभषसुत सुत सब तन ताप तचायो॥ घर आंगन दिस बिदिस सूरजा तट वह मूरत देषी। सूरज प्रभु ते कियो चाहियत हैं निर्बेद बिसेषी ॥४६॥

उक्ति नायका की सषी प्रति कै हे सषी यह जो तन है सो वृथा गँवायो नंदनंदन वृजराजकुंअर सों कियो नेह दधिसुत धर शिवरिपु काम को बान सहै सब सुष षोइ कैं शिवसुत गणेश बाहन मूस रिपु बिलाइ भष दूध सुत दधि समुद्र सुत चंद्र के ताप ते तची घर आंगन दिस बिदिसन सूरजा जमुनातट वही मूरत देषी अब सूर के प्रभु ते निरबेद बिसेष करो चाहियत है यामे निर्बेद संचारी को है संकर सब ते मन हटो तातें निरबेद एक वस्तु अनेक ठौर बरनी तातें बिसेष अलंकार लच्छन।

दोहा—षेद सुषन ते कहत है, संचारी निरबेद।
एक अनेकन थान ते, है बिसेष को भेद ॥ १ ॥४६॥

धिग धिग मोहि तोहि सुन सजनी धिग जेहि हेत बोलाई। धिग सारंग

सारंग में सजनी सारंग अंग समाई ॥ सारंग माल लगत सारंग सी सारंगिनि ज्यों फूली। सारंगिनि दै दोस सूर बैघा-तिन समुझो न भूली ॥ ४७ ॥

(धिग धिग इति) उक्ति नायका की सषी सों कै मोको धिग तोकों धिग जाके हित बोलाई ताकों धिग सारंग चंद सारंग रात में स्याम जो कारो जाके अंग में समाई सारंग दीपमाला सारंग आगि सी लगावत अथवा सारंग भ्रमर माल सारंगिनी कमलनी जो फूली है सारंगिनी जो अली है ताको दोष दे के बयक्रम की घातिन समुझि कै भूली यामें गलान संचारी सुषदायक दुष दायक तें ब्याघात अलंकार ॥ ४७ ॥

रवि दो घर रिपु प्रथम बिकासो। ताने निज पतिनी मेरे मन करि सारंग प्रकासो ॥ पतनी लै सारंग घर सजनी सारंग धर मन षैचो । ग्रह नक्षत्र अरु बेद सबन मिलि तन प्रन करि के बेचो॥ सो तन हान होन चाहत है बिना प्रान पति पाये। कर संका कारन की माला तेहि पहिराउ सुभाये ॥ ४८ ॥

उक्ति नायका की सषी प्रति कै हे सषी रवि तें दूसरो ग्रह चंद धर शिवरिपु काम प्रथम हमारो तन में आयो ताने निज पतिनी रति प्रीति कर के हृदय कमल में प्रफूलित कियो रति जो है ताने सारंग धर कृष्ण सारंग हाथ पकर के मन षैंचो (अथवा उर कमल में षैंचो) ग्रह नक्षत्र वेद चार मिलि

चालीस को मन सो मन ने हमारो तन प्रण रोप के बेचौ ता तन की हान के डर संका (भयो चाहत है माननाथ बिन ताकी संका करिके अरु ए जो कारन ताकी माला ताको पहिरावहु। इहां प्रान हान के) संचारी कारन ते कारज होत गयो तातें कारणमाला अलंकार है लच्छन।

दोहा—बस्तु भावती हान तें, डर सो संका मान।
कारन काज परंपरा, कारनमाला जान ॥ १ ॥४८॥

बयरोचन सुत को सुभाव सुन जबही जान पठाई। तब ही तव संग चंद भाग गौ सब सुष देषन वाई ॥ चंद भाग संग गयो सुआषररिपु सब सुष बिसराई। एक अबल करि रही असूया सूर सुतन कहु चाई ॥ ४९ ॥

उक्ति नायका सषी प्रति बैरोचनसुत सुभाव सषी जब तोहि पठाई तब चंद भाग मन गयो जब मन गयो तब सुआषर सुवरण रिपु सुहाग गयो एक अबल तन रहै यामें असूया संचारी एकावली भूषन लच्छन।

दोहा—अनसहिबो पर भले को, तहां असूया होइ।
ग्रहत मुक्त की रीत तें, एकावलि कबि लोइ ॥ १ ॥

नायका परसंभोग दुषता को लच्छन पूर्ववत् ॥ ४९ ॥

राधे आज मदनमद माती। सोहत सुंदर संग स्याम के परचत कोट काम कल थाती ॥ अंतरिच्छ श्रीबंधु लेत हरि त्योंही आप आपनो घाती। ग्रीषम पवन लेत हरि हरि करि ग्रीषम पवन लेत

निज छाती ॥ यह कौतुक बिलोकि सुनु सजनी माला दीपक को चित चाती । सूरदास बल जात दुहुन की लिषि लिषि हृदय कथा चित पाती ॥ ५० ॥

उक्ति सषी की सषी सें हे सषी आज राधा मदनमद ते माती है सुंदर स्याम के संग जो कोट में काम के कलनि की थाती जोरी रही सो षरचत है अंतरिछ अधर श्रीबंधु सुधा हरि लेत है तैसहूं आप लेत है ग्रीषम पवन को नाम लपट है जैसै हरि लपटत है तैसही आप लपटत हे सजनी ये कौतुक देष को दीपमाला चाहत है सूर बल जाहु दुहुन की प्रेम पाती लिषि लेत हृदय में या पद में मद संचारी मालादीपक अलंकार ताको लच्छन ।

दोहा—मोह जो अति आनंद ते, मद कहियत है सोइ ।
दीपक एकावलि मिलत, मालादीपक होइ ॥१॥९०॥

देषि आज बृषभानदुलारी । दिनपति-सुतभ्राता पितपितुजा पति सुतसुत-प्रिय पित हितकारी ॥ सचु प्रिया करि मद्दा थकित हो रही समारन अंग बिचारी । नीकन अधिक दिपत दुत ताते अंतरिछ छबि भारी ॥ मेघन पाट नषा-जातिक नष डारत तीन लोक छबि बारी । भूषन सार सूर श्रम सीकर सोभा उडत अमल उजियारी ॥ ५१ ॥

राधे इति उक्ति सषी की (के) सषी प्रति के आज वृषभानदुलारी कौ देष दिनपति सूर्य सुत करण भ्रात जुधिष्ठिर पिता धरमराज पिता सूर्य पुत्री जमुना पिता कृष्ण सुत सुत अनरुध पतिनी ऊषा पिता बानासुर हित महादेव सत्रु काम पतिनी रति सो रति करी महा थकित भई है अंग नाहीं संभार सकत नीकन अछन में आछी दुत है ताते अंतरिछ अधरन में मेघन कहै पयोधरन में पाट नषा जातिक घाउ नषछद पै तीन लोक की छबि बारत हो भूषन सार स्रम के सीकर तें सोभा उमडत है या पदन में जो स्रम भयो तातें स्रम संचारी अरु द्रगन में एक एक की छबि अधिक है ताते सार अलंकार लच्छन ।

दोहा—बहुत उताइल काज ते, स्रम सुसिथिलता होत ।
एक एक तें अधिक है, भूषन सार उदोत ॥ १ ॥५१॥

राधा बार बार जमुहात । जलचर जल सुत कीर बिंब फल है रसाल के सात ॥ द्रिग मुष देष नासिका अधरन ठोठी ठीक लषात ॥ सारंग सुत छबि बिन नथुनी रस बिंदु बिना अधिकात । सूरज आलस जथा संष कर बूझ सषी कुसलात ॥ ५२ ॥

राधा इति उक्ति सषी की सषी सों कै राधा बार बार जमुहात है जलचर मीन जलसुत चंद कीर सुआ बिंब फल कूंदुरु रसाल आम ए जथा संष कर लगावत सब द्रिग जलचर मुष ससि कीर नासिका बिंब अधर रसाल ठोठी सारंग सुत काजर द्रगन छवि मुष नथुनी नासिका रस अधर बिंदु ठोठी यामें आलस संचारी जथा संष अलंकार लच्छन ।

दोहा—उठ न सकत ऐंठात तन, जहां सुआलस होइ ।
बस्तु अनुक्रम संग ते, जथा संष कबि लोइ ॥१॥८२॥

बृज में करो कौन उपाइ। भई जो बिपरीत ताको समुझ सूल सुभाइ॥ चार पद के पत सु भूषन ते निकासी संक। तितिपी उर डार दीनी प्रान बारी रंक॥रटत सारंग ते निकासी नाग समर मिलाइ। डार दीनी सुमुष तिन के कहा धो चित चाइ॥ यहै चिंता दहै छाती काम घाती बीर। करत है पर संष काहे समुझ ताकत तीर ॥ ५३ ॥

उक्ति नाइका की सषी सें कै हे सषी वृज में का उपाइ कीजिये जो बिपरीत भई है ताको सूल समुझ चौपद पसु ताके पति शिव भूषन ससि को नाम ससांक कहै ताते संक निकास तिपीपी छपी कहै गोपीन के उर में डार दीनो प्राणवारी रंक सारंग पपीहा जो पी पी रटत है सो नाग नाम अहि समर रन मिलि अहिरन भए तिन के मुष में डारो है का पी पी पुकारती इहि चिंत छाती जरत है तापर काम जो घाती है करत है पर-संष सत्रु की संका तीर कहै बान समुझ के यामें चिन्ता संचारी पर पर-संषा अलंकार लच्छन।

दोहा—चिंता जो प्रिय बस्तु की, करै चाह मन माहि।
परसंष्या एक थल बरज, दूजे ठहरत जाहि ॥१॥५३॥

भूसुत आइ गो एहि बेर। लेन सुत सुत हाइ सजनी सुसुझ आप सबेर॥ पुंड सुत पित तात हो कें लेहिगोरी

प्रान। कै सुजीवन मूर लेकै हरेगो तनसान ॥ मोहि यह संदेह सजनी परी बिकल्प आन। सूर समुझ उपाइ कर कछु देहु जीवनदान ॥ ५४ ॥

भूसुत अंकूर हे सषी अकूर आइ गयो है एहि बेला में सुत (सुत जो है नंद तिन के सुत कों लीबे के हेतु सो हे सजनी तू सबेर समझ) सुत कहे नंदनंद के लेन को हे सषी सबेरा समुझ पंडुसुत करण पिता सूर्य तात कहे पुत्र जम होइ के प्राण लेइ गो कै सजीवन मूर नंदनंदन ले जाइगो मोको इह संदेह को विकल्प है सो समुझ के उपाइ कर जीवनदान दे यामें चित विकल तातें मोह संचारी जह कै बहुत विकल्पा अलंकार है।

दोहा—चित्त विकल ताते कहत, मोह महा कविराज।
सो बिकल्प जहंकै जहँ, है एहि बिध को साज ॥१॥५४॥

दिगजापतिपतनीपतिसुत के देषत हम मुर्झानी। उठि उठि परत धरनि पर सुंदर मंदिर भई अयानी ॥ सारंग बचन सुनत जीवन की कछू आस उर आनी। भूतनयारिपुपितु सैना की संगिन मति गति ठानी। कासे कहो समूचै भूषन सुमिरन करत बषानी। सूरदास प्रभु बिन बृज ह्वै है कहिए कहा सयानी ॥ ५५ ॥

उक्ति सषी की सषी सें द्रग नाम लोयन लोइन नाम पक्षी मैना ताकी जा पारबती पति संकर पतनी गंगा पति समुद्र सुत ससि ताके देषत नायक की सुध आई ताते मुरझानी (मुरझा गई) तातें उठि उठि धरनी पै परत है मंदिर में अयानी हो रही है सारंग पपीहा के बचन सुन षन उठत है जब बोलत है की पिय आए तब जीवन आस होत है भूतनया जानकी रिपु जयंत पिता इंद्र सैना मेघ संगिन बिजुरी की गति हो रही है अर्थ चमकत है सो मै कासे कहों यह समूचै अलंकार सुमिरन संचारी कर रही है लच्छन।

दोहा—एक संग में भाव बहु, कहै समूचै सोइ।
सुध तें सुमिरन जानिये, सुकबि सराहत सोइ ॥ १ ॥५५॥

बोल न बोलिये बृजचंद। कौन है संतोष सब मिलि जानि आप अनंद॥ कहै सारंग सुत बदन सुनि रही नीचे हेर। निरषि सारंग बदन सारंग सुमुष सुंदर फेर॥ गहत सारंगरिपु सुसारंग दियो सारंग सीस। कियो भूषन पुच सारंग संग सारंग दीस॥ उदै सारंग जान सारंग गयो अपने देस। सूरस्याम सुजान संग ह्वै चली बिगत कलेस॥ ५६॥

उक्ति नायका की नायक प्रति कै हे बृजचंद हम सें मत बोलो आप को आनंद देष सब ने संतोष कियो है यह सुनि नायक कही की सारंग समुद्र सुत चंद बदन सो सुन नीचे हेरन लगी सारंग कमल बदन सारंग कृष्ण को देषि मुष फेर लियो सारंग रिपु पट जब पकरो तब आप सारंग कमल कर सारंग संभु कुचन पर धर राषी सो भूषन अलंकार सारंग दीप ताको पुत काजर अरु सारंग दीपक कीनो अर्थ कारक दीपक

अलंकार कीनो अरु उदित सारंग सूर्य को बिचार सारंग चंद आपन घर गयो जानि के स्याम के संग चली कलेस नाहीं पायो यामें धृत संचारी जनायो।

दोहा—कारक दीपक में कहत, क्रम ते बहुतै भाव।
धृत संतोष बिचारि मत, बरनत है कविराव ॥ १ ॥५६॥

मानिन तजो नाहीं मान। करत कोटि उपाइ थाको सुघर सुंदर स्याम ॥ इंद्र दिसि के आदि राषै आदि दरपन बान। दो हकार उचार थाको रहे काढत प्रान ॥ हेमपितु सुनु सबद सैना लगी आप लजाय। जोगि प्रिय भूषन सँभारत सूर अति सुष पाय॥ ५७ ॥

उक्ति कवि की कै माननी ने मान नाहीं तजै नायक बहुत उपाइ करि थाको इंद्र पाकसासन दिस इसान आदि बरन ते पाइ दरपन सीसा वाण सर आदि ते सीस भयो सीस पाय पर धरयो दो हकार ते हाहा उचार करि थाक गयो प्राण निकासबे पै भयो तब तक हेम सुबरन ताको नाम अर्जुन पिता इंद्र सैना मेघ का शब्द सुनि लजाय रही जोगिन की प्रिय समाध अलंकार सूर संभार सुष पायो इहां लज्जा संचारी समाधि अलंकार है ताको लच्छन।

दोहा—सो समाध कारज सुगम, हेत और मिल होय।
अति सकुचब तें कहत हैं, लाज सबै कबि लोय ॥१॥५७॥

सजनी निरष अचजर एक। जल हरि हित रिपु सैन पराजित ह्वै गए बृज तजि टेक ॥ सो उर राषि साज सजि

आई समी पाइ बिन नाथ। व्याकुल कै बृषभाननंदनी आपु भई रुच साथ॥ हरष हरष करषन चित चाहत तेहितें का प्रति नीक। सूरज प्रभुहि सुनावन हारो है को कहु चित ठीक॥ ५८॥

उक्ति सषी की सषी सों के हे सषी एक अचरज देष जल नाम बा हरि नाम बानर ताको हित पर्वत सत्रु इन्द्र ताकी जो सैना है सो कृष्ण तें हारि के गई सो फिर समुझ के बिन नंद नंदन आई है वृषभानकुमारी को ब्याकुल कीनो आपु षुसी भई है अब हरष के चित षैंचे चाहत यातें नीक न ह्वैहै यह कृष्ण को को सुनावै या पद में उदवेग संचारी प्रतनीक अलंकार है ताको लच्छन।

दोहा—चित में भ्रम जहं कहत हैं, सो उदवेग कहाय।
कोप पच्छ प्रतपच्छ पै, प्रतनीक को भाय॥ १॥५८॥

बाम बाम जिन सजनी कीनी। तिन को ऊधो कहाँ बात बढ हम हित जोग जुगत चित चीनी॥ षुसपन पति बाहन भष हम संग षातन तनक लाज गति भीनी। बृच्छ भाग धर फिरे सबन के कवन आप तब समुझन झीनी॥ भनित अर्थ भूषन उनही हित कौन भरत चित चाह नवीनी। सूर कहो जो

तुमै रुचै हम जीवन जो न मीन गति हीनी ॥ ५८ ॥

उक्ति गोपिन को ऊधो प्रति कै जिन बाम टेढी अर्थ कुबरी जिन सजनी करी है तिन जो हम को जोग की सीष दई तो का बठ बात कढी अर्थ उन की बुद्धि चंचल है पुसपन सुमन देवता नायक गणेश बाहन मूस (मूषक) ताको (तिनको) भष कपडा दही हम संग पहिरत षात तनक लाज न करी वृक्ष-भाग कंध पै हमको चढ़ायो भनित काब्याअर्थ पति अलंकार उनहींके हित भरत कियो है जो हम जीव जलमीन गत नाकरी अर्थ बियोग होत न मरी यामें कृष्ण पक्ष ते चपलता संचारी काब्याअर्थ पत अलंकार लच्छन।

दोहा—जहँ कीनी तेहि वह कहा, काव्यअर्थ पति होइ ।
बहुत उताइल काज तें, कहत चपलता सोइ ॥१॥५९॥

देषरी बृषभानजा की दसा आज अनूप । बनत नाहीं कहत देषत सरस बिरह सरूप ॥ नीकनन तें देवस डारत परत घन पै हेर । बेद धरत न सुनं गुन के नषत टारन फेर ॥ सुक्रबाहन सी सुषानी बिना जीवन देष । चंद भाग पठाइ दीनी प्रान पत संग लेष ॥ पंच ग्रह राषनि बिचारी वहै सारंग एक । भनित चिन्ह बिचार अभरन राखु सूरज टेक ॥ ६० ॥

उक्ति सषी की सषी से के हे सषी वृषभानुजा की दसा देष जो

विरह में सरूप कीनो है सो देषत बनत कहो नाहीं जाति नीकन नैंन तें देवस नाम बार ढारत है सो घन कहें पयोधरन पर (पैं) परत है वेद स्तुत श्रवनन में सुंन आकास गुण शब्द नाहीं सुनत नषत हस्त हाथ नाही फेरत सुक्रबाहन दादुर सी सुषाई है बिना जीव जल अरू जीवन पति बिना चंदभाग मन पठाय दयो पिय के संग पंचग्रह जीव राषनहारो पपीहा का है कै पीआउ कहत है भनित काव्य चीन्ह लिंग काव्यालिंग आभरन अलंकार कियो यामें औ जडता संचारी कवि यामें करत लच्छन।

दोहा—काव्यलिंग सामर्थता, जहँ दिढ करत प्रवीन।
सब कामन ते सुनं हो, सो जडता मति पीन ॥१॥६०॥

आवत सुनो नंदकिसोर। आजु मेरी गली हो कें करत बंसी सोर॥ लगे हुलसन मेघ मंगल भरे बिथक सजोर। करन चाहत राष रोके काम कल बल छोर॥ अंत तें कर हीन फरकत फनिग बांई वोर। नीत बिन बलवान सीषत नीक जानन जोर॥ काज आपन समुझ कें किन करे आप अथोर। बाच्य अंतर आद जय कर सूर भूषन तोर॥ ६१

उक्ति नायका की आज नंदकिसोर आवत मैं अपनी गली सुनो है बंसी की घोर करत तब तें मेघ पयोधर हुलसन लगे हैं बिथक पवन नाम बात बात करबे चाहत हो सो काम रोक राषत है फनींग नाम भुजग अंतहीन जे भुज बांई फरकत है आपनो भलो समुझ काहे न करो नीत बिनु नयन बलवान भुजबान सीषत है सब अथोर कहे बहुत बाच्य अंतर अर्थांतर जय आदि न्यास अर्थांतर न्यास भूषन अलंकार यामें है हरषसंचारी लच्छन।

दोहा—करि बिसेष सामान्य मे, है अर्थांतर न्यास ।
चित में आनंद को उमग, कहत हरष परगास ॥ १ ॥६१॥

सिवभष यह सारंग सी जोत । कहत सदा याही बिध प्रतिदिन पिय मन सकुच न होत ॥ दधितसु में दधि तिय दीपत सी मृदु मुष ते मुसुकात । सुंदर आपर नग पै नगपति घन कहि लजत न गात ॥ सुनि सुनि प्रौढ उक्ति अस उन की मन की कही न जात । सूरस्याम को को समुझावै तो बिन ललिता बात ॥ ६२ ॥

उक्ति नायका की शिवभष कनक सारंग दीप सी तेरे तन की जोत है या बिध पिय कहत सकुचत नाहीं है दधिसुत चंद में दधि तिया गंगा-जल कै सी दीपति मेरी मुसकान बतावत है सुंदर आपर सुबरन नागा गिर पै नगपति महादेव से कुच कहत है ऐसी प्रौढ़ उक्ति उन की सुन के मो पर अपने मन की नाहीं कही जात सो हे ललिता तो बिन या बात उन कों को समुझावै जासें ऐसी अनुचित न कहै यामें प्रौढ़ोक्ति अलंकार गर्भ संचारी लच्छन ।

दोहा—करि अहेत को हेत जहं, तह प्रौढोक्ति प्रमान ।
है सब तें सब बिध सरस, यहै गर्भ की पान ॥१॥६२॥

फल सूचक का कहि के जैये । जो यह बिपति परी तन उपर सो का कहि

समुझैये । दधिसुत रिपु भषसुत सुभाव पै इत उन मोहि बोलाई ॥ गिरिजापति भष बीच को न सो ह्वैगै मोको माई ॥ भूसुत सत्रु थान किन हेरत लषत मोहि मन मारें । मुनिरिपुपुत्रबधू किन बैरिन मोकों देत सवारें । तीन सुन इक करी होइ के तितनै सुषमुष पावै ॥ नंदनंदन की कीरत सूरज तो संभावन गावै ॥६२॥

उक्ति नायका की सषी प्रति कै फलसूचक ग्रह ग्रह नाम घर का कहिके जाइए जो यह बिपत हम पै परी है सो का कहि कों समझाइये दधि-सुत चंद रिपु राहु भष सूर्य पुत्र करण सुभाव सषी ताके हाथ मोकों बुलाई गिरजापति भष बिष बीच में मोकों को हो गयो भूसुत केवाच शत्रु बानर गेह वृक्ष तो हेर मोको मनमारे कहा देषत है मुनिरिपु काम सुत अन-रुध तीया ऊषा मोको दिषाउ तिन सुन्न ते एक पर करे हजार होत है करी नाम हाथी ताको नाम नाग जो हजार सेस होहि अरु एक हजार मुष पावों तो नंदनंदन की कीरत गावैं यामें संभावना अलंकार बिषाद संचारी लच्छन ।

दोहा—ज्योंय्यों त्योंय्यों होहि तो, संभावन चित जान ।
होइ मलिन मन दुष ते, जँह बिषाद चित आन ॥१॥६३॥

सोवत कुंजभवन में दोउ । श्रीबृष-भानकुमारिलाडिलो नंदनंदन बृज-भूषन सोउ ॥ हाथनपितुसुतहित

मुनि षटधर एक एक उपर सुच सोउ। अंतरिछ सारंग सुत उन के उन उन रंग विन नीकन होउ ॥ यह सुष मधुर सुनत श्रवनन में रहत सेस आनंद भर जोउ। सूरदास प्रभु को यह लीला मिथ्या करत ब्रह्म सुष धोउ ॥ ६४ ॥

उक्ति सषी की सषी प्रत कै हे सषी आज कुंजभवन में दोऊ सोवत है वृषभानकुमारी कृष्ण हाथन कहै करण ताको पिता सूर्य सुत सुकंठ हित रिक्ष कही नक्षत्र षट सात तेरहैं हस्त हाथ राधा को कृष्ण पै कृष्ण को राधा पै(कृष्ण के) सारंग सुत काजर अंतीरक्ष अधरन में है उन राधा ने उन रंग स्याम ताते हीन नीकन अछन को कियो है यह सुष मधुर श्रवनन में सुन सेस आनंद में भर रहत है यह लीला ब्रह्म सुष कै धोवत यामें मिथ्याधि बसत अलंकार निद्रा संचारी है लच्छन।

दोहा—मिथ्याधिबसत झूठही, कहै जो झूठी रीत।
इंद्री काम न कर सकै, सो निद्रा की भीत ॥ १ ॥६४॥

मेरी कह्यो न मानत राधे। ए अपनो मत समुझत नाहीं कुमत कहां पन नाधे ॥ दधिसुतसुतसत के हितकारी सज सज सेज बिछावै। तापर पौढ चहत है आपन भल बल को समुझावै॥ ग्रह नछत्र अरु बेद अरध करी षात हरष मन बाढो। ताते चहत अमरपन

तन को समुझ समुझ चित काढी ॥ जगप्रिय घटे देष निज नैनन आपुन रंग बनावै । सूर ललित सब बात समुझ को को कहि कहा रिझावै ॥ ६५ ॥

उक्ति सषी की कै तू मेरी कही नाहीं मानत कुमत ने जो प्रण नाधे सो नाहीं समुझत दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको सुत बसिष्ट तिन हित अग्न ताकी सेज बिछाइके अरु तापै पौढ अपनो भल चाहत है सो तोको को समुझावै ग्रह ९ नछत्र २७ वेद ४ सब मिल ४० के अर्द्ध बीस तें बिष षात है अरु आपने तन की अमरता चाहत यह समुझ कें काढी है जग प्रिय जीवन जल सो घट गयो आप आंषिन ते देषत तापर आप रंग सेत पुल बंधावत है ए बातें जो तू ललित समुझावत तो हे बल तौ तोको का सिषावै या पद में ललित अलंकार अमरष संचारी है ताको लच्छन ।

दोहा—ललित कहै कछु चाहिए, ताही को प्रतिबिंब ।
अमरष को कहिये जहां, क्रोध अधिक नादंब ॥१॥६५॥

हौं जल गई जमुना लेन । मदन रिस के आदि ते मिलमिली गुनगन ऐन ॥ कहन लागी कमलपितुपति भगीनि की सब बात । पलक नेक उघार देषत आय सुंदर गात ॥ सुरन सारंग के सम्हारत सरस सारंग नैन । सूरदास प्रहर्षना सहि सुरुच सारंग बैन ॥ ६६ ॥

उक्ति नायका की सषी प्रत हों आज जमुनाजल लेन गई रही मदन समर रिस पीस आदि तें (सषी तव ले मिली) मिल सषी मिली तब कहन

लगी कमल पितु जल नाम कं पति भगनी ननद आदिबरण तें कान ते कान्ह की बात (करन लगी सषी मित) मित्र प्रथम प्रहरषन कान्ह की बात द्वितिय पलक उघारों तौ सामुहे आवत में तृतिय सारंग राग के सुर उचारण लगे अथवा सारंग सूर्य नाम मित्र राग ललित आदि वरण तें मिल हम तुम मिले सारंग मृगनैनी हरष भरो सारंग वैन हो पिक बैन जलदी मिलो यामे ओतसुक संचारी लक्षन।

दोहा—तीन प्रहर्षण जतनते, बांछित फल जहँ होइ।
बांछित हूं ते अधिक फल, दूजो कहिये सोइ ॥ १ ॥
स्रम बिनु कारज सिद्ध सो, तीजो कहि कवि लोइ।
डील सकेना सहि सुतो, औतसुक सुष भोइ ॥२॥६६॥

हौं अलि केतने जतन बिचारों। वह मूरत वाके उर अंतर बसी कौन बिध टारो॥ जब हौं कहौं लाज की बातें तब अति व्याकुल होई। चंद चौथ निकसत सो मोको जान परत बल सोई॥ सुरभीतमजासुतपित नाहीं चलत हार चित हेरों। अपसमार जहँ सूर समारत बहु बिषाद उर पेरों॥ ६७ ॥

उक्ति सषी की सषी प्रति (कै हे सषी वाको मैं कैसे समझावों कौन जतन बिचारों वाके उर में जो कान्ह की मूरत बसी सो कैसे टारों जब लाज की बात हों कहत तब बहुत ब्याकुल होत) चंद ते (ऊंचो) चौथ वृहस्पत कहे (नाम जीव निकसत जान परत है) जीव सुरभी गौ तम मिलि गौतम भयो ताकी जा अंजनी सुत केसरीकिसोर पिता पवन अर्थात् वाके मुष ते स्वास नाहीं चलत अपसमारोग ते यह बिषाद अलंकार है अपसमार संचारी बिषाद अलंकार लच्छन।

दोहा—अपसमार जो मूरछा, कहत सबै कवि लोइ ।
सो बिषाद चित चाह ते, उलटो जो कछु होइ ॥ १ ॥६७॥

सोवत थी मैं सजनी आज । तब लग सुपन एक यह देषो कहत अचंभो साज ॥ सिवभूषनरिपुभषसुत बैरी पित अरि केर सुभाव । आइ गई जहँ सुतसुत बैठो हँसत बढायो चाव ॥ हौं चाहे तासो सब सीषव रसबस रिझबो कान । जागि उठी सुन सूरस्याम संग का उल्लास बषान ॥ ६८ ॥

उक्ति सषी से नायका की (कै हे सषी मैं आज सोवत रही तहां एक अचंभे को सुप्न देषो) शिवभूषन चंद रिपु राहु भष सूर्य सुत करण रिपु अर्जुन पिता इंद्र अरि बलि सुभाव सषी एक सषी आई जहां सुतसुत नंदनंदन बैठे रहे तासो मैं सब (रस की बात) सीषवे चाही तब लग जाग उठी इहां स्वप्नबोध संचारी उल्लास अलंकार है लच्छन ।

दोहा—सपनो कहिए सोइबो, बोध जागबो होइ ।
गुन औगुन जहं और को, है उल्लास सजोइ ॥ १ ॥६८॥

ऊधो तब ते अब अति नीको । लागत हमै स्याम सुंदर बिनु नाहिन बृज अति फीको ॥ बायस सब्द अजा को मिलवन कीनो काम अनूप । सब दिन

राषत नीकन आगे सुंदर स्याम सरूप ॥ दोइ जनम को राजा बैरी का बिघ आप बनावै। करत अनूग्या भूषन मो को सूरस्याम चित आवै ॥ ६९ ॥

उक्ति गोपी की ऊधो प्रत (कै हे ऊधो तब तें अब बहुत नीको है हम कों स्यामसुन्दर बिन बृज फीको नाहीं लागत) बायस शब्द का अजा को शब्द में मिलि कामै अर्थ काम ने बहुत नीक काम कियो है कै नीकन कहे अच्छन को पास उन को राषत है दोइ जनम राजा चंद का बिध बनावत है सूर स्याम बिन अनुग्या अलंकार होत है उग्रता संचारी लच्छन।

दोहा—होइ अनुग्या दोष में, जो लीजै गुन मान।
जागि निंदन समर्थ ते, कहो उग्रता जान ॥ १ ॥६९॥

बालम कौन सीषो बान। सुतन मो कों सकुच आवत सुनत उन की ठान ॥ देष भाजन होत कबहूं कहूं दीप समान। संभुसुतभूषन बतावत बदन आप प्रमान॥ रंग बद के सदृस सब दिन करत नीकन जान। अंतरिछन सिंधु सुत से कहत का अनुमान ॥ राहु भष के बंधु से है तब कपोल सुभान। कहत सारंग बैन सुलगत हृदय सुन सुन तान ॥ रहत है जहां जीव इतनी समुझ इन

कों आन । सूर प्रभु की बांसुरी में लेत भूषन कान ॥ ७० ॥

उक्ति सषी प्रत नाइका की कै हे सषी बालम ने कौन बान सीषी है सुतन कै हे निज तन में मोकों सकुच आवत हैं उनकी कहे बांकी ठान (तें देष) सुनत भाजन नाम घट दीप सम (समान लोकोक्ति घट बढ़ घट बढ़) संभुसुत गणेश भूषन चंद (ससी होत) सम (समान मेरो) बदन (बतावत हैं) रंग बद कुरंग (मृग के सदृश बतावत है) सम नीकन कहे अच्छन अंतरिछ अधर सिंधु सुत सुधासम (कहत हैं) राहु भष चंद बंधु संष सम (से) कपोल कहत हैं सारंग कोकिल सम (से) बैन (बचन) कहत है सो सुन सुन (मेरो) तान हृदय सुलगत है अरु जीवत हों यह जान को इतनी समुझ तौ आई सूर प्रभु की बांसुरी में लेस अलंकार उग्रता संचारी ताकौ लच्छन ।

दोहा—गुनह दोस है दोस गुन, लेस कहै कबि राइ ।
जग निंदन समरथ चित, सो उग्रता गनाइ ॥ १ ॥७०॥

कत मो सुमन सो लपटात। समुझ मधुकर परत नाहीं मोहि तोरी बात ॥ हेमजूही है न जा संग रहे दिन पस्यात । कुमुदनी संग जाहु कर के केसरी को गात ॥ सेवती संतापदाता तुमै सब दिन होत । केतकी के अंग संगी रंग बदलत जोत ॥ हों भई कस हाइ समुझत बिरह पीर पहार । सूर के प्रन करत मुद्रा कौन बिबिध बिचार ॥७१॥

उक्ति नाइका की नायक प्रति हे भ्रमर मो सुमन मोगरा सो का

लपटात हो अर्थ भ्रमर मै मोगरा नायक मे मेरो कंठ हेम कहे सोनजुही नाहीं है (नाइक सो जो तुम हीय में राष सो मैं नाहीं हैं) जा संग दिन बीतै रात में रहे कुमुदनी कमोदनी संग जाहु नायक जाकों कुमुद चढो ताको संग जाहु नायक ता केसरी को रंग करो सेवती तुम को संतापदेनहारी हैं नायक पच्छ सेवा करणहार ती सुकिया तुमै ताप दाता है केतकी के अंग संगी हो नायक केतिकन के तुम अंग संग रहत (रहे) ताते तुम्हार जोत बदलत है कुस होइ गई है (है) हाइ सिगुझ के बिरह पीर पहार देष कें सूर के प्रभु कौन मुद्रा कर रहे हैं देषो या पद में कुस तातें रोग संचारी लच्छन। तनगद ब्याधा कहाई अरु रंग बदले ते जान गई ताते ज्ञाब अरु मरन नाहीं केहू कबि ने बरनौ कुमुदनी दिन में मुदित होत यामें याही ते परकिया मरण चेष्टा जताई मुद्रा अलंकार लच्छन।

दोहा—मुद्रा प्रस्तुत पद बिषै, औरे अर्थ प्रकास।

ठाढी जलजासुत कर लीने। दधि सुत सुत बाहन हित सजनी भष बिचार बित दीने॥ को जानै केहि कारन प्यारी सो लष तुरत उठानें। चपला औ बराह रस आषर आद देष झपटानें॥ तदगुन देष सबै मिल सजनी मनही मन मुसुकानी। सूरस्याम को लगी बोलावन आपु सयानप मानी॥ ७२॥

उक्ति अग्यातजोबना की (कै) हे सषी आज में जलजा सीप सुत मुक्ता कर में लीन्हे ठाढी रही दधिसुत कमल ताको सुत ब्रह्मा ताको बाहन हंस (ताको) भष बिचार कै को जानै कौन कारण सो देष उठि गयो चपला बाराह कोल रस आद बरन ते चकोर देषतहु झपटत अर्थ सहाय के रंग ते मोती लाल होय गयो (तामें हंस अंगार जान चुको गयो) चकोर चुनबे को आयो

यह तदगुन अलंकार देष है सजनी सब सषी मुसकानी अरु सूरस्याम को बुलावन लगी मेरी कही न मानी इहां तदगुन अलंकार हांसरस है लच्छन।

दोहा—तदगुन तजगुण आपनो, संगत को गुन लेइ।
हांस बिंग ते हांसरस, कहत सबै मिलि सेइ ॥१॥७२॥

कूदो कालीदह में कान। रोवत चली जसोदा मैया सुनत ग्वाल मुष हान॥ छूटे दिन दुआर के बैरी लटकत सो न सम्हारे। सूरजसुतरिपुसुत जे आदिक गिरत कौन तनधारे॥ अंग संग बिरहानल संग ते महास्याम सो भासै। बानरमित्र बैद सुत बातें सुनत रंग परगासै॥ समुझावत सब पाछिल बातें तनक न मन में आवै। सूरस्याम सुत सुरत सम्हारत कालीदह कों धावै॥७३॥

उक्ति सषी की सषी प्रति (कै हे सषी आज कान कालीदह में गिरो है सुन के जसोदा रोवत चली) छूटे हैं दिन कहे (नाम) वार दरवाज़े के बैरी पट लटकत सम्हार नाहीं सकत सूर्यसुत सुकंठ बैरी वाली सुत अंगद नाम भूषन जे छूटत ते को संभारे अंग अंग बिरहा की आग (अग्नि) ते कारो होत है बानर मित्र रिछ नाम नछत्र चौथो रोहिनी सुत (पुत्र) बलिभद्र तिनकी बात सुनत के फेर प्रकासत है यामें पूरब रूप पहिलो अरु पाछली बातें सब बतावत हैं की इन गिरधारी अग्निपान करे सो तिन को कछू न होंहिगे सो सुन नाहीं मानत कालीदह मो गिरो चाहत है यामें दूसरो पूरब रूप करुना रस लक्षण।

दोहा—पूर्ब रूप लै संग गुन, तजि फिर अपनो लेत।

दूजो जो गुन ना मिटत, किंये मिटन के हेत ॥१॥७३॥
दुषी देषिये पित्र को, म्रतक स्राप जुत बंध ।

आज रन कोपो भीम कुमार। कहत सबै समुझाय सुनो सुत धरम आदि चित चार ॥ आदि रसाल जगफल के सुत जे बांधे अभिमान। सूरजसुत के लोक पठावत से सब करत नहान ॥ दसन राज जो महारथी सो आवत अग्र अनूप। सहित सैन सुत संग सिधारत सो सब सजे सरूप ॥ तंतपुत्र की हे का गनती जो सनमुष भट आवै। सुमन लोक तो अब या बेला भँवर संग उड जावै ॥ बैठे जदिप जुदिष्टर सामे सुनत सिपाई बात। भयो अतदगुन सूर सरस बढ बली बीर बिष्यात ॥७४॥

उक्ति संजै की धृतराष्ट्र प्रति कै आजु भीम कुमार जो घटोतकच सो कोपो है सब को सुनाय कहत है कै धरमपुत्र आदि सब बीर (सूर) सुनो रसाल नाम अंब जग्यफल धरम आदिवरण ते अंध भयो ताके जे पुत्र हैं अभिमान से बंधे तिन को सूर्य्य सुत जम के लोक पठावत हो दसन नाम दुजराज जो द्रोन है महारथी अरु आगे आवत है तिन को पुत्र सैन समेत तेई तहां जैहैं तंतु कहे सूत पुत्र जो करन है ताकी का गनती है जो सनमुष हमारे आइहैं तो सुमन देवलोक को यही बेला में भँवर सिलीमुष नाम

वाण संग जदपि जुदिष्टिर सत्तवक्ता सामुहे हैं अरु सिषाई बात सुनत तदपि अतदगुण अलंकार होइ रहे है रौद्र रस लच्छन ।

दोहा—संगति गुन लागै नहीं, तहां अतदगुन होइ ।
थाई क्रोध बिचार तौ, रौद्र कहै कबि लोइ ॥ १ ॥७४॥

देषत सजो पंडकुमार । भयो सन्मुष पितामहि गहि धनुस औ सरधार ॥ लगे फरकन अंतरिछ अनूप नीतन रंग । रिच्छ फरकत तेरहो कत सत्रु को सब संग ॥ बीत तनत कुबेर को पुन भान थान समान । तदिप सैनापति निहारत बढो धर्म प्रमान ॥ चलो रथ ले जितै आवत भीम आदिक सूर । सूर प्रभु को देषि अदभुत भयो है रन रूर ॥७५॥

उक्ति संजय की आजु पंडुकुमार सजे देष कें पितामही भिष्म सनमुष भयो धनुष बान लैकै अंतरिछ अधर फरकन लगे (नीतन नयनन में अनूप रंग आयो तेरहै रिछ हस्त सो फरकन लगो) सत्रु की सेन तक के कुबेर को बित्त धनु तनन लगे भान नाम सारंग सारंग नाम भँवर भँवर नाम सिलीमुष बान को थान तनन लग्यो तदिप सैनापति जो धृतराष्ट्रदुमन है ताके संग जो सिषंडी ताको देष धरम सम्हारो जित भीम आदिक सूर आवत थे तित चलो सूर के प्रभु कृष्ण को देष और अदभुत भयो इहां बीररस॥१॥७५॥

सुन सुन नंदनंदन की रीत । भूपत कांस परो धरनीतल छाडि आपनी नीत ॥

द्वारधार नीतन ते डारत हारत सब सुष हेर। बार बार झाकत जल अपनो सोवत झझकत फेर ॥ रबि पंचम पल होत नहीं थिर थकित भयो सब गात। धवल बसन मिल रहे अंग में सूर न जानो जात ॥ ७६ ॥

भक्ति पुरबासिन की कै नंदनंदन की रीत सुनकर कंस राजा अपना क्रूरता छोड धरनी पर परो है द्वार नाम बार अरु बार नाम जल की धार नीतन नाम नैनन ते छांडत है अपने सुष हेर हारत है बारबार जल कहे द्वार अपनो झांकत है (अरु सावत में झझकत है) रबि ते पंचम बृहस्पत नाम जीव थिर नाहीं होत गात थकित भयो है सुपेत ह्वै गयो है जामे कपडा जो पहिरे सो नाहीं जानो जात या पद में मीलित अलंकार भयानक रस है लच्छन।

दोहा—मीलित जहां सादृस तें, भेद न जानो जात।
होत भयानक बिंग भय, ते सब जग बिष्यात ॥ १ ॥७६॥

जोर उतपल आदि उर तें निकस आयो कान। बीच निस को आदि अंगन लगो लेप समान ॥ बेदपाठी द्रगन सोई रीत के बहु छोट। रहे बिचबिच समुझ मोको पर नाहीं डोट ॥ बांसुरी तें जान मोको परो ना सुत सोइ। सूर उन मीलत निहारो कहें का मति भोइ ॥७७॥

उक्ति सषी की (कै) आजु जोर नाम बल उतपल कमल आदि बरन तें बक भयो ताके उर तें कान्ह निकस आयो बीच मधि (मद्ध) निस जामिनी आदि बरन तें मजा भयो सो अंग मों लगो है लेप सो वेदपाठी नाम स्रोत्री द्रग नाम नयन सोई रीत नाम प्रथम की रीत ते स्रोन रुधिर के छीटी (छींटा) बहुत लगे हैं ताते मोकों नाहीं समुझ परे वे डीठ बांसुरी के बजाये जान पाय के वा के पुत्र नाहीं है या पद में बिभस्त रस उनमीलत अलंकार है लच्छन ॥

दोहा—ग्लान बिंग ते जानिये, है बीभस्त सरूप ।
उनमीलत साद्रस तें, भेद फुरै कबि भूप ॥१॥७७॥

आज चरित नंदनँदन सजनी देष। कीनों दधिसुतसुत से सजनी सुंदर स्याम सुभेष ॥ सारंग पलट पलट कबि दोई लै गौ आप चुराय। सोई सब के घर घर आई जस के तस सुष पाय ॥ को यह कौतुक करै और सुन समुझ आप निज बात। सूरदास सामान्य करन को येही बलित लषात ॥ ७८ ॥

उक्त सषी की (के) हे सषी आज नंदनंदन को चरित देष हे सजनी दधिसुत कमल सुत ब्रह्मा सो जो कीनो है सारंग पछी लवा ताको पलटे तें बाल अरु छव पलटे तें बछ अर्थ बाल बक्ष दोऊ चुराय लैगयो सो घर घर जस के तस आये यह तमासो ओर को करै (और को कर सकत) या बात समान्य करने को यही है या पद में सामान्य अलंकार अदभुत रस है लक्षन ।

दोहा—जो साद्रस सामान ते, भेद फुरै तव मान ।
अचरज बिंग प्रधान तें, अदभुत रस पहिचान ॥ १ ॥७८॥

जसुमत आज बैठ के आगन अपनो लाल षेलावै। चूम चूम मुष चपल चित करि आनन आप मिलावै॥ सारंगसुत प्रीतम सुत रिपु रिपु रिपु रिपु माल बनावै। पिंडप्रधान भूमपति सुत गुर भाषित सरस सुनावै। भूषन पति भष जा पति बाहन हित बिचार चित गावै॥ धनहरि हित रिपु सुत सुष पूरत नैनन मद्ध लगावै। धौरी धूमर काजर कारी कहि कहि नाम बुलावै॥ लालन कर उत पल के कारन सांझ समै चित लावै। सूरज कर बिसेष आलंकृत सब सुष सान तुलावै॥ ७९॥

उक्ति सषी की सषी प्रति (जसुमत आज अपने लाल कों षिलावत है मुष चूमत है चित चपल कर कें मुष मिलाव तवे) सारंग समुद्र सुत कमल प्रीतम सूर्यसुत सुकंठ रिपु बालि रिपु राम रिपु दसानन रिपु देव नाम सुमन की माला बनावत है पिंड प्रधान भूम कहे गया पति विष्णु सुत लवकुश गुर बालमीक (तिनकी) भाषित रामकथा सुनावत है भूषनमुद्रापति अगस्त भष समुद्र सुता कुमादिन पति चंद बाहन मृग हित राग गावत है धनहर चोर हित अंधकार रिपु दीप सुत काजर नैनन में लगावत हैं धौरी (धूमर काजर एगौ के नाम हैं तिन को बुलावत हैं) आदिक गैया के नाम कहि बुलावत

पुत्र के कर अरु कमल जुदे करिबे कों सांच चाहत है अर्थ वै मुदित होते हैं या पद में सूर ने बिसेष अलंकार पुत्ररति भाव धुन करि है लच्छन।

दोहा—यहे बिसेष बिसेष जो, समुझे समता पाइ।
पुत्र बिषे रति होइ तो, भाव धुन ठहराइ ॥ १ ॥७९॥

आज गिर पूजन ग्वाल चले। लै लै सिंधु संभुसुत अति प्रिय पावन मांठ भरे॥ नगर नीक औ काम बीच ते गोग्रह अंत भरे। निकट बास परबत दाडिम जुत सोई रीत धरे॥ नाचत गावत बाजत बाजन जाचत पुन्य प्रभाव। नंद आदि संग अति सुषपावत भावत जो जेहि लाव॥ गूढोत्तर अस कहत ग्वालनी मोहि गेह रषवारी। राष गये सुन सूरस्याम मन बिहँस रहे गिर-धारी॥ ८०॥

उक्ति कवि की (कै) आजु गिर गोबरधन (है ताके) पूजन (हेत) ग्वाल चले (लैलै कें) सिंधु नाम दधि संभुसुत गणेश को प्रिय दूब अथवा मोदक माट (तामे) भरि के नगर नाम सहर नीक रस काम मदन मद्ध ते निकारे हरद भई गो ग्रह नाम बथान अंत नाम मरन मद्ध ते थार सो थार (भरे हरद ते थार भरे) मे हरद भरे निकट वास परोसी परबत नाम अचल दाडिम नाम अनार सोई रीत अर्थ मद्ध (की) ते रोचना भयो सो लैलै कर गावत है नाचत हैं गावत बाजन बजावत हैं अपने पुन के प्रभाव जाचत हैं नंदादिक संग

बहुत सुष पावत हैं जेहि को लाभ है सो यह देष कृष्ण बूझत है सो ग्वालिन तू काहे न गई तानें गूढोत्तर ग्वालन दयो कै मोहि अकेली घर राषन हेत छाड गयो सो सुनि बिहारी रहि गये या पद में गूढोत्तर अलंकार देवरत भावाधुन है लच्छन ।

दोहा—गूढोत्तर कछु भाव ते, उत्तर दीनो सोइ ।
भावाधुन सो देवरत, देव बिषै रति भोइ ॥ १ ॥८०॥

बिप्र जो पावन पुन्य हमारे । जो जजमान जानि कछ मो कह आपु इहाँ पगु धारे ॥ एक बार जो प्रथम सुनाई लगनकुंडली सोई । पुनहीं मोहि सुनावहु सुन कर कहन लगे सुष भोई ॥ संवत मास पष्ट बसु तिथि है रबि तें चौथो बार । पुन्न पछ औ बेद नषत है हरषन जोग उदार ॥ दुती लगन में है सिवभूषन सो तन को सुषकारी । केहरि बेद रास चै सूरत सेस भार सब लैहै । बान ससी सुत है पुत्री के मदन बहुत उपजैहै ॥ सास्त्र सुक्र तुल के रबि सुत ते बैरी हरता जोग । मुनि बस तिय बस करै भूमिसुत भागवान में

भोग ॥ लाभ थान पंचमो कामधुज ग्रह निध ग्रह में आई। मान लेहु मन अपने भू सब हरो भार दून भाई॥ बान बर्ष मैं कब देषैगो कही तिहारी पूरी। सूरदास दोउं परे पाइतर भूषन चित्र सम्ूरी ॥ ८१ ॥

उक्त कवि की हे बिप्र जू हमारे बड़े पुन्य हैं जो जजमान जान आपु इहां आये एक वार जो लगनकुंडली मोको तुम सुनाई रही सो फेर सुनावहु सो सुन रिष कहन लगे संवत ते छठये मास भादों आठों तिथि है रवि ते चौथ बुध वार पुन्न पक्ष कृष्ण पक्ष वेद कहे चौथो नक्षत्र है रोहनी हरषन नाम जोग उदार है द्रुतीय वृष को सिव भूषन चंद है सो तन को सुषकारी (सुषकरता) है केहरि कहे सिंघ (सिंह) रास के सूर्य है सेस भार भूमि जीति (लैहैं) बान नाम पंचम पुत्री कन्या के ससी सुत बुध है ताते मदन को नाम आत्मभू नाम पुत्र बहुत उपराजीहै (उपजाइहैं) सास्त्र कहे छठयें तोलत नाम तुला के रवि सुत सनि सुक्र यह जोग सत्रुहन है मुनि कहे सातयें वसु नाम आठवें ग्रह राहु ताते तिया बस ह्वैहैं अरु भाग भवन में भूमिसुत मंगल है तातें ऐश्वर्य भोग करे हैं लाभ थान में पंचमें वृहस्पत सो कामधुज मीन के है सो ग्रह निध नवे निध घर आई हैं सो यह जानो कै इन भूमिभार हरो वान कौन बरस में ह्वैहै यह प्रश्न नंद की सो न पंडित कही तिहारी कही सत्य है कि पांचई बरस में यह सुन नंद जसोदा पाइ (पै) परे या पद में बिचित्र अलंकार रिषरत भाव धुन है लच्छन।

दोहा—चित्र प्रश्न उत्तर दयो, एक सब्द में होइ।
रिषि रत ते रत भावधुन, कहत सबै कबि लोइ ॥१॥८१॥

आवत थी वृषभाननंदनी आजु सषी के संग। ग्रह अष्टम में मिलो नंदसुत

अंग अनंग उमंग ॥ करी छुआइ दई माथे उन इन लष सो पुनि कीनो। कुंती सुत पितु सन्मुष घर कर लाइ हिये में लीनो ॥ सूछम तें दुइ भाव एक कर ह्वै रहे बाल अधीर ॥ सूरस्याम देषत अन देषत बनत न एको बीर ॥ ८२ ॥

(उक्त सषी की सषी प्रत कै हे सषी आजु वृषभाननंदनी सषिन के संग आवत रही) ग्रह अष्टम राहु में (नंदसुत मिल गयो अंग में अनंग की उमंग भरे सो कृष्ण ने) करी को नाम पुंडरीक सो छुवाइ दयो अर्थ हम तुम को नमसकार करत हैं तब कुंती पुत्र करन पिता सूर्य तिन के सनमुष घर नाम अयन भाषा में लघु दीरघ होत है ताते अयना सूर्य्य के सनमुष करि राधा हृदय सो लगायो अर्थ तुम हमारे हृदय में रहो अथवा दिन मुंदे मिलि हैं अथवा सूर्य सिव की संपत है हम को सुछम महीन ते दोहुन के भाव को एक कर के अधीर होइ रही परंत स्याम न देषत बनैन अन-देषत बने है बीर या पद में सूछम अलंकार भाव संधि है लच्छन।

दोहा—सूछुम पर आश्रय समुझ, करै क्रिया कछु भाव।
दो भावन की संधि ते, भावसिंधु गुन गाव ॥१॥८२॥

हरि को अंतरिछ जब देषो। दिग्गज सहित अनूप राधिका उर तब धीरज लेषो ॥ बहुत श्रेय पुन कुंत अग्र में नीतन सो रंग सारो। रेसम छद उर मूरष माला पछिन पीठ समारो ॥ मासन में सिंगार रस सोभित तव मन जुक्त

बनाई ॥ लै निषेद दरस निज कर ते सनमुष दयो दिषाई ॥ सुछ बसन नय उर के रस सें मिले लाल मुष पोछो । सूरस्याम तन चितैं फेर मुष पिहित भाव बल मोछो ॥ ८३ ॥

उक्ति सषी की (कै) हे सषी हरि को अंतरिछ नाम अधर जब देषो (दिगज सहित) दिगज नाम अंजन सहित तब राधिका ने अपने हृदय में धीरज धरो बहुत श्रेय नाम महावर कुंत नाम भाला अग्र भाल अर्थ महावर भाल में नीतन नाम नयन में (सोई) महावर रंग अरुन रेसम करी नष ताको छद उर में मूरष निरगुनी माला पछिन ते कंकन पीठ मासन पलन में सिंगाररस पान कर (को) संसोहत है तब यह जुगत बनाई निषेद आकर दरस ते दरस दोइ मिल आदर्सनाम दरपन दिषायो सुछ सपेद बसन नय नदी उर रस जल अर्थ पानी सो भिजाई कपरा लाल को मुष पोंछो स्याम ओर चितै कै मुष फेर पिहित अलंकार भाव सबलता देषाई लच्छन ।

दोहा—पिहित छिपी पर बात कों, आप जनावै भाव ।
बहुत भाव ते होत हैं, भाव सबलता ताव ॥१॥८३॥

यह सामरी सषी मेरे हित चकवाक पढि आई । जस माता सुच सील जान के सिषवन हेत पठाई ॥ जानत है बुधवंत बेद बसु तसन कहूं सुन पैहै । या संग रहत सदा सुच सजनी सब सुष सोभा पैहै ॥ चेली करत मोहि कहि लीनी अवर न करहों चेली । तुम

गुर होहु और जो सीषै तिन की समुझ सहेली ॥ का सतरात अली बतरावत उतने नाच नचावै। सूरदास तज ब्याज उक्ता सब मोसो कौन चेतावै ॥ ८४ ॥

उक्ति नाइका की सषी प्रति कै हे सषी यह जो सामरी सषी सो मेरे हेत चक्रवाक कोक पढि आई है जस कहें कीरत मैया ने याको पवित्रता अरु सील जान कें मेरे हेत पठवाई है जानत है बुधिवंत वेद चार बसु आठ बरन बिपरीत गत ते चौरासी आसन जैसी यह जानत है तैसी कहूं न सुने (सुनी) है अरु जाके संग रहे ते हैं सजमी बहुत सुषपैहै परंत जब मोकों याने चेली करी तब यह कहि लई और कों हों चेली न करिहैं और जो तुम्हारे संग की सहेली हैं तिन को तुम गुर होइ कै सिषायौ सो तू सतरावत बतरावत कहा है इत उत नैन का नचावत है ब्याज उक्त तज मोसो कहनी होइ सो कहु या पद में सतरावत बतरावत नैन नचावत तें भाव सबलता ब्याजोक्त अलंकार लच्छन ।

चौपाई–औरहि निज आकार दुरावै। ब्याज उक्ति तहां सुकवि बतावै ॥ ८४ ॥

हरिग्रह जा पति पतिनी सहेली । हयभूषन कीनो ना तातें जैहै काल अकेली ॥ तिरसकार भासा में जाते लागत है भै भारी । कासों कहो सुनै को सजनी परी बिपत्त महारी ॥ पग रिपु ता मह परत गजल कै को तन तें सूरझावै । उक्तागूढ तें भाव उदै सब सूरज स्याम सुनावै ॥ ८५ ॥

उक्ति नायका का सषी सें (कै हे काल) हरिग्रह परबत जा पारवती पति शिव पतनी गंगा सहेली जमुना हयभूषन पूजी में पूजी नाही है तातें अकेली काल जैहे तिरसकार भासा जामिनी भासा रात्री में जात (जैहे ताते) भय लागत है सो कासों कहों को सुनै बडी बिपत परी है पगरिपु कंटक तामें गज कहे करील के मिल भये सो तन ते को सरूझैहै (जहं गूढ़ उक्ति तें भाव को जो उदय है सो स्याम को समुझायो यामें गूढ़ोक्ति उदय) यह गूढउक्त अलंकार भाव उदै होत है लच्छन।

दोहा—गूढ उक्त कछु भाव तें, उत्तर दीनो जान।
भाव उघारे ते कहै, भाव उदय सुष मान ॥१॥८५॥

सिंधव झष आराम मधि तें आज हेरायो स्याम। हेरो सारंग मदनतिया के अंत बिचारो बाम॥ पति माता औ मीन आदि दै ह्वै गयो समुझो चित्त। बयरोचनसुत को सुभाव संग देषि परत ना मित्त॥ इंद्रसहाय उठे चारो दिस लये सहेली साथ। यह बिपत्त में राषनहारो कौन हमारो नाथ॥ तातें बिनै करति नंदनंदन चलो हमारो संग। बिप्र उक्त सुन सूरस्याम को घट गौ बिरह प्रसंग॥ ८६॥

उक्त नाइका की नायक प्रति सिंधव नाम लवन झष नाम मछरी औ आराम याके मध के बरन निकारत (निकारो तो) बछरा होत है अर्थ हमारो बछरा हेराय गयो है हेरो नाम लषो सारंग नाम पछी बाज मदन

पतनी रति अंत के वरण ते षोजत (अंत के वर्णन पायो अर्थ हों सो) भयो अर्थ बछरा षोजत हैं पतिमाता सासु मीन झष आदि बरन ते सांझ ह्वै गयो (भई तुम) चित्त में समुझो वयरोचनसुत (पुत्र) वलि सुभाव सषी संग में नाहीं है (देष परत) इंद्रसहाय मेघ चारों दिसा में उठे हैं सहेली कहे दामिन संग में लिये हैं यह विपत्त (विपदा) में राषनहारो हमारो नाथ और कोई नाहीं तातें बिनय करत हैं हमारे संग चलो यह उक्त सुन स्याम को जो बिरह रहो सो बुझाइ गयो ताते भाव ताते बिम्र उक्त अलंकार है लक्षण।

दोहा—असलेष छपो परगट करै, बिम्र उक्त है छेम।
भाव सांत ते होत है, भाव सांत कर नेम ॥ १ ॥८६॥

करि बिपरीत भवन में धारा। बैठी हती अकेली सुंदर लिषत रूप सुत सुत सुत मारा॥ दधिसुत अरि भष सुत सुभाव चल तहां उताइल आई। देष ताहि सुर लिष कुवेर को बित्त तुरंत समुझाई॥ करत बिंगते बिंग दूसरी जुक्त अलंकृत मांही। सूर देष ग्वालिन की बातें को कस समुझे तहांही॥ ८७॥

उक्त कविकी धारा बिपरीत (करें) तें राधा अकेली मंदिरमें बैठि सुत (कहीं नंद तिन के सुत कृष्ण) सुत नंदनंदन तिन की तसवीर लिषत रही (तब लों) दधिसुत चंद रिपु राहु भष सूर्य सुत करण सुभाव सषी तहां गई ताके देख सुर कही सुमन कुबेर वित्त धनु अर्थ फूल धनुष तामें लिष दयो है काम की तसबीर लिषत रहा यामें बिंग सषी की तू नंदनंदन की आसक्त भई दूसरी राधा जहँ दिपाई कै है काम की तसवीर लिषत रही अरु तोपै काम धनु लीनो तब आन को लगवत युक्ति अलंकार।

चौपाई—करम करत जहँ क्रिया छपाई। जुक्त अलंकृत तहँ ठहराई ॥१॥८७॥

माधो कीजिये बिश्राम। उदौ चाहत लेन बैरी करन पितु हितु जाम ॥ षुलो चाहत सरन सारंग देत सारंग दान। सुरा सेवन करन लागे बिप्र लष सुष हान॥ निसाचररिपु हीन ह्वैहै गये घर सब कोइ। बिष्णुवाहन सैन दस दिस लगे बोलन सोइ॥ आइगे नँदलाल संगी देषिये नँदलाल। मोल की बिधु कीजिये उर बिन गुनन की माल॥ आप के गुन कहन कारन आपही के नेक। सूर डौंडी देत सिर पर लोक उक्त अनेक ॥ ८८ ॥

उक्त नाइका की नाइक प्रति माधो यामें गाली संयुक्त है तुम माता के पति हौ अरु उदो करण पिता सूर्य करो चाहत है सरन में सारंग जो कमल है ते सारंग सुगंध दान देन चाहत है षुल के सुरा वारुनी पच्छिम दिस ताको सेवन द्विजराज चंद करण लागो है सुष की हान देष के निसाचर राकस बैरी रिछ तारे छव ते हीन होइ घर गये विष्णुवाहन गरुड सैना पछी बोलन लगे (हे) नंदलाल आप आये दलाल न लाये यह जो बिन गुन की उर में माला है ताको मोला कैसे होइ (होंहि) अरु आप के जो गुन है तिन को गुन तो आपही के नैन कहत है डौंडी दै दै को यह लोक उक्त समुझो लोकोक्त अलंकार बोधा विषै बिंग है।

चौपाई—लोक कहावते जामें होई। लोक उक्ति जानो कवि लोई ॥१॥८८॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने मूल में नेक के स्थान पर नैन और अनेकन के स्थान पर ऐन लिखा है।

मानिन बार बसन उघार। संभु कोप दुआर आयो आद को तनु मार ॥ नागजापतिपितापुर को जाहु कहत न बेग। गेह हग औ रंग झष सुन रीत ताही नेग ॥ कहहु करहि सहाई सुरपति चढन ब्रज पर फेर। सूरउक्तौ वक्र कर कर रही नीचें हेर ॥ ८८ ॥

उक्त सषी की है माननी संभु नाम हर कोप नाम रीस आदि वरण ते हरि भयो तेरे दरवाजे ठाढे सो तू वार पट केवार षोल तब नाइका हरी शब्द वक्रउक्त ते बानर कहत है केकहु नागजा सुलोचना पति मेघनाद पिता रावण पुर को जाहु तब सषी कहत है के गेह (ग्रह) कहे घर हग नयन रंग स्याम झष मछरी ताहि रीत ते आदि वरन (लेहु तो) ते घनस्याम आये हैं तब नाइका कहै इंद्र की सहाइ करै ब्रज पर फेर चढो है या पद में वक्रोति अलंकार है लक्षण।

दोहा—वक्र उक्ति स्लेष ते, अर्थ सु दीजै फेर ॥ १ ॥ ८९ ॥

सजनी तोकों सब समुझावै। जाको लाज तनक ना तन में मन में सो न सकावै ॥ सुनं तीन पाछिल सुद ताको प्रथम आपनी छोडै। भूधर समर आदिती तोई सुनत करत तन पोडै ॥ दानव प्रिया सर चालीसो सुरभी रस गुड

सीचो। तजत न स्वाद आपने तन को जो बिध दीनो नीचो॥ छेकउक्त जहँ दुमिल समज्ञ के का समुझावत नीठो। मिसिरी सूरन भावत घर की चोरी को गुड मीठो॥ ६०॥

उक्त नाइका की सषी सो कहि नाइक को सुनावत है कै हे सजनी तोको को(ताको सब समुझाओ)समझावै परंतु जाके तन में लाज नाहीं सो मन तें नाहीं संक मानत है सुन दै तीन लिषै तो तीस हो पाछिली सुध(सुद)नाम याद आदि बरन ते तीया सो आपनी छोड देत भूधर परबत समर रन आदिती (आद तातें) पर तीय सुनत ताको तन बली होत है दानव कुंभकरण प्रिया नींद(निद्रा) सेर चालीस मन आद बरण ते नीम सुरभी रस गुड घी ते सींचै परंतु अपनी करुवाई जो बिध दई ताको नाहीं छोडत यह छेकोक्त दुमिल कूट है तुम का समुझावती है ताको घर की मिश्री नाहीं भावत जाको चोरी को गुड मीठो लगत है क्षेकोक्ति लक्षण।

चौपाई—लोकोक्ति में जुक्त बनावै। सो छेकोक्ति सूर ठहरावै॥१॥
अरु दो बस्तु मिल एक बस्तु भई ता दुमिल कहावै॥ ६०॥

जलज नीतन हों आज निहारो। मोरन के सुर सरस सम्हारत पय सुरतिया बीच रुच कारे॥ नृतकार उतिम बनाइ बानिक संग चंद न आवै। मास भाग सिर लसत सुरन के देषत झुकझुक जावै॥ सषन ओर बरही सुष कर कर सजनो

फिरफिर झाको । एकाबरन सुभाव उक्ति कर सूर सरस रस वाको ॥ ९१ ॥

उक्ति सषी की नायका प्रति जलज नाम कमल नीतन नयन हे सषी कमल नैन मैने आज देषे है मोर सारंग ताके जे सुर है अर्थ सारंग राग के सुर है पय नाम जल बा सुरतिया सुरी अर्थ-बासुरी में सारंग के सुर समारत रुच करता नृतकार नट उतिम वर अर्थ नटवर बानिक बनाये मास भाग पछ सुर नाम बरही अर्थ मोरपक्ष सिर पै समारते देषत झुकझुक जात ते सषन की ओर बरही नाम मोर अर्थ सषन की ओर मुष मोर मोर के फिर फिर झाकत रहै ॥ १ ॥९१॥

माधौ अस न करबे जोग। जस करी वृषभानुजा की दसा आप बियोग ॥ ससि पावस कपिन के बिच मूंद राषे नैन । सह सिकारी नाग मनसिज सषिन वीर अचैन ॥ जामिनी नौका बिचारत काम संग तन प्रान। चलन सुन के रावरो हो गइ सब विध हान ॥ निमि-ल भाबिक कियो भूषन आप अदभुत आज। सूर चाहत कहा बैठो गेह में तज काज ॥ ९२ ॥

उक्त सषी की नाइक प्रति कै हे माधव ऐसी तिहारी करबे जोग नाहीं जैसी बृषभानजा राधा की दसा आप वियोग सुनाई के करी है ससि नाम सकल पावस नाम बरषा कपि बानर मध्र के बरन ते करण

ताके बीच नेत्र मूंद राषे है सिकारी नाम अहेरी नाग नाम सर्प मनसिज नाम अतन बीच के बरण ते हेरत नाहीं सषिन की ओर अचैन हो रही है हेरत अचैन होत है जामिनी नाम रजनी नौका नाम तरनी काम नाम अतन बीच ते जरत है वाको तन प्राण रावरो मथुरा को चलत सुन सब बिध ते हान हो गई है यहां लिमिल कूट भाविक अलंकार भलो कियो आपनो अद्भुत रूप की तातें है गेह में बैठो सब काज तज को जो होन-हार दसा सो प्रतछ देषाव्रत ताते भाविक भूषन लक्षन।

दोहा—भाविक भूत भविष जो, परछित कहै बनाय ॥ १ ॥९२॥

छपे पतिकत जात षेलत कान मेरे प्रान। अचलजापतिअंगभूषन भार हित हित जान॥ संभुपतनीपिता धारन बक संघारन बीर। नंद नाहिं निकंद कारन बक बिदारन धीर॥ सेस ना कहि सकत सोभा जान जो अतिउक्त। कहै वाचिक वाचते हे कहा सूर अनुक्त ॥ ९३ ॥

छपे नाम गोप पति कत (उक्त जसोदा की कै हे गोपि पत) कहा कान्ह षेलन जात है अचलजापति शिव अंग भूषन सर्प भार पृथ्वी हित इंद्र ताके हित मेघ नाम घनस्याम हे घनस्याम संभुपतिनीपिता गिरं ताको धारन (कर-नहार) हे बक (बकासुर) संघारनहारे बीर नंद नहीं नदना पूतना के निकंदन कारण (करता) अघासुर के बिदारण धीर (तुम्हारी) सेस नहीं सोभा कहि सकत उक्त ते जानत है अथवा अत उक्त अलंकार जाने है बाचिक जो शब्द बाच्य अर्थ हो कहा कहो अनउक्त की या पद में बाचिक के चार भेद अतउक्त अलंकार लच्छन।

दोहा—अत सै सूरापन कहत, है अति उक्त अनूप ॥ १ ॥९३॥

षेली भानुजा के भौन। हौं कहत

बल जाहु बाहेर कहा हित ते गौन ॥ दिन दिनन में लगे मानिक सिया रिपु पितु हेर । लाज मानत रहत निसदिन सकत ना मुष फेर ॥ षचर षेलन हेत आवत आप ते सतकोट । नचत हैं सारंग सुंदर करत सब्द अनेक ॥ सबै ब्रज तव हेत देषन चलो आवत लाल । संभुभूषन बदन बिलसत कंज ते गुहि माल ॥ यह उदात अनूप भूषन दियो सब घर तोर । सूर सब रे लच्छनन जुत सहित सब त्रिन तोर ॥ ९४ ॥

उक्त जसोदा की कृष्ण प्रति कै हे लाल तुम भानुजा जमुना भवन में षेलो है (हैं कहे हौं बलजाहु) काहे हे बलि बाहेर कौन हेत ते गमन करत हौ दिन नाम बार बार नाम दुआर में जो मानिक तेरे लगे हैं ताके सियारिपु जयंत पिता इंद्र हेर के लाज मानत सामुहे नाहीं हेर सकत षचर चंग तेरे हेत ते आवत है आप ते कोटिनकोट सारंग जो भंवरा है ते नृत करत है अरु शब्द करत है भौंरा षिलौना अरु सब ब्रज तेरे देषबे के वास्ते चलो आवत है संभूभूषन चंदबदनी कंज करण ते माल गुदिलि आवत हैं ऐसो उदात अलंकार तेरे घर में है सब लक्षणन जुत तौ पै सुहित सब त्रिन तोरत है यामें संपति की अधिकता ते अरु जमुना में ग्रह असंभव तीर ते अप्रयोजनवती लच्छन षिलौना आप ते नाहीं आवत. आन को गुन लयो ताते उपादान भंवर में लछित चंद मुष में गो निसारोपा कंज में सुधा साधव सान ॥९४॥

दुतीरासदिनपति नाही । जहां

कौन तुम सब मनभाई रोकत मयेन को परछाहीं ॥ येहै हेमपुर अष्टसुरन सुत दिनपतिही को बास। समुझ बूझ के काम कीजिये राष राष उर त्रास ॥ यो प्रतषेद अलंकृत जबहू सुमुषी सरस सुनायो। सूर कहो मुसुकाय प्रानप्रिय मो मन एक गनायो ॥ ८५ ॥

उक्ति रुकुमिनी की कृष्ण प्रति दुतीरास बृष दिनपति भान यह बृषभानपुर नाहीं है जहां तुम मनभावती बातें करी तुम्हारी परछाहीं कोई नाहीं (न) रोक सको यह हेम नाम कुंदनपुर है अष्ट कहे वसु सुर कहे देव है बसुदेव के पुत्र दिनपति सूरमनि को यामें बास है ताते जो काम करत हौ समुझ बूझ के करो उर में त्रास राष के यह जो प्रतषेद अलंकार सुसुषी रुकुमिनि ने कहो तब मुसुवाई कृष्ण कही कै हमारी मत ते जैसो अहीर तैसो बीर या मे दो जागा प्रतषेद बृषभानपुर अहीरन को ग्राम में रुकमिनि दिषायो अरु कृष्ण दोइ लक्षण।

दोहा—सो प्रतिषेद प्रसिद्ध अर्थ निषेद जाइं ॥ १ ॥९८॥

अघहरसोहत सुरन समेत। नीतन ते बिकुरो सारंगसुत कुंत अग्र ते बंदन रेष ॥ बिप्र बिचित्र रेष दधिसुत ग्रह रेसम छूट घन ऊपर आज। पुंडरीक सुतघट गै उर ते बानर पुच्छ सजे बिन साज ॥ दधिसुत दीपत तज मुरझानो

दिनपति सुत है भूषन हीन। यह निरु-क्ता की अवध बाम तू भइ सूर हत सषी नवीन ॥ ९६ ॥

उक्ति नायका की सषी मत कै हे सषी अघहर कहे बेनी सुर नाम सुमन समेत सोहत है तेरे नीतन कहे (जो) नयन (हैं) तिनते बिछुरायो (बिछुर गयो) हे सारंग सुत काजर अरु कुंत अग्र भाल ते तेरो (तातें) बंदन बिप्र नाम द्रुज द्रुज नाम दसन ताकी रेष दधिसुत नाम अमृत ताको घर अधर तामे रेसम नष ताको छद घन नाम पयोधरन में पुंडरीक नाम गज ताको सुत मुक्ता सो उरपै नाहीं है ते बिना साज के हो रहे हैं बानर पुत्र अंगद जो बाजूबंद है (ते बिना साज के हो रहे हैं) दधिसुत कमल अथवा चंद दीपता तज के मुरझाय गयो है दिनपति सूर्य्य सुत करण सो भूषण ते हीन है यह निरुक्त है अरु अवध है हे बाम तू भई सषी कों (हत कें) हम को का सषी के पति सो रमि आई है यामे बाम नाम जो साधारण इस्त्री को है ताको संजोग के जोग ते जोग के जोगता ते टेढ़ी अर्थ साधो ताते निरउक्त अलंकार लक्षण।

दोहा—सो निरउत्त यह जोग ते, अर्थ साधिये फेर ॥ १ ॥९६॥

जब ब्रजचंद चंद मुष लषि है। तब यह बान मान की तेरो अंगन आपु न रषिहै ॥ कुंत अग्र गज औ नीकन में आपुन हीं ते दैहै। पापहरन में देव अनूपम गज की पुत्र समैहै ॥ सुधा ग्रेह में करि को सोभा सारंग रिपु सिस बनैहै। घन ऊपर जलजासुत सोभा सुरुच सांवरी लैहै॥ भूषन बार सुधार तासु रंग

अंग अंगन दीपत ह्वैहै । यह बिध सिद्ध अलंकृत सूरज सब बिध सोभा छैहै ॥९७॥

उक्ति दूती की जब तै ब्रजचंद कै चंद सुष देषि है तब यह जो मान की बान तेगी है सो अंग आप ही ते न राषिहै कुंत अग्र जो भाल है तामें गज नाम सिंदुर दै है अरु नीकन नाम नैनन मों दिग्गज को नाम अंजन सो काजर दै है अरु पापहरन वेनी तामें देव नाम सुमन गजपुत्र नाम मुक्ता बनावैगी सुधा गेह जो अधर है तामें करी नाम नाग पान ताको सोभा सारंग भ्रमर रिपु चंपा सिसकली चंपाकली बनाइहै घन पयोधरन पै जलजा सीप सुत मुक्ता को हार पहिरहै हे सांवरी स्यामा तू यह सब करैगी बार भूषन पहिर (ता) स्याम के रंग के जे पट है ते तू धारन करैगी अंग अंग में दीपति बढावैगी यह विध ते सिद्ध जो भूषन अलंकार है (सो सोभा वानहू है यामें चंद को फेर ब्रजचंद जासो ब्रज सोभा पावत फेर साधो ताते बिध सिद्ध अलंकार है लच्छन ।

दोहा—अलंकार बिध सिद्ध जो, अर्थ साधिए फेर ॥ ९७ ॥

नट देषत वृषभानदुलारी । आनन अमल पोछ सारंगरिपु ते सारंगसुत रेष सम्हारी ॥ दिगज बिंदु बिजे छन बेदन भानु जुगल अनरूप उँज्यारी । सेसलता के पत्र सुधा ग्रह गहत होत सुष अंगन भारी ॥ कंठ लच्छ राषी सुकंठ में बाम अकास प्रकासित न्यारी । राम-दूत दीपत नच्छत्र में पुरी धनद रुचिरचि तमहारी ॥ यह छबि देषि भयो अनंद

अति आपु आपुनै ऊपर वारी ॥ सूरस्याम के हेत अलंकृत कीनौ अमल सुमिल हितकारी ॥ ९८ ॥

उक्ति सषी की सषी प्रति कै आज नट मुकुर दरपन वृषभानदुलारी देषत है सारंगरिपु पट ताते आनन मल पोंछों अरु फेर सारंग दीप सुत काजर ताको रेष सम्हारी गज नाम सिंदुर ताको बिंद दै के बिजे छन जो वेद श्रवन है तिन में भान (तरुन तरोना) तरुना पहिरे सेसलता नागबेलि तेके (ताके) पत्र सुधा ग्रह अधरन में गहत अंग अंग आनंद भयो अरु कंठ श्रीकंठ में पहिरी अरु वाम नाम बेसर अकास नाक में पहिरे रामदूत अंगद जो वाजूबंद है सो नक्षत्र हस्तन में पहिरे धनद कुबेर पुरी लंका (अलका) अलक बहुत रुचिरचत है यह अपनी छवि देषि आप आपुन पै वारन लगी यह जो अलंकार कीने सो स्याम के हेत अमल सुमिल कीनो है यामें छबि बनाइब कारण देष षुसी होत (होब) कारज साथही है ताते प्रथम हेत लच्छन।

दोहा—हेत प्रथम में होत है, कारण कारज जान ॥ ९८ ॥

सजनी होन एक पहिचानो। बाज बोल हेरन दुहीनचल मिलत सुतापति मानो॥ बाहन मातु तासु रस जद्यपि सब ब्रज करत बखानो। मोरे मन एको नहिं आवत करत तिहारो आनो॥ भूषन बसन भवन भरपूरन भूर भँडार भरो सो। सूरस्याम संपत है मेरे और न एको सो सो॥ ९९ ॥

उक्त सषी प्रत जसादो की कै है सजनी मैं एक ही बात नहीं पहि-

चानत बाज नाम तुरंग ताको बोल हींसन हेरन नजर दो दो अंत के बरण ते हीन करे ते तुहीनचल परवत भयो ताकी जा पारवती पति (शिव) वाहन बैल मात गोरस गोरस का सब बषान करत हैं तद्यपि मेरे मन में एक नाहीं आवत है तेरी सपत करि केहत हौं भूषण है बसन घर भंडार जे है मेरे तो एक स्याम संपत है और वस्तु मोको सो सम नाहीं है यह में सम्पत के कारण कृष्ण कारज संपत ता से एकता करी ताते दूसरो हेत लक्षण।

दोहा—कारन कारज ए सभै, बस्तु एक ही संग ॥ १ ॥९९॥

अंगदान बल को दे बैठी। मंदिर आजु आप ने राधा अंतर प्रेम उमेठी॥ दधिसुतधररिपुपिता जानि मन पाछे आयो मोरे। कर भूषन तन हेरन लागी गयो देष मन चोरे॥ सारंग पछ अछ सिर ऊपर मुष सारंग सुष नीके। कट तट पट पियरो नटवर बपु सापें सुष रुष जी के॥ नीकन मे सीतलता व्यापी अंग अंग सियरानी॥ सूर प्रतछ निहारत भूषन सब दुष दुरप दुरानी॥ १०० ॥

उक्त सषी की सषी प्रत कै हे सषी आज बल को अंगदान पीठ देकै राधा बैठी है (रही) अपने मंदिर में राधा प्रेम अंतर को उमेठ कै दधिसुत नाम चंद धर महादेव रिपु काम पिता कृष्ण तब लौं पाछे आये हमारे यह जान कै कर भूषन आरसी ताकी ओर निहारन लगी मन आपन गयो जान कै कैसे देषै सारंग मयूर ताके पछ सिर पै सोहत है अरु मुष सारंग संग ताके सुर

नीके हैं अरु कट पै पीत पट बांधे हैं नटवर बेष बनाये हैं तब नीकन अक्षण में सीतलता व्यापी अरु सब अंग सहरि उठो अर्थ सातुक है (है गयो) याते प्रतक्ष भूषण देष जो दुष को दरप रहो सो छप गयो इहां नेत्र ते प्रतक्ष अलंकार है लक्षण ।

दोहा—सो प्रतक्ष मत इंद्रियन, मिले जे उपजै ज्ञान ॥ १ ॥१००॥

बैठी आजु रही अकेल। आइ गो तब लौं बिहारी रसिक रुच बरबेल ॥ तीन दस कर एक दोऊ आप ही में दौर। पंचको उपमेय लीनो दाव आपुन तौर॥ अंत ते कर हीन माने तीसरो दो बार। दोइ दस कर दियो समुझत भूल सो कै बार॥ सोरहें सो समुझ लागी हसन हरषत भूर । सूरस्याम सुजान जानो परस ही ते पूर ॥ १०१ ॥

उक्त सषी की सषी सों कै हे सषी राधा आजु अकेली बैठी रही तब लों बिहारी रसिक तहां आय गयो त्रिदस नछत्र हस्त दोइ एक कर के आप दौर के पंचमें मृगसरा ताके उपमेय द्रग दाब (दबाइ) लये तब तीसरो नछत्र कृत का अंत कर हीन करे कृत दो वार कृत कृत मानो राधा ने दो दस कहे उत्तर समुझत भुलानो दयो सो तब लग सोरहे कहे विसाषा सषी आई सुन हंसन लगी कै सूरस्याम तो परसते जानो रहे अब कहा कहती यामे परसते प्रतछ अलंकार जानिए ॥ १०१ ॥

सारंगपितसुतधरसुतबाहन आजु

न नेक पुकारो। सिवरिपुतिय जल जुत काहेते नेक न जात निहारो ॥ कलही पतिपितुसुता और रंग कीनो कहा सुनाऊं। बृजबीथिन में जे बृजबासी तिनै देष मुरझाऊं॥ सुरभीसुतसुत सुरभिन औरे हेरत हरष न पूरे। भूसुत सत्रु गेह गुन कासों कहे भरे अति भूरे ॥ चारो ओर व्यास षगपति के झुंड झुंड बहु आये। ते कुषेत बोलत सुनि सुनि के सकल अंग कुम्हिलाये॥ लै कर गेंद गये हैं षेलन लरिकन संग कन्हाई। यह अनु-मान गयो कालीतट सूर सांवरो माई॥१०२॥

उक्त जसोदा की कै आज सारंग कमल पितु समुद्र सुत चंद्र धर शिव सुत षडानन बाहन मोर नाहीं बोलत है सिवरिपु जालंधर तिया बृंदा जल बन बृंदाबन काहे नाहीं निहारो जात कलहीपति सनि पितु सूर्य्य-सुता जमुना और ही रंग करे है सो का सुनाऊं अरु बृजगलीन में जे बृजबासी फिर रहे तिनै देष मुरझात अर्थ भयकारी देषि परत है सुरभी गौपुत्रन की ओर नाहीं देषत पुत्र गौ की ओर हरष ते पूर के भूसुत केवांच सत्रु बानर गेह बृक्ष ऐसे देष परत जो कहिवे जोग नाहीं है अर्थ उदास अरु चारो तरफ षगपति व्यास काग झुंड के झुंड आय कै कुषेत बोलत है सो सुनि सकल कुम्हिलात याते आज गेंद लै लरिकन संग कान गयो है सो यह अनुमान आवत कै काली के तट गयो या पद में अनुमान अलंकार को नाम ॥ १०२ ॥

सो जानो वृषभानदुलारी। सिय रिपुपितुसुत बंधु तात हित जाके चरन कमल गुनकारी ॥ कामग्रंथआरि गुन रिपु सुत सम गति अति नीकी बिचारी। चढ़ी सूरत सुत रिपु पितु वाहन गेह नृपत कटि टारी ॥ भूषनपति अहारजाफल से मेघ अनोषे दोऊ। सारंगसुतसुतसुत अहार सो दीपत तन मों जोऊ ॥ गिरजापतिपितुपितु से दोऊ करवर देष बिचारो। बानी सुनत तुरत अपने मन कोटि कोकिला वारो॥ निपटनदान बीज सो दसनन जव छबि पूरन पावों। अंतरिछ में परो बिंबफल सहज सुभाव मिलावों॥ दिनचरसुत सुत सरस नासिका है कपोल श्री भाई। सारंग नैन मोह धनु बेनी नागिन सी सुषदाई॥ बेदन अर्क बिभूषित सोभा वेंदी रिछ बषानो। सूरस्याम है उपमा भूषन तब निज बात प्रमानो ॥ १०२ ॥

उक्त सषी की नायक मतकै सो बृषभानकुमारी तुम जानो (जानने) कै सियरिपु जयंत पित इंद्र सुत अर्जुन बंधु करण पिता सूर्य्य हित अरुण जाके चरण (होहिं) काम ग्रंथ कोक नाम चक्रवाक रिपु रात्री गुन अंधकार रिपु दीप सुत अंजन नाम दिगज (ता सरी की गति देषो) सम गति नीकी बिचारो त्रैसूरत सूर्य सुत करण रिपु अर्जुन पिता इंद्र बाहन गज गेह बन नृप सिंघ से जाको कटि है (होहिं) भूषण मुद्रापति अगस्त अहार समुद्रजा श्री फल बेल से घन पयोधर दोऊ जाकी सारंग समुद्रसुत कमलसुत ब्रह्मापुत्र शिवअहार धतूरा नास कनक सुवरणसी दुति हो रही गिरजापति शिव पितु ब्रह्मा पित कमल से जाके कर है (होहिं) अरु जाकी बानी सुनत कोकिला वारि डारो नदान अनार के बीज की छबि जब दसनन में मिलै अरु अंतरिछ अधरन को (मैं पकी) कुंदुरु की छबि जब मिलै दिनचर बारचर मछरीपुत्र व्यासपुत्र सुकसी नाक (नासिका) कपोल श्रीलक्ष्मी के भाई संषसे अरु सारंग हरिनसे नैन (नेत्र) कमानसी भौंह बेनी नागिनसी सुषदाता वेदन (वेदयुत) कानन में अर्क सूर्य की सोभा भूषण में वेंदी रिक्ष तारा सी तब उपमा अलंकार (मानने या पद में उपमा अलंकार लच्छन। उपमान सु साहश्य तें बिन दोष लषि जाइ। यह अलंकार) सब ग्रंथन में नाहीं मिलत अनुमान में गतार्थ होत है ॥१०३॥

अब लों ऐसी नाहीं सुनी। जैसी करी नंद के नंदन अदभुत बात गुनी॥ श्रवन बचन तें पावन पतिनी सारंग कहत पुकार। गुन अकास को सिध साधना सास्त्र करत बिस्तार॥ रबि ते वै जननी सुसुद्ध पुनि संसकार तें होइ। रति में अधर सिया सुचि सि
मुनि मति जोइ॥ सुध सबन को

जानत सब्दाभूषन जैसो। सूरज स्याम सुध दासी को करी कही बिधि कैसो॥१०४॥

उक्त गोपिन की ऊधो प्रत कै अब लों ऐसी नाहीं सुनी है जैसी नंद के नंदन ने गुन के करे है श्रवन नाम (श्रुत श्रुत नाम बेद) श्रुत कहे बेद बचनन ते सारंग समुद्र की पतिनी नदी है गंगा आदिक अरु अकास गुन शब्द साधना ते शुद्ध होत है सो शास्त्र कहत है रवि ते त्रै मंगल जननी भूमि संसकार ते शुद्ध होत है रति में तिया के अधर शुद्ध मुनि बचन वारे (कहत हैं सब शुद्ध करने को हम लच्छन सुनो है) शुद्ध सबन को लक्षण जानत शब्दाभूषन जैसो शब्द शुद्ध करने को हम को लक्षण सुने है अरु जानती है परंतु दासी को कवन बिध ते कान्ह ने शुद्ध करी है यामें शब्दा अलंकार है लच्छन।

चौपाई—सब्द प्रमान जहां ठहरावै। सब्द अलंकृत सुकवि बतावै ॥१०४॥

भूसुत मेघ काल नहिं इन के आदि बरन चित आवै। तरु भामिन बन पाते जानो मध्य बरन बिसरावै॥ अवल हुतासन केर सँदेसो तुमहूं मद्ध निकासो। हिम के उपल तलाई अंत ते याके जुगुत प्रकासो॥ हम तो बंधी स्याम ...न सुंदर छोरनहार न कोई। जो ब्रज ...गो अर्थपति सूरज सब सुषदायक ...है॥१०५॥

...की (कै) भूसुत कुज (घन दिन) मेघ काल बरषा (के) निसि जामिनी

उक्त गोपीन्न ते

इन के आदि बरन ते कुबजा उन के चित पै चढी है तरु नाम सागोन भामिन नाम गोपिन (कोपिन) बन नाम कानन मद्ध बरन ते गोपिन को ताते बिसरायो है अवल नाम अजोर हुतासन अगिन मद्ध बरन ते जोग के संदेसो तुम ही लै आयो है हिम उपल नाम कर का तलाई नाम सरसी अंत के बरन ते कासी यह जोग तुम कासी में प्रकास करो हम तो स्याम के गुनन सो बांधी है ताको छोरनहार कोई नाहीं है जे ब्रज तजै अर्थ अज्ञान (आपन) समुझ के पति ते जो सब सुषदायक है यामें गोपिन को त्यागो कुबरी चित चढी है याते अर्थापति अलंकार है लच्छन ।

दोहा—जहां अर्थ हो ब्यर्थ दै, और अर्थ ठहराइ ।
अर्थापति भूपन कहै, ताहि सुकबि ठहराइ ॥१॥१०५॥

सिंधुरिपुभषपतिपिता को सत्रु सैना साज। चलो आवत आज भूपर कर अनूपम काज ॥ सिंधु भष के पत्र वन दो बनै चक्र अनूप। देव कं को छत्र छावत सकल सोभा रूप॥ आड केसर की करी अधुरात का सुचि सोइ। लपट लटकी रजु का भू जुगजुबा छन जोइ॥ सिंधुरिपु हित तासु पतनी मातु सुत के रंग। कौन सुंदर सारथी सुष पूर पावन अंग॥ ब्रह्मचारी पिता माता मात नीतन जोर। करे बाहनहार दोऊ जगत की गति तोर॥ हेत श्री ब्रजराज जीतन

चलो आवत भूर। सूर सब ते देषिये नंदनंद जीवनमूर ॥ १०६ ॥

सिंधु नाम दधि(ताको) रिपु बिलाई(ताको)भष मूस (ताको)पति गणेश पिता शिव सत्रु काम भू पै आवत है संभुभष कनक सुबरण के तरोना चक्र है देव नाम सुमन सुमन कहे फूल के नाम सीस को फूल को क्षत्र दियो है केसर की आड ताही की है धुर अरु लटकी रस्सी भू के जुवा सिंधु अरि (रिपु)अगस्त हित राम पतनी सीता माता भूमि सुत मंगल लाल बिंद स्वारथी ब्रह्मचारी सुक पिता व्यास माता मछरी सोहै नीतन नैन ते जोर के बाहन हार कीन्हे है नंद-लाल के जीतबे को यामें रसबदा अलंकार है बीर अंग सिंगार अंगी ते। चौपाई--अंग होत रस जहां मबील। रसबत भूषन तहां सुचीन ॥१०६॥

पंथरिपु दिन परस सब दिन कीजिये सुष मान। बूझिये सब संत जनन सो कथा पुन्य पुरान॥ ध्याइये सारंग पद को रहन को जो थान। कीजिये सुष पाय ताही गुनन को बर गान॥ ओडिये नंद-नंद जू के चलतही हगवान। राषिये दृग मध दीजे अनत नाहीं जान॥ इंद्र सत्रु सुभाव मेरे चाह नाहीं आन। सूर सब दिन सिवा मोहित देहि यह बरदान॥१०७॥

उक्त सषी की सषी प्रत कै है सषी मैं यह चाहत हौं पंथ रिपु जो जमुना है ताको दिन नाम बार बार नाम जल ताको परस सब दिन रहे अर्थ सब दिन नहाइये अरु संत जनन सों पुरान की कथा बूझिये अरु ध्याइये

सारंग जो पछी ताको नाम दुज (अरु दुज) नाम बिप्र के पद को थान विष्णु अरु अपने द्रिगन के मद्ध ताको (तिन को) राषिये इंद्र सत्रु बलि सुभाव सषी हे सषी मेरे और चाह नाहीं शिवा मोकों यही बरदान देहि याही में सांत को अंग सिंगार है ताते रसवत इति ॥ १०७ ॥

देषत आजु नाहीं दोइ । नंदनंदन औ छबीली राधिका रुचि भोइ ॥ मघ बादर बीच मनि में स्याम मूरत देष । पुंडरीक बिचार लागी लेन गंध बिसेष ॥ इंद्रसुतसुत बीच उन लष लगे चूमन चाहि । हंसत दोऊ दुहुन को लष सूर बलि बलि जाहि ॥ १०८ ॥

उक्त सषी की सषी प्रत कै नाहीं को परजाइ मुकुर दोइ देषत है नंदनंदन औ राधा रुचि में भूलि गये है बादर नाम पयोधर के बीच मनि के राधा ने स्याम को प्रतबिंब देषा सो पुंडरीक जान सूंघन लगी अरु कृष्ण इंद्र सुत बाली ताको पुत्र अंगद नाम बाजूबंद तामें राधा मुष प्रतिबिंब देष चूमन लागे यह देष दोऊ दुहुन कों हंसन लगे याही में सिंगार को अंग हांस ॥ १०८ ॥

सुनि पुनि रसन के रस लेष । दसन गौरी नंद को लिषि सुबल संपत पेष ॥ नंदनंदन मास कै ते हीन चितिया बार । नंदनंदन जनम ते हैं बान सुष आगार ॥ चितिय रिछ सुकर्म जोग बिचारि सूर

नवीन । नंदनंदन दास हित साहित लहरी कीन ॥ १०९ ॥

मुनि कहिये सात रसन कहे एक रस कहे छ गौरीनंद दसन संज्ञा एक ते भये संवत सोरह सै सात १६०७ बैसाष मास अछै त्रितिया तिथ नछत्र कृतका सुकर्म जोग अर्थ सुगम ॥ १०९ ॥

हे ब्रजचंदबदनचकोर । ह्वै रहैंगे कबहिं नैना नेह नातो जोर ॥ धातु देस बिचारि कर बिपरीत पहिले जोर ॥ पाछिले कर पहिल दीर्घ बहुरि लघुता बोर । बार कर बिपरीत इन को मोहि नाहीं निहोर ॥ जनम संगी अंग के को संग ताको दोर । इहै निसदिस मोहि चिंता समुझ सजनी तोर ॥ सूरदास पुकार कासे करै बिन घन मोर ॥ ११० ॥

उक्त नाइका की सषी प्रत कै हमारे द्रग नंदनंदन चंद के चकोर कब होंगे (हैहैं) धातु तामा देस मालवा ताकों विपरीत करने ते मालवा तामा ताके आदि के बरन ते माता ताही में पाछिल बरन ता ताको (ताकें) पहिलो दीरघ करो पाछिलो लघु तौ तात भयो अर्थ माता पिता अथवा धातु देस बिचार करो आठ में कौन चाही तौ तामा ताको बिपरीत करें माता ताकों पाछिल बरन तकार दीरघ लघु तें तात बार नाम जल ताको बिपरीत करो तो लज होत ताको भासा में लघु दीरघ होत है सो लाज भये (भई) अर्थ माता पिता की (मोकों) लाज नहीं है (काहे के) ये जनम के संगी

है अंग के नाहीं यह मोको चिंता है आगे तेरी समुझ पुकार घन हीन मोर कासों करैं यामें सिंगार को अंग चिंता भाव ताते प्रयसुत (प्रमसुत)॥ ११० ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने एक स्थान पर इस पद को कुछ घटा बढ़ाकर अर्थ किया है वह नीचे प्रकाश किया जाता है।

है बृज चंद बदन चकोर। है रहे कवि नेम निरदै नेह नातो जोर॥ धातु रूप बिचार कर बिपरीत पाहिलो जोर। वार कर बिपरीत इन को मोहि नाहि निहोर॥ जनम संगी अंगनाहीं करत कबहूं तोर। यहै निसदिन मोहि चिंता समुझ सजनी मोर॥ सूर कति चाहि पुकारे बिना नघ की घोर॥ ४९ ॥

उक्ति नाइका की। कै दग मुष चंद के चकोर कवि है हैं धातु तामा बिपरीत ते माता। वार जल विपरीत ते लाज अर्थ माता की लाज नाही ये जन्म साथी हैं यही तेरी समुझ की चिंता है। कातिचा विपरीत ते चातक सो पुकारे नघ विपरीत ते घन हीन॥ ४९ ॥

काहे को मम सदन सिधारो। ब्रज-भूषन बल जाहु तिहारो तुम ब्रजजीवन जग उंजियारो॥ ग्रह नक्षत्र है बेद जासु घर ताहि कहा सारंग सम्हारो। गिरजापति भूषन जिन देषे ते कह देषत है नभ तारो॥ सुरतरु सदन सुभाव छाडि कह चाहत है द्रुम भूम भंडारो। सूर रहो नीके निसबासर हम सुन सुषो न होत दुषारो॥ १११ ॥

उक्त नाइका की नाइक प्रत (कै हमारे घर हो या तुम काहे को आये हे ब्रजभूषन मैं तिहारी बल जाऊं तुम जग उंजियारे हो) ग्रह ९ नक्षत्र २७ बेद ४ कै मन होत है जाके घर मनि होइ (होहिं) सो का सारंग दीप सम्हारत है अरु

गिरजापीत भूषन चंद जिन देषे सो तारे नाहीं देषत है सुरतरु कलप वृक्ष जाकें होत है सो भूम तरु नाहीं चाहत अवर सुगम है यामें सपतनी की अस्तुत अनुचित भाव सो श्रिंगार ताते उर्जस ॥ १११ ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस पद के अर्थ को दूसरे स्थान में भी नाम मात्र को घटाया बढ़ाया है वह नीचे लिखा जाता है। मूल में कुछ नहीं घटाया बढ़ाया है अतएव यहां मूल नहीं लिखा है।

उक्ति नायका की। कै मेरे घर काहे कों आए ग्रह नछत्र वेद मिलि ४० का मन कूट ईकारांत अकारांत लघु होत है जाके घर मनि है सो दीप नाहीं सम्हारत ॥ गिरजापति भूषन चंद चाहि तारे नाहीं देषत। आन सुगम सपतनी की अस्तुत अनुचित भाव सों शृंगार को अंग याते ऊर्जस ॥ ४६ ॥

भामिन आजु भवन में बैठी। मानिक निपुन बनाये नीकन में धनु उपमेय उमेठी ॥ भूषनपितुपितसुत अरि पतनी माता ओर निहारे। षचर षिलौना हित सिंगार जग मनसरूप लै धारे। बासव सुत अरि के सुभाव सब कहत सुनत गुन ताही। विथक पुत्रभ्रातपितपतनी करत सोने को नाही॥ तहं ब्रजचंद आइ गौ देषत रही न काहू रोकी। सूरस्याम पर गई वारने निरष कोक जनु कोकी ॥ ११२

उक्त सषी की सषी सें कै हे सषी भामिनी जो है सो आजु भवन में बैठी है मानिक नाम लाल बनाये है नीकन अछन कहे नेत्र अर्थ लाल

द्रग करे हैं धनु उपमेय भू सो उमेठी है भूषन बाजू ताको नाम अंगद ताके पिता बालि (ताके) पिता इंद्र सुत जयंत रिपु राम पतनी जानकी माता भूम अर्थ भूम की वोर देपत है पचर पिलौना गुड्डी ताको हित नष सिंगार (सिर) पान नाम हाथ जंग मन चरन पै धरे हैं अर्थ कर के नष तें पग को नष लिपै है वासव इंद्र सुत अर्जुन रिपु करन सुभाव सषी अर्थ सषिन का बात सुनत है पर विथक पवन सुत भीम भ्राता करन पिता सूर्य पतनी संज्ञा भी नाहीं करत तहां जब बृजचंद आए तब काहू की रोकी न रही स्याम परवारन गई जैसे चक्र पै चकई यह शृंगार को अंग सांत भाव है ताते सामाहित अलंकार ॥ ११२ ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस पद को भी दूसरे स्थान पर रखकर कुछ घटा बढ़ाकर अर्थ किया है वह नीचे प्रकाश किया जाता है मूल में अंतर नहीं है अतएव मूल नहीं लिखा है केवल अर्थ लिखा है।

उक्ति सषी प्रति सषी की। कै आजु बैठी है ॥ मानिक लाल नेत्र धनु उपमेय भौंह उमेठे। भूषन अंगद पिता पिता इंद्र सुत जयंत रिपु राम पतनी माता भूमि देषत ॥ पचर पिलोना हित नष सिर धरे नष लिपत है। वासब सुत रिपु करन सुभाव सषी की बात नाहीं सुनत। विथक पुत्र भीम भ्राता करन पितु सूर्य पतनी संज्ञा नाहीं करत। सो कृष्ण देषि रोकि न रही इहां शृंगार को अंग सांत भाव तें समाहित अलंकार ॥ ४७ ॥

सजनी हौं न स्याम मुष हेरौं। सूर सुता पित राग गंध पितु प्रिय जुत आदि सकेरो ॥ मुष समूह मानुष ताही बिध करो न कबहूं फेरो। पै निरजर रिसनी को कबहूं सकदन सुंदर पेरो ॥ ना जानौं अनुराग कहातें मोहि घनेपन घेरो ॥ भूषनपतिअहारसुतबैरो वारत अंग उजेरो। पलटत बान भानुजातट में

निर्षत दुष बहुतेरो। सूर सुजान बिभावन पहिलों किंकर कर मन चेरो ॥ ११३ ॥

उक्त सषी की सषी प्रत के हे सषी मैं स्याम मुष नाहीं देषो है सूर सुता जमुना राग पिता सुर गंध्र पिता (पितु) मलय प्रिय तन इन के आदि बरन तें जसुमत ताके मुष नाम आनन समूह नाम गन मानुष नर आदि बरन ते आंगन में फेरो नाहीं कियो पय नाम बा नीरजर नाम सुर रिस रीस (नीरीसनी) आदि बरन ते बांसुरी ताको शब्द भी नाहीं सुनो मैं नाहीं जानत मोकों अनुराग ने कहां ते घेरो है भूषन मुद्रापति अगस्त अहार समुद्र सुत चंद को उजेरो बैरी होइ के अंग जारत है बान नाम सर नाम ताल पलटे ते लता भानुजा जमुना के तट में देषे तें बहुत दुष होत है यामे पहिलो विभावना अलंकार पूर्वानुराग में सरवन दरसन है देषव कारण सो नाहीं बिरह कारज ॥ ११३ ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस पद के अर्थ को भी दूसरे स्थान पर कुछ धटा बढ़ाकर लिखा है वह ज्यों का त्यों नीचे प्रकाश किया जाता है।

उक्ति नाइका की। मैं स्याम को मुष न देषों है। सूरसुता जमुना राग पिता सुर गंध पितु मलय प्रिय तन आदि बरन तें जसुमत मुष आनन समूह गुन मानुष नर आदि तें आगमन में फेरो नाहीं कियो पय बारि निरजर सुर रीस आदि तें बाँसुरी ताको सब्द भी नाहीं सुनो। अनुराग घेरो सो नाहीं जानत। भूषन मुद्रापति अहार समुद्र सुत चंद जारत। बान सर सर ताल पलटे ते लता जमुना तट देषे दुष होति। यामें पहिल बिभावना अलंकार श्रवन दरसन देषिबो कारन नाहीं बिरह काज तें ॥ ४८ ॥

जसुमत देष अपनो कान। बर्ष सब को भयो पूरन अबै ना अनुमान ॥ होन सुत को हरष हर के कियो सो सब जान। भान सुनं सो जीव निस गुन प्रथम जोर बषान ॥ सिंधुजा गुनलवन कीनो अंत ते

पहिचान । बृथा बृज की नार नित प्रत देहु उरहन आन ॥ तोहि अपनो लाल प्यारो हमैं कुल की कान । सूर समुझ बिभावना है दूसरो परमान ॥ ११४ ॥

उक्त सषी की जसोदा (जसुधा) प्रत कै अपनो कान (कान्ह) देष सर नाम बान बान संज्ञा पांच बरष (पांच को) को अब नाहीं भयो है हीन सुत पूतना ताकों हरष हर के जो कियो सो सब जानत हैं भानु नाम त्रिमूरत सुनं नाम नाक जीव नाम बृहस्पत निसगुनतम आदि बरण तें त्रिनाबृत भयो सिंधुजा रमा लवन गुण पारो अंत ते मारो अरु बृजबाल तुम्है बृथा उरहन देती हैं तुम्है अपनो पुत्र प्यारो हमैं कुलकान यामें अपुष्ट कारन तें कारज पुष्ट भयो ताते दुती बिभावना है ॥ ११४ ॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस भजन को और भी एक स्थान पर लिखा है वह ज्यों का त्यों अर्थ समेत प्रकाश किया जाता है ।

जसुमत देषि अपनो प्रान । वर्ष सर को भयो पूरन अजहिं ना अनुमान ॥ हीनसुत को हरष करषो सर्व जाहिर जान । त्रिदस सुनं सुजीव निसगुन प्रथम जोर प्रमान ॥ बृथा बृज की नारि निसादिन देति उरहन आन ॥ तोहि आपन लाल प्यारो हमें कुल की कान । सूर समुझ बिभावना है दूसरो अनुमान ॥४९॥

उक्ति गोपी की । अपनों प्रान देषि वर्ष सर पाँच वो नाहीं भयो । हीन सुत पूतना हरष करषो । त्रिदस देव सुनं नाक जीव बृहस्पति निसगुन तम आदि तें । तृनाबृत मारो सो तू कहत बृजबाल नाहक उरहन देति तुम्हें पुत्र पियारो हमें कुलकान यह दूसरो बिभावना है । उद्दीपन प्रथम आलंबन है अरु बिभावना अलंकार । हेतु अपूरन तें जहाँ कारज पूरन होय । पाँच बरष में षोडस बरष को कृत्य कीनी ॥ ४९ ॥

नीकन अदभुत बान लई । आपु ना तजत ग्रेह पर उर में कार बर सूल सई ॥ बाचर.पचर हार गे बनचर होत

न समता जोग। पै झष कनक रुद्र रंग तंत्री सुन आद भर भोग॥ याही तें सब कों उपजावत सुष मद महाबियोग। थिर न रहत इक थानन छांडत सूरज अदभुत लोग॥ ११५॥

उक्त नाइका की सपी सों कै तेरे (तूने) जो नीकन अछन ने अदभूत बान लई है आपु ग्रेह नाहीं तजत पर उर में सूल सई करत है वा जल षचर आकास चर बनचर मीन पंजन चकोर मृग समता नाहीं पावत पय नाम अमृत झष मीन कनक हाटक रुद्र रंगलाल तंत्री बीना सुंनपा आदि बरन तें अमीहाला बिष ते जरे हैं याही ते सब को उपजावत है सुष जीवन मद महा वियोग मरन थिर अलप नाहीं रहत (हैं) अरु थान नाहीं छांडत यह अदभुद बात है इन की॥ ११५॥

टिप्पणी—सरदार कवि ने इस भजन को दूसरे स्थान पर भी लिखा है और अर्थ में घटाया बढ़ाया है अतएव ज्यों काल्यों का नीचे लिखा जाता है।

नीतन नयनन का बान लई। बाचर मीन षचर पंजन बनचर मृग हार रहे॥ पय अमृत झष मीन कनक हाटक रुद्ररंग लाल तंत्री बीना सुंनष आदि तें अमी हाली बिष भरे हैं॥ यातें सुष मद महाबियोग मरन थिर नाही रहत थान नही तजत॥ ९१॥

अदलपतिरिपुपितापतनो अब न जैहैं फेर। बातसुतभ्राताअप्रिय के बिनु सुभाव न हेर॥ भानुतपन किसान ग्रह के रक्षपालक आद। मद्य ठाढो होत नंदननँद कर उनमाद॥ नदिन के उर

ताल मारत महा मार प्रयोग । मरन देत न जियन सजनी गरक गाडत रोग॥ सिंधुरिपुहित तासु पतनी भ्रात सिव कर जौन । आदि कासों पढो बैरी जान परत न तौन ॥ देष बिन मन करत आपन देष बिनु न रहात । सूर संकर करन भूषन जो जगत विख्यात ॥११६॥

उक्त नाइका की प्रति सषी कै अदल पारवती पति शिव रिपु काम पितापतनी जमुना अब न जैहैं बातसुत भीम अप्रिय भ्राता करन सुभाव सषी बिनु भानु तपन घाम किसान ग्रह रछक टाटी आदि बरन तें घाट के मध्य में नंदनंदन ठाढो होत है नदी नाम नवन मिले ते नयन होत ताके उर में ताल सर नाम बान मारत है महा मार काम को प्रयोग कर के तासों न मरन देत न जियन देत महा रोग गाडत है सिंधु रिपु अगस्त हित राम पतनी सीता भ्राता मंगल शिव कर त्रिसूल आदि बरन ते मंत्र कासों ऐसो पढो है देषत तन मन आपन करत है बिन देषे रहो नाहीं जात यामें संकर रूपक विकल्प को है ॥११६॥

टिप्पनी—इस भजन को नाम मात्र को एकाध स्थान पर पाठांतर कर सरदार कर कवि ने अर्थ किया है वह ज्यों का त्यों का प्रकाश किया जाता है ।

अदलपति रिपु पिता पतनी अब न जैहों फेर । बात सुत भ्राता अप्रिय के बिन सुभाव न हेर ।। भानु तपन किसान ग्रह के रक्षपालक आदि । मध्य ठाढो होत नंदन नंद कर उनमादि ॥ नदिन के उर ताल मारत बिना मार प्रयोग । मरन देत न जिय न एरी गरक गाँठत रोग। सिंधु रिपु हित तासु पतनी अत्र सिव कर जोन ॥ आदि कासोँ पढो बैरी जान परत न तोन । देषि बिनय न करत आपन देषि बिन न रहात । सूर संकर करत भूपन जो जगत विष्यातं ॥ ९० ॥

- अदलपति रिपु काम पिता कृष्णपतनी जमुना न नहाऊंगी । बातसुत भीम

अप्रिय भ्राता करन सुभाव सर्पा बिन। भानु तपन घाम किसान ग्रह रक्षक ठठीथा आदि तें घाट मध्य नंदनंदन रहत ॥ नदिन नयन के उर में बान मारत है तासों मरन जीयन नाहीं देत ऐसो राग गाढे है। सिंधु रिपु अगस्त हित राम पतनी माता मंगली सिव अत्र त्रिसूल आदि तें मंत्र कासों पढो है ॥ देषि बिन मन आन कर लेत कै देषे बिन नाहीं रहो जात यामें सूरसंकर अलंकार करत हैं अनेक अलंकार रूपक बिभावनादि ॥ ९० ॥

इंद्र उपवन इंद्रअरि दनुजेंद्र इष्ट सहाय। सुंन एक जु थाप कीने होत आदि मिलाय॥ उभयरास समेत दिन मनिकंन का ए दोइ। सूरदास अनाथ के है सदा राषन होइ॥ ११७॥

टिप्पणी—इस का टीका नहीं था परंतु सरदार कवि ने लिखा है वह प्रकाश किया जाता है।

इंद्रवन नंदन इंद्र अरि दनुज दनुजेंद्र रावन ताके इष्ट सिव तन को सहाई नंदी सुंन दै एक तें दस पाप तें नरक इन के आदि बरन तें नंदनंदन भये॥ अरु उभर्य कहें दो रास वृप दिन मन सूरज की पुत्री राधा ए दोइहें सुर के पालन ॥ ११६ ॥

प्रथम ही प्रथ जागाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव बिचारि ब्रह्मा राषु नाम अनूप॥ पान पय देवी दियो सिव आदि सुर सुष पाय। कहा दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति सुष पाय॥ पार पायन सुरन के पितु सहित अस्तत कीन।

तासुबंस प्रसंस में भौ(१) चंद* चारु नवीन ॥
भूप प्रथी(२)राज दीनौं तिन्है ज्वाला देस ।

---

* दीपनिर्व्वाण नामक उपन्यास के पहले भाग में मुन्शी उदितनारायण वर्म्मा ने लिखा है ।

'कवि चन्द यथार्थ में एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराज के परम बन्धु थे, और पृथ्वीराज के सहबास ही में सर्व्वदा रहते थे । चन्दकवि पुस्तक में कवि-चन्द्र के नाम से लिखे गये हैं । इङ्गल्याण्ड के सर फिलिप्सिड्नी और सर वाल-टर रयाली के समान वे काव्य विषय में निपुण थे, युद्ध विषय में भी वैस ही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्य ही उन के यश का चिन्ह है । उन का सकल महा-काव्य राजपूत लोगों के, विशेषत: पृथ्वीराज के कीर्त्ति कलाप और शूरता परा-क्रम में वर्णन हुआ है । सुतराम् समस्त आर्य्यजाति में जैसे रामायण और महा-भारत आदरणीय है, ग्रीक (यूनान) लोगों में जैसे होमर आदरणीय है, राजपूत लोगों में चन्दकवि का काव्य समूह भी वैसे ही आदरणीय है । किन्तु चन्दकवि का कपोल कल्पित काव्य बहुत कम है, प्रकृत बृत्तान्त का भाग अधिक है । दु:ख का विषय यही है कि उन का समस्त जीवनचरित्र कहीं भी नहीं पाया जाता और उन के काव्य समूह का अधिकांश प्राय: प्राचीन हिन्दीभाषा में छन्दोवद्ध है ।'

चंदकवि के विषय में शिवसिंह सरोज में यों लिखा है—

'चंदकवि प्राचीन बंदीजन संभल निवासी संवत् ११९६ ए.चंदकवि महाराजे बीसल देव चौहान रनथंभौर वाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आये मंत्री औ कवीश्वर दोनों पद को प्राप्त हुवा औ पृथ्वीराज रायसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संख्या भाषा में रचा जिस्में ६९ खंड है औ जिस्में पुरानी बोली हिंदुवों की है इस ग्रन्थ में चंदकवि ने संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताई के साथ बहुत छंदों में वर्णन किया है छप्पै छंद तौ मानो इसी कवि के भाग में थीं जैसा चौपाई छंद श्री गोसाईं तुलसीदास के हिस्से में पड़ी थीं इस ग्रंथ में छत्रियों की वंसावरी औ अनेक युद्ध औ आबू पहार का माहात्म्य औ दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा औ छत्रियों के सुभाव चालचलन

तनय ताके चार कीन्हो प्रथम आप नरेस ॥
दूसरे(२)गुनचंद तासुत सीलचंद सरूप।(४)

ब्योहार बहुत बिस्तार पूर्वक बर्णन किये हैं ए कवि केवल कवीश्वर ही नहीं थे वरन नीति शास्त्र औ चारन के काम काज में महा सूर बीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराज के ए भी मारे गए इन्हीं के औलाद में सारंगधर कवि थे जिन्होंने हमीर रायसा औ हमीर काव्य भाषा में बनाया है।

सारंगधर कवि बंदीजन चंद कवीश्वर बंसी संवत् १३९७ ए प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंश में संवत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीर देव चौहान रनथंभौर वाले के इहां जो राजा विशाल देव के वंश में था रहा करते थे इन्होंने हमीर रायसा १ औ हमीर काव्य २ ए दो ग्रन्थ महा उत्तम बनाए हैं हमीर रायसा राजा हमीर की प्रशंसा में लिखा है।

दोहा—सिंह गवन सपुरुष बचन, कदलि फरै एक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥ १ ॥

सवैया—तंगन समेत काटि बिहित मतंगन सों रुधिर सो रंगरणमंडल सो भरिगो।
सारंग सुकवि भनै भूपति भवानीसिंह पारथ समान महाभारत सो करिगो ॥
मार देखि मुगल तुराबखान ताहि समय काहू असन जाना काहू नट सो उचरिगो।
बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथी हाथा हाथी ते सहादति उतरिगो ॥१॥"

चंदकवि के विषय में पंडित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने पृथ्वीराज रासौ की टिप्पणी में लिखा है।

चंद बरदई—इस महाकाव्य का ग्रंथ-कर्त्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लँगोटिया मित्र और उन के दरबार का कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उस के जगात नामक गोत्र का था और उस के पुर्षा पंजाब देश के लाहौर नगर के रहनेवाले थे और उन की यजमानी अजमेर के चौहानों की थी। उस की जैसी शूर बीरता इस महाकाव्य से विदित होती है उस का मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अद्यावधि प्रसिद्ध बीर भूमि के तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूताने के हृदयरूपी अजमेर नगर में बड़ा हुआ था। वह षट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद शास्त्र, ज्यौतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक और गान आदिक

बीरचंद प्रताप पूरनभयो अदभुत रूप ॥
रंतभार(३) हमीर भूपत संग षेलत आप(४)।
तासु बंस अनूप भौ हरचंद अति बिष्यात॥
आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत बीर।
पुत्र जनमें सात ताके महा भट गंभीर॥

विद्याओं में अच्छा व्युत्पन्न पंडित था । उस के पिता का नाम वेण और विद्या-गुरु का नाम गुरूप्रसाद था। उस की दो स्त्रियों के नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लड़की का नाम राज बाई और दश लड़कों के नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ बल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ बीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुनराज १० थे। इस महाकाव्य के विषयों को वैसे तौ उस ने समय २ पर बना कर कंठ कर रक्खे थे परंतु उन को ग्रंथाकार में उस ने ६०॥ दिन में रचा था और अंत को उस ने रासे की पुस्तक अपने लड़के जल्ह नामक को दियी थी। इस रासे के अतिरिक्त उस के रचे और भी कईएक ग्रंथ सुनने में आते हैं परंतु उन में सब से बड़ा ग्रंथ यह रासा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नहीं मिलते हैं। उस का सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहां तक हमारे जानने में ख्यातादि से आई है वह हम इस ग्रंथ के समाप्त होने पर छाप कर प्रसिद्ध करेंगे।'

फिर लिखा है।

कवित्त—'सम बनिता बर बंदि। चंद जंपिय कोमल कल ॥
सबद ब्रह्म यह सत्ति। अपर पावन कहि निर्मल ॥
जिहित सबद नहिं रूप। रेख अकार ब्रन्न नहिं ॥
अकल अगाध अपार। पार पावन तयपुर महिं ॥
तिहिं सबद ब्रह्म रचना करौं। गुरुप्रसाद सरसैं प्रसन ॥
जद्यपि सु उकति चूकौं जुगति। तौ कमल बदनि कवितह हसन ॥
छंद ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्री को उस की शंका का उत्तर दे कर

कणाचंद(५)उदारचंद जो रूप चंद सुभाइ।
बुधचंद प्रकास चौथो चंद भै सुखदाइ॥
देवचंद प्रबोध संभृत(६)चंद ताको नाम।
भयो सतो नाम सूरज चंद अंद निकाम॥
सो समर करि साहि सेवक गये(७)विध के

समाधान करता है। शब्द ब्रह्म (सं० शब्दात्मकं ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चंद की व्याकरण और वेदान्त विद्या के ज्ञान का द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों के अनुसार चंद के विद्या गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देश का रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआ है। कवितह चंद की हिन्दी का निज प्रयोग है और उस का अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचने वाले कवि का है। किसी २ पुस्तक में जो बरबंदि, अमल, अबल, लयपूर, महि, तिहि और प्रसन्न पाठ हैं वे अशुद्ध हैं।'

फिर लिखा है।

'बिहु बाह सूर सज्जे समंत। बेनै बिरद बंधे अनंत॥ छंद॥ ६२३॥

यह छंद सं० १६४७। १७७० और १८४९ की पुस्तकों में नहीं है किन्तु सं० १८९९ की लिखी में है।

इस छंद की अंत की तुक में "बेनै बिरद बंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक बिरद बांधे अर्थात् कहे। यह वेन कवि इस महाकाव्य के रचनेवाले चंद का पिता था और वह सोमेश्वर जी के इस समय साथ था। अब तक चंद से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हम ने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध कियी है उस के पीछे मेवाड राज के महाराणा जी श्री उदयसिंह जी के महाराजकुमार श्रीसगतसिंह जी के पंडित विष्णुदास जी ने अकबर बादशाह के भाट गंग जी से अजमेर में पटोलावाय के मुकाम पर चंद के बाप कवि राव वेन का नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था।

लोक । रह्यो सूरज चंद दृग ते हीन भर वर सोक ॥ परो कूप पुकार काहु सुनी

वह हम प्रकाश करते हैं । इस छप्पय से वेन ने पृथ्वीराज जी के पिता सोमेश्वर जी को आसीस दियी थी ।

छप्पय ॥ अटल ठाट महि पाट । अटल तारागढ थानं ॥
अटल नग्र अजमेर । अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप । अटल लंका गढ डंडिव ॥
अटल आप चहुवान । अटल भूमी जस मंडिव ॥
संभरी भूप सोमेस नृप । अटल छत्र ओपै सू सर ॥
कवि राव वेन आसीस दें। अटल जुगां राजेस कर ॥

इसी के साथ उसी पुस्तक में चंद के नागापत्नकरणा का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखा है:—

दोहा ।। ले कूंजा नृप पीथुला , सांमत चमूं समंद ॥
वेन नँदन कनवज गमन , चंद करन कइ दंद ॥'

पृथ्वीराज रासे की प्रथम संरक्षा में लिखा है ।

'इस के सिवाय फ़ारसी और जम्मू की तवारीख भी इस बात की साक्षी देती हैं कि चंद हमारे हिन्दुओं के अंतिम बादशाह का परम प्रिय कविराज और सहचर था । यदि हम उन पुस्तकों का मूल उद्धृत कर के यहां प्रमाण में प्रवेश करैं तौ ग्रंथ के बहुत बढ़ जाने का भय है । अतएव हम मेजर रैवर्टी साहब की एक टिप्पणी को उद्धृत कर प्रमाण में इस अभिप्राय से देते हैं कि हमारे पाठकों को इस विषय का अनुभव एक थोड़ी सी पंक्तियों से ही हो जाय । नीचे लिखी थोड़ी सी पंक्तियें केवल यही नहीं सिद्ध करती हैं कि चंद कवि पृथ्वीराजजी के समय में हुआ था परंतु रासे में लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेर फार के साथ सिद्ध करती हैं ।

(मेजर रैवर्टी साहब कृत तबकात नासरी पृष्ठ ४८६)

"हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तान्त लिखते हैं कि उसी को अब्बुलफजल ने और जम्मू की तवारीख वाले ने भी थोड़े से फरक के साथ वर्णन किया है—

"यद्यपि फ़ारसी इतिहास वेत्ता लिखते हैं कि राय पिथोरा तलावरी (तराई)

ना संसार। सातयें दिन आइ जदुपति कियो आप उधार॥ दियौ (८) चष दै कही

पर लड़ाई में मारा गया और मुईजुद्दीन दमयक में एक खोखर के हाथ से मारा गया कि जो इसी काम के लिये उतारू हो रहा था, और ऐसे ही वृत्तान्त का अवलंब तबकात अकबरी और फरिश्ता के ग्रंथकर्त्ताओं ने किया है, तथापि हिंदू भाटों के मुख जुबानी वर्णन से, कि जो प्रत्येक नामांकित साखे की ख्यातों के भंडार हैं, और जो पीढ़ियों तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरे को उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गया है कि राव पिथोरा के लड़ाई में कैद हो जाने और गज़नी को ले गये पीछे एक चंद जिसे कोई चांदा कर के भी लिखते हैं कि जो राय पिथोरा का स्तुतिपाठक और विश्वासी सहचर था और कोई २ ग्रंथकर्त्ता उसे राय पिथोरा का कविराज करके भी लिखते हैं, वह अपने आपदा-ग्रस्त स्वामी की खबर लेने को गज़नी पहुंचा वह अपने अच्छे प्रयत्नों के बल से प्रबंध कर सुलतान मुईज़ुद्दीन की सेवा में प्राप्त हुआ और बंदीग्रह में राय पिथोरा के साथ बातचीत करने में भी सफल हुआ। यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुवे और एक दिन चंदा ने अपने छलबल के द्वारा सुलतान के मन में राय पिथोरा की वाण विद्या में परम कुशलता देखने की नितान्त इच्छा उत्पन्न कियी और उस को चंदा नें इतनी सराही कि सुलतान का मन उसे देखे बिना न रहने लगा निदान बंधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उस से उस की वाण विद्या की परम कुशलता दिखाने की विनती कियी गई। उस के हाथ में एक धनुष और बाण दिये गये। उस में अपनी स्वीकृत युक्ति के अनुसार जो निशाना सुलतान नें नियत कराया था उसे छोड़ कर खास सुलतान के ही बाण मारा कि वह वहीं मर गया और सुलतान के पासवालों ने राय पिथोरा और चंदा को काट कर टुकड़े २ कर डाले।

जम्मू की तवारीख वाला लिखता है कि राय पिथोरा अंधा कर (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीग्रह से बाहर लाया गया और उस के निज धनुष और बाण उसे दिये गये। यद्यपि वह अंधा था तथापि उस ने बाण चढ़ा कर और साध कर सुलतान के शब्द के अनुसंधान और चंदा की सूचना के अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतान के जा कर लगा। बाकी का वृत्तान्त तदनुसार ही है।

सिसु सुनु मांग बर जो चाहू। हौं कह्यो प्रभु भगत चाहत सत्रु नास सुभाइ॥ दूसरो ना रूप देषो देषि राधा स्याम। सुनत करुनासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम॥ प्रबल छद छिन बिप्र कुल तें सत्रु ह्वै है नास। अषित (९) बुद्धि बिचारि बिद्या-मान माने मास॥ नाम राषे मोर सूरज दास सूर सुस्याम। भये अंतरध्यान बीते पाछली निस जाम॥ मोहि पनसो (१०) इहै बृज की बसे सुष चित थाप। थपि (११) गोसाई करी मेरो आठ मद्धे छाप॥ बिप्र प्रथजगात को है भाव भूर निकाम। सूर है नंदनंद जू को लयो मोल गुलाम॥ ११८॥

अर्थ सुगम सूर आपन बंस बरनत है॥ ११८॥

इति श्री पद कूट सूरदास टीका संयुक्त संपूर्णम्।

टिप्पणी—सरदार कवि ने कईएक स्थान इस भजन में पाठांतर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है।

(१) शुभ में (२) पृथ्वीराज (३) रंतभौर (४) सुषअवदात (५) क्रूतचंद (६) षष्टम (७) साहि से सब (८) दिव्य (९) अषिल (१०) मनसा (११)

श्री सूरदास के विषय में ग्रंथ के अंत में लिखा जायगा।

उपसंहार (अक्षर) क ।

इस टीका के सिवाय और भी कुछ भजनों का अर्थ सरदार कवि ने लिखा है वह मूल अर्थ समेत नीचे प्रकाश किया जाता है।

राग रामकली ।

सारँग सारँगधरहि मिलावहु । सारँग बिनय करत सारँग सों सारँग दुष बिसरावहु॥ सारँग समै दहत अति सारँग सारँग तिनहिं दिषावहु। सारँग-पति सारँग धर जैहै सारँग जाइ मनावहु ॥ सारँग चरन सुभग कर सारँग सारँग नाम बोलावहु । सूरदास सारँग उपकारिनि सारँग मरत जिवावहु ॥१॥

नाइका की उक्ति सषी सों। सारंग कहि * रामपूर ताको नाव बरही श्रेष्ठ हिये की ॥ सारंग कहैं गिरि ताके धरवैया कृष्ण ताको मिलाव। सारंग आकास ताको नाम अनंत सो अनंत बिनय करत हौं । सारंग विष्णु तिन की सौंह तोकों सारंग सूर्ज तिन को नाम तपन जो काम की ताप है सो बिसराय दे। सारंग रात्री तामें दहै है। अति सारंग हृदय

---

* मुझे मालूम होता है कि 'सारंग काहि रामपूर ताको नाव बरही'। बनारस की और लखनौ दोनों स्थान की छपी हुई पुस्तक में है परंतु यह अशुद्ध है यहां ऐसा चाहता सारंग काहिए मयूर ताको नाव बरही ।

कमल जिन को जो सारंग कृष्णचंद्र हैं सो दिपावहु सारंग दीप ताकी पति दीप्ति तासों घर जैहै। यह लोकोक्ति है कि दिया घर जैहै। सारंग नेह मनावहु नाम मिलावहु सारंग नाम कमल है कर चरन जिन के सारंग नाम भ्रमर सो अलि बुलावहु सारंग मृग ताको नाम कुरंग है कुरंग की उपकारिनि सारंग जो मैं तेरी सषी हौं मरति हौं जियावहु ॥ १ ॥

पद्मिनि सारँग एक मँझारि। आपुहि सारँग नाम कहावै सारँग बरनी वारि॥ तामै एक छबीली सारँग अध सारँग उनहारि। अध सारंग परि सकलई सारँग अध सारंग बिचारि॥ तामहि सारँग सुत सोभित है ठाढी सारँग भारि। सूरदास प्रभु तुमहू सारंग बनी छबीली नारि॥ २ ॥

पद्मिनी इति। सषी की उक्ति नाइक सों। सारंग मेघ तासु नाम धाराधर ताके मध्य के बरन राधा सों राधा आप वो सारंग स्त्री नाम कहावै जापै सारंग चंद सो मुष आधो चंद सों सो आधा जो है चंद्रमुष तापै सकलै सारंग जो हैं राकाससि सो आधी जानो जाय है ताही मुष में सारंग सुत हरिन सावक तद्वत नयन सो है ठाढी सारंग कहै सोभा के भार सों सूरदास प्रभु तुमहू सारंग सषी कहै हैं कि हे प्रभु तुमहू रंगीले हौ नारिहु छबीली है तातें मिलो ॥ २ ॥

बिराजत अंग अंग रति बात। अपने कर करि धरे बिधाता षट षग नव जलजात॥ है पतंग ससि बीस एक फनि

बिधि रंग धातु । द्वै पकबिंब
बज्र कन एक जलज पर थात ॥
बान एक चाप चपल अति चिबुक
बिकात । द्वै मृनाल मातुल
कदली षंभ बिन पात ॥ एक
केहरि एक हंस गुपुत रहै तिनहि
लग्यो यह गात । सूरदास प्रभु तुम्हरे
मिलन कौं अति आतुर अकुलात ॥ ३ ॥

टीका — बिराजत इति । सषी की उक्ति नाइका सों ताके अंग अंग में रति जो है प्रीति जाही की बात कहैं वारता सोहैं है । अथवा बात कहै पौन पौन कहैं मिलाप आपने हाथ करि बिधाता ने बनायो है छ पछी औ नव कँवल द्वै सूर्य बीस चंद एक नाग चारि रंग धातु द्वै कुंदुरू एक कमल पर बसत हैं एक बान एक चाप अति चंचल । वामें चपल चित्त बिकाय जात है औ कमल दंड द्वै औ द्वै मत्तवारे द्वै कदली के षंभ बिन पात एक सिंह औ एक हंस-गुप्त तेही गात में हैं भौंर बार नैन षंजन सुक नासिका पिक स्वर कंठ कपोत हंस गति ए छ पछी । चरन उरोज कर मुष नेत्र ए नौ कमल तरवन द्वै सूर्य बीस नष चंद चोटी सर्प सुवर्ण रंग अंग और रजत रंग हास ताम्र रंग कर लालिमा लोह रंग केस द्विकुंदुरु अधर दंत बत्तीस बज्र कन एक कमल में एक दृष्टि अथवा तिलक चाँप भौंह बाहु द्वै कमल दंड मतवारे द्वै जंघ एक सिंहकटि एक चाल सो तुम्हारे मिलन के वास्ते अत्यन्त आतुर ह्वै घबडाय है ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ।

मनसिज माधवे मानिनिहिं मारिहै ।
चोटि पर लव अरततपर मौत्र निर-

षिनि मुष कौं तारिहै॥ किसलय कुसुम कुंत सम सायक पावक पवन बिचारिहै। द्रुमवल्ली पहं दीप जुगवनि जननि अनल चिय ज़ारिहै॥ मवरजु एक चक्रत चपरि कर भरि बंदुष षग डारिहै। पुनि पुनि बाज साज सुनि सुंदरि हसित तिनहिं देषि मारिहै॥ बिरह बिभूति बढी बनि तव प्रसीस जटा बन बारिहै। मुष ससि सेष रह्यौ सित मानौ भई तभो उन हारिहै॥ जौन इते पर चलहु कृपानिधि तौ वह निज कर सारिहै। सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि तुम तजि काहि पुकारिहै॥ ४॥

मनसिज इति। उक्ति सषी की नाइक सों कि मनसिज जो काम सो मान को मारिहै। त्रोट कही समै में। सूच्याभिन्ने पद्मपत्रे त्रुटीरिति विधीयते सूची जो सूई ताकरि पुरइन को पात बेध्यो जाय तितने काल कौं। त्रुटि कहत हैं कइक त्रुटि को लव होत है। अरु कइक लव को निमिष होतहै। अरु कैयक पल की घरी होति है सो त्रुटि लव के अंतर में ततपर होकर मौ उर कही मौन बाजा जे मौन ते बाज भई तन कोप तें काल में मारि है अथवा प्रलय की बराबरि होय है। अर ततपर अर कहैं हठ ततर कहैं जुक्त ताकी मोरनि कहैं मेरनि तासों मुष तारिए कहै

छोडिए। किशले कहे पत्र कुसुम फूल ते दोनों कुंत बरछा सायक तीर समान अरु पवन पावक समान हैं द्रुमवल्ली अरु दीपए जे जुग दोय हैं। सो अनल जो अग्नि सो जारि है मौर कहैं बउर ता रूपी जो बधिक सो चवरिकै पक्षी की बानी रूप अवाज कारि है। अरु पुन पुन बसंत में जो बाजा बजै है सोई जो बाजि घोरा ता पर चडि कै बिरह बिभूति जो बढी है। तासो बिरहिनी मानिनी जेहै। तिन के सीस के जे बार हैं जेऊ होगये हैं जटा अरु मुष जो है ससि तासों ससि सेषर अनुमान करो है। जौ इतने पर चलो तो वह निज कारि सारि है। हे रसिक सिरोमनि जौ तुम न चलिहौ तौ वह कौन को पुकारि है ॥ ४ ॥

राग नट।

रसना जुगल रसनिधि बोलि। कनकबेलि तमाल अरुझी सुभुज बंध अषोलि ॥ भृंगुजूथ सुधाकरनि मनो सघनम आवत जात। सुरसरी पर तरनि-तनया उमगि तटन समात ॥ कोकनद पर तरनि तांडव मीन षंजन संग। कीर तिल जे सिषर मिलि जुग मनो संगमरंग ॥ जलद ते तारा गिरत मनो परत पै निधि माहिं। जुग भुजंग प्रसन्न सुष ह्वै कनकघट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिला रव बिबस ह्वै दे दान। बिकच कंज अनारंगिन पर लसित करत

पै पान ॥ दामिनी थिर घनघटा बर कबहुं है एहि भांति। कबहुं दिन उद्योत कबहूं होत अति कुहुराति ॥ सिंह मध्य सनाद मनिगन सरस सर के तीर। कमल मन बिन नाल उलटै कछुक तीछन नीर ॥ हंस साषा सिषर पट चढि करत नाना नाद। मकरनि जु पद निकट बिहरत मिलन अति अहलाद ॥ प्रेम हित करि षीरसागर भई मनसा एक। स्याम मनि के अंग चंदन अमी के अबिसेक ॥ सूरदास सषी सभा मिलि करत बुद्धि बिचार। समै सोभा लगि रही मनो सूम को संसार ॥ ५ ॥

रसना इति। उक्ति सषी की सषी सों। जुगुल रस निधि की जो है रसना सो बोलती है कनकबेलि जो नायका अरु तमाल जो नायक तासों अरुझी है। सुंदर जो भुजा है तिन सों बांधि के भृंग जो है केस सो सुधाकार मुष तिन में सघन आवत जात है। अरु सुरसरी जो मांग ता में तरनिजा जमुना सो पाटी तटन में नाहीं समाती। अरु कोकनद कमल मुष तामें तन्योना सूर्य सो नृत्य करत है। मीन षंजन रूपी नेत्र तिन के संचमें औ कीर नासिका अरु तिल तिल जल स्वेद सिषर ऊचे पै संगम में रंग करे हैं अरु जल मेघ केस तिन तें तारे मुकुता पै निधि कुच परत है। अरु जुगुल भुज जापक के हाथ प्रसन्न मुष है कनक वट लपटाये

हैं। अरु कनक संपुट कुच कोकिलवानी के बस कै अपने सरीर को दोन करत है। अरु फूलो कंज मुष सों अधर नारंगी रस को पान करत है अरु दामिनी नाइका घन नाइक कबहुं थिर होय है औ कबहूं भूष तन के प्रकास तें दिन होय है अरु केसन के आछादन तें कबहूं अमावस की राति होय है अरु सिंह कटि तामें शब्द करैहै किंकिनी सरस जो नाभी सर ताके तीर में अरु हंस जो नूपुर है सो नायक के कंध सिषर अग्र भाग तापर नाना शब्द करै है। मकर जो मकराकृतकुंडल नायक के सो निज पद श्रवण की जो लहर रूपी लहर है तामें बिहरत है। अथवा नाइका की जो मीन रेष है पदन की सी नायक के श्रवण लहर लों बिहरै है प्रेम के हित के वास्ते क्षीरसागर दोनो की मनसा एक भई है अरु स्याम-मनि के अंग चंदन नायक अंग को चंदन है अवशेष बाकी सो अमृत है सब सषी मिलि ऐसी बिचार करै है सभै सार की सोभा सूर के उर में लगि रही है मानो ॥ ९ ॥

राग बिहागरा ।

लोचन लालच ते न टरे। हरि सारंग सो सारँग गीधे दधिसुत काज जरे ॥ ज्यौं मधुकर बस परे केतकी नहिं ह्वां ते निकरे। ज्यौं लोभी लोभहि नहिं छांड-त यह अति उमगि भरे॥ सनमुष रहत सहत दुष दारुन मृग ज्यौं नहीं डरे। वह धोषे यह जानत है सब हित चित सदा करे ॥ ज्यौं पग फिरि फिरि परत प्रेमबस जीवन मुरछि मरे। जैसे मीन अहार लोभ ते लीलत परे गरे ॥ ऐसे हि

गलुबंधे हरि छबि पर जीवत रहत भिरे । सूर सुभट ज्यौं रन नहिं छांडत जब लौं धरनि गिरे ॥ ६ ॥

लोचन इति । उक्ति नाइका की सपी सों । हमारे लोचन लालच ते ना टरे हरि सारंग कहिये कुरंग सो बींधे है । दधिसुत कहै चंद मुष चंद देपिबे कों जरत हैं आगे सुगम ॥ ६ ॥

राग नट ।

लोचन लालची भये री । सारँगरिपु के रहत न रोके हरि सरूप गिधए री ॥ काजर कुलफ मेलि मै राषे पलक कपाट दये री । मिलि मन दूत पैज करि निकसे बहुरि स्याम पै दौरि गए री ॥ ह्वै आधीन पंच ते न्यारे कुललज्या न नए री । सूरस्याम सुंदर रस अटके है मनो उहंडू हुए री ॥ ७ ॥

लोचन इति । हमारे लोचन लालची भए हैं । सारंग नाम दीपक ताको रिपु पट ताके रोके नाहीं रुके है । आगे सुगम ॥ ७ ॥

राग बिहागरो ।

स्यामरंग नैना राचे री । सारंगरिपु तें निकसि निलज भए परगट ह्वै कर नाचे री ॥ मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर

बजावन हारे। गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावन हारे ॥ चंचलता निर्तनि कटाच्छ रस भाव बतावत नीके। सूरदास ए रीझे गिरिधर मनमाने उनही के ॥ ८ ॥

स्याम रंग इति। हमारे नैनन स्याम के रंग में राचे हैं । सारँगरिपु घूँघुट पट तातें निकसि निलज भये हैं आगे सुगम ॥ ८ ॥

राग बिलावल।

देषो सोभा सिंधु समात। स्यामा स्याम सकल निसि रस बस जागे होत प्रभात ॥ लै पाहनसुत कर सनमुष दै निरषि निरषि मुसुक्यात। अवर जु सुभग बेद जलजातक कनक नीलमनि गात ॥ उदित जराउ पंच तिय रबि ससि किरिनि तहां सुदुरात। चंचल षग बसु अष्ट कंज दल सोभा बरनि न जात॥ चारि कीर पर पारस बिद्रुम आजु अलीगन षात। सुष की रासि जुगुल सुष ऊपर सूरदास बलि जात ॥ ९ ॥

सषी की उक्ति सषी सों। देषो सोभा सिंधु में समात हैं। अथ सोभासिंधु है राधास्याम को मुष स्यामा अरु स्याम सकल रात्री में रसबस होय प्रभात जगे हैं। पाहनसुत दरपन सनमुष देषत हैं तामें यह अचरज है। चार जलजात चंद है दो मुष दो प्रतिबिंब औ कनक नीलमणि के गात चारि दो बिंब दो प्रतिबिब अरु उदित जराऊ भूषन आठो दो तयोना दो कुंडल बिंब के चारि प्रतिबिंब के चारि तिन की जोति सो रबि शशि छबि छपि जाति है। अरु चंचल पक्षी आठ नेत्रन के चारि बिंब चारि प्रतिबिंब। अरु आठ कमल ठोडी मुष ठकुरायन ठाकुर के चारि बिंब चारि प्रतिबिंब तिन की सोभा नहीं बरनी जाति। अरु चारि कीर नासिका दो बिंब दो प्रतिबिंब अरु पारस दसन विद्रुम वोठ सो अलीगन वोठ को काजर-नायक ने नायका नेत्र को चुम्बन कियो तब काजर लगो। अरु वही मुष नायका ने तातें नायक ने ऐसी जो सुष की रासि दूनो के मुष तिन पै सूरदास बलि जात हैं॥ ९॥

राग कान्हरो।

बिधुबदनी अरु कमल तिहारै। सुमनासुत लै कमल सुमंजित धनपति धाम को नाम संवारै॥ तरनि तात बनितासुत ता छबि कमलनि रचि रचि ग्रंथ सँवारै। कमल कमल पर रेष बुतावति सारँगरिपु पाहन गनि ठारै॥ उर हारावलि मेलति कमलनि मनहुं इंदु पारस ढिग पारै। सूरस्याम के नामहि जीतन कमलापति के पदहि बिचारै॥१०॥

बिधु बदनी इति। सषी की उक्ति सषी सों कि हे बिधुबदनी

कमल निहारे है सुमना जो है चमेली ताको सुत जो है तेल ताहि लै कमल मुष में लगाय धनपति कुबेर ताको धाम अलका सो अलक केस सँवारै है। अरु तरनि सूर्य ताके तात कश्यप ताकी स्त्री कद्रू ताके पुत्र पन्नग केस सँवारे है। कर कमल तें गाँठ लगावत अर्थ बेनी गूँथत है। अरु कमल नैन में कमल कर सों काजर देत है। अरु सारंग दीप ताको सत्रु पट पाहन मनी तिन सो गाँथि कै ओढे है उर में हारावलि मेलै है। कर कमलन सों मानों इंदु जो चंद्रमा सोई है । हारावलि अरु पारस कुच तिन के ऊपर पहिरे है ॥ १० ॥

राग सोरठी ।

राधे हरिरिपु क्यौं न छिपावति। मेरुसुतापति ताके पति सुत ताको क्यौं न मनावति ॥ हरिबाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति। नव अरु सात बीस तोहि सोभित काहे गहरु लगावति ॥ सारँगबचन कह्यौ करि हरि कौं सारँगबचन निभावति । सूरदास प्रभु दरस बिना तुव लोचन नीर बहावति ॥ ११ ॥

राधे हरिरिपु इति । हरि सूर्य ताको रिपु तम जो है कोप ताहि काहे नहीं दूरि करै है । मेरुसुतापति महादेव ताके पति विष्णु ताके सुत प्रद्युम्न कहे काम ताहि काहे नहीं मनावै है। हरि बानर ताको बाहन वृक्ष तासु बाहन पृथ्वी ताकी बराबरी मान कों धरि कै अथवा हरिबाहन गरुड ताके बहावन पक्ष तू पक्षा धरि दिढावत। काहे कों दृढावै है नव सात सोरह शृंगार ते तोकोह बिस से लगै है। अरु सारंग बान ऐसे

वचन हरि सों कहै है ॥ अरु सारंग कहै अमृत ऐसे वचन काहे नहीं भावत हैं । तो विन नायक नैन ते नीरे बहावै है ॥ ११ ॥

राग नट ।

राधे हरिरिपु क्यौं न दुरावति । सैलसुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति ॥ हरिवाहन सोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति । द्वै अरु चारि छहौ वै बीते कहि क्यौं गहरु लगावति ॥ नौ अरु सात एजु तहँ तहँ सोभित ते तू कहि क्यौं दुरावति । सूरदास प्रभु तुमरे मिलन कौं श्रीरंग रंग भरि आवति ॥१२॥

राधे हरिरिपु इति । सषी की उक्ति हरि कहैं चंद्रमा को रिपु कमल ताहि क्यौं नहिं दुरावै है ॥ चंद बदन कों षोलि कै सैलसुता नदी तिन को पति समुद्र ताकी सुता सीप ताको पति स्वाती को जल । ताको सुत मुकुता जाको अर्थ बिछोह ॥ ताहि मनावति है अथवा सैलसुतापति समुद्र सुतापति विष्णु सुत काम हरि जो है सूर्ज ताको वाहन अश्व ताकी सोभा घूंघुट ताकौं धरि कैसे सुहावै है। द्वै अरु चारि छः छ बारह महूरत बीते अब क्यौं देर करै है ॥ नव सात सोरह सिंगार जिन अंगन माहिं सोभित होत हैं तिन्हैं क्यौं छपावै है ॥ १२ ॥

राग सारँग ।

राधे हरिरिपु क्यौं न दुरावति । सारँगसुतवाहन को सोभा सारँग सुतज बनावति ॥ सैलसुतापति ताके

सुतपति ताके सुतहिं मनावति । हरि-बाहन के मीत तासु पति ता पति तोहि बुलावति ॥ राकापति नहिं कियो उदो सुनि या समये नहिं आवति । बिबिधि बिलास अनंद रसिक सुष सूर-स्याम तेरे गुन गावति ॥ १३ ॥

राधे हरिरिपु इति । सपी की उक्ति की राधे हरि विष्णु तिन को रिपु मधु मधु कहैं मान सो क्यौं न दुरावति। सारंग जल ताके सुत चंद्रमा ताको बाहन मृग ताकी सोभा है । जिन में ऐसे नेत्र तिन में सारंग दीप ताको सुत काजर ताहि क्यौं नहीं लगावति । सैलसुता नदी ताके पति समुद्र ताको सुत चंद्रमा ताको पति सूर्य ताको सुत सनीचर तासु नाम मंद सो मंदता मनावति है हरि इंद्र तासु बाहन मेघ ताको मीत जल ताको पति बरुण ताको पति कृष्ण सो बुलावै है ॥ १३ ॥

राग नट ।

राधा तें बहु लोभ करयौ । लावनरथ ता पति आभूषन आनन ओप हरयौ ॥ भृकुटि कोदंड अवनि धरि चपला बिबस ह्वै कीर अरयौ । पिक मृनाल अरि ता अरि रूप सम ते बपु आप धरयौ ॥ जल-चर गति मृगराज सकुचि जिय सोच न जाइ परयौ । सूरदास प्रभु को मिलि भामिनि निसि सब जात टरयौ ॥ १४ ॥

राधे तें बहु इति। हे राधे तें बहुत लोभ क्यौ है। लावनरथ बैल ताके पति महादेव ताको भूषन चंद्रमा की सोभा मुष सो हरि लीन्हीं है। भृकुटी तें कोदंड बेनी तें अवनीधर सर्प छबि तें चपला नाशिका तें कीर बिवस होय गये हैं॥ बानी तें पिक भुज तें मृनाल अरु गति तें गज अरु ताको अरि ग्राह सो ग्रहन किये दृगन तें। जलचर मीन अरु कटि तें सिंह ए सकुचि करि जिय में जरे जाय हैं॥ १४॥

राग नट।

कहि पठई हरि बात सुचित दै सुनि राधिका सुजान। तेजु बदन झांप्यो झुकि अंचल इहै न दुष मेरे मन मान॥ यह पै दुसह जु इतनेहिं अंतर उपजि परै कछु आन। सरद सुधा ससि की नव कीरति सुनियत अपने कान॥ षंजरीट मृग मीन मधुप पिक कीर करत है गान। बिद्रुम अरु बंधूक बिंब मिलि दंत कबिन छबि दान॥ दाडिम दामिनि कुंद-कली मिलि बाढ्यौ बहुत बषान। सूर-दास उपमा नछचगन सब सोभित बिन भान॥ १५॥

कहि पठई इति। सषी की उक्ति नायका सों। जो हरि नें कहि पठई सो चित दै सुनो हे राधे जो तैं बदन झुकि कैं झाँप्यो है सो दुष मेरे मन में नाहीं है परंतु यह दुष है सरद को जो ससि है ताकी नवीन कीरति अपने कान तें सुनि परै है तो मुष प्रकास बिन अरु षंजरीट मृग

मीन मधुप जे गुन गान करत हैं तो दृग षुले विना अरु विद्रुम दुपहरिया कुंदुरु ये मिलि कै कविन कों छबि को दान देत हैं तेरे अधर के रंग फैले बिन दाडिम दामिनि कुंदकली इन को बषान होत है तो दशन की दमक बिना अरु नक्षत्रन के गन सब सोभामान होत हैं तों भूषन भानु बिन॥१५॥

राग सारँग।

रही दै घूंघुट पट की ओट। मनो कियो फिरि मान मवासो मनमथ बिकट कोट॥ नहसुत कील कपाट सुलच्छन दै दृग द्वार अकोट। भीतर भाग कृष्ण भूपति को राषि अधर मधु मोट॥ अंजन आड तिलक आभूषन सचि आयुध बड छोट। भृकुटी सूर गही कर सारँग निकर कटाछनि चोट॥ १६॥

रही दै इति। सषी की उक्ति नाइका प्रति। कै हे राधे तू जो घुंघुट की पट की ओट कर रही है सो कैसी है मानो मानरूपी जो गढ विकट है तामें मनमथ बैठो नह के अग्र भाग तें पट पकरे है सोई कील है। असुलछन मान को लछन सोई कपाट दयो है॥ दृग द्वार विषे अकोट कोट को भीतर को कोट अरु भीतर के भाग में कृष्ण जो भूपति है तिन को भाग जो अधर रस ताकी मोट कहैं गठरी अंजन अरु आड अरु तिलक अरु और आभूषन छोटे अरु बडे ते करे हैं जिन हथियार अरु भृकुटी कुटिल जो है सोई सारंग कमान औ कटाक्ष जो है सोई बान लगाइ बैठो है॥ १६॥

राग बिलावल।

सारँगरिपु की ओट रहे दुरि सुंदर

सारंग चारि ॥ससि मृग फनिग धुनिग दोउ अंग अंग सारंग की अनुहारी ॥ तामें एक अवर सुत सारंग बोलक बहुरि बिचारि। परकृत एक नाम है दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि॥ ढांकति कहाँ प्रेम हित सुंदरि सारँग नेक उघारि। सूरदास प्रभु मोहे रूपहि सारँग बदननिहारि॥१७॥

सारंग इति। सषी की उक्ति नाइका सों। सारंग दीप ताको रिपु पट ताकी ओट दुरि रहै हैं चारि सारंग ससि १ मृग १ फनिग १ धुनिग १ सो तिन में जो दो सारंग हैं ते अंग अंगी के अनुहार हैं। मुष मृग अंग नेत्रन ने सारंग जो कमल ताकी अनुहार मुष कमल बरनन है। औ द्दगन को कमल बरनन है औ तामें एक और सारंग को सुत है सारंग नाम कोकिला तदवत वाणी सुत कहने से अति मधुर बोलै है अरु परकृत एक सर्प बेनी सो तामें उपमा दोनों की है सर्प अरु सर्पिनी की सो ढाकत काहे है ए चारों चार सारंगऊ उघार सूरदास मोहै है तिन को सारंग नाम चंद तिन को निहार॥ १७॥

राग बिलावल।

तैं जु नील पट ओट दियोरी। सुनि राधिका स्यामसुंदर सों बिनहि काज अति रोस कियोरी॥ जलसुत बिंब मनहु जलराजत मनहुं सरदससि राहु लियोरी। भूमिघिसनि किधौं कनकषंभ चढि मिलि रस ही रस अमृत पियोरी॥

तुम अति चतुर सुजान राधिका कत राष्यौ भरि मानु हियोरी । सूरदास प्रभु अंग अंग नागरि मनो काम कियो रूप बियोरी ॥ १८ ॥

तैं जो इति । सषी की उक्ति नायका सों । हे नायके तैं जो नील पट ओट कियो है अरु बिन अपराध रोस कियो है नायक सों नीलपट कैसो लगै है मानो जलसुत कमल ताको बिंब जल में परो है कै सरदचंद राहु ने ग्रस्यो है अरु भूघिसन सर्प अथवा जमुना सो कनकषंभ पर चढि कै रसे रसे मानो अमृत पान करै है तू अति चतुर है काहे को मान हीं में भरि राष्यो है । सूर प्रभु अंग अंग नागर प्रवीन कैसे है जैसे दूसरो काम ॥ १८ ॥

राग नट ।

राधे तेरे रूप की अधिकाई । जो उपमा दीजे तेरे तन तामें छबि न समाई ॥ सिंघ सकुचि सर बिथा मरति दिन बिन सोइ नीर सुकाई । ससि उर चढत प्रेम पावक परि बंक कुसुम रहे कुम्हिलाई ॥ इभ तूटत अरु अरुन पंक भए बिधिना आन बनाई । कद्रुज पैसि पताले लै रहे षगपति हरि बाहन भये जाई ॥ हंस दुरयौ सर दुरयौ सरोरुह गज मृग चले पराई । सूरदास

बिचारि देषि मन तो रसना पिक रही लजाई ॥ १९ ॥

राधे तेरे इति। हे राधे तेरे यह रूप की अधिकाई है जो उपमा दीजिये ताकी छबि न्यून हो जाति है। तेरी कटि देषि सिंह सकुचैहै सरोवर तेरी नाभि देषि बिथा भरैहै नीर सुषे जात हैं चंद्रमा घटि जात है औ हिये में आग जरै है तेरो मुष देषि चंपक को फूलत न देषि कुँभिलाय गयो है इभ जो है हाथी सो तेरी गति देषि लज्जित होत है। अरु पंक मै जो भये है कमल ते तेरे कर देषि लजित भये। कद्रुज जो सर्प सो तेरी बेनी देषि सिकुरि गये हैं॥ अरु षगपति जो है गरुड सो अपने वर्ग की पराजय देषि सुक कपोत कीर नासिका कंठ ते संकोच मानि हरिबाहन भयो है * अरु हंस सर मैं दुरे हैं। अरु कमल नील अरु मृग नैन देषिं पराय गये हैं॥ सो तू बिचारि रसना के रस तें पिक लजाइ गए हैं॥ १९ ॥

राग सारँग।

राधे यह छबि उलटि भई। सारँग ऊपर सुंदर कदली तापर सिंह ठई॥ ता ऊपर है हाटक बरनो मोहन कुंभ मई। तापर कमल कमल बिच बिद्रुम तापर कीर लई॥ ता ऊपर है मीन चपल हैं सउरति साध रही।

---

* यद्यपि बनारस और लखनौ की छपी हुई पुस्तकों में ऐसे ही है पर यहां ऐसा रहता तो अच्छा होता—अरु षगपति जो है गरुड सो अपनेवर्ग की पराजय देखि हरिबाहन भयो है सुक कपोत कीर नासिका कंठ ते संकोच मानि अरु हंस सर में दुरे हैं।

सूरदास प्रभु देषि अचंभो कहत न परत कह्यौ ॥ २० ॥

हे राधे यह छबि इति। सषी की उक्ति नायका सों। हे राधे यह छबि उलटि भई है। सारंग कमल तापर कदली कमल चरन कदली जंघा तापर कटि सिंह तापर द्वै हाटक के कुंभ कुच तापर कमल मुष ताके बीच में विद्रुम अधर ताके उर द्वै मीन नैन ताके सुमिरन मै लालसा नाहीं पूरन होत ऐसो अचंभो देषि कहीं नहीं जाइ है ॥ २० ॥

राग बिलावल।

जलसुत प्रीतम सुत रिपु बंधव आयुध आपुन बिलष भयोरी। मेरुसुतापति बसतु जु माथे कोटि प्रकास रिसाइ गयोरी ॥ मारुतसुतपतिअरिपुरबासी पितु बाहन भोजन न सोहाई। हरि-सुतबाहनअसनसनेही मानहु अनल देह दौलाई ॥ उदधिसुतापति ताकर बाहन तिहि कैसे समुझावै। सूरस्याम मिलि धर्मसुवनरिपु ता अवतारहि सलिल बहावै ॥ २१ ॥

सषी की उक्ति। जलसुत कमल ताको पीतम सूर्य ताको सुत करन ताको रिपु अर्जुन ताको बंधु भीम ताको अस्त्र गदा कहैं रोग बिलषि करि भयो है। अरु मेरु सुतापति महादेव तिन के माथे में बसत्त हैं।

चंद ताको प्रकास हैं सो तेरे मुष तें गयो है। मारुतसुत हनुमान ताके पति राम ताको रिपु रावन ताकी पुरी लंका तामे बसत है । अगस्त्य तिन को पिता कुंभ ताको बाहन जल सो जल औ भोजन नाहीं सुहाय है। हर कहैं महादेव तिन को पुत्र स्वामिकार्तिक ताको बाहन मोर ताको असन सर्प ताको हित पवन सो आगि सी जरावै है। उदधि सुतापति विष्णुं ताको बाहन गरुड ताको नाम वैनतेय बचन ते कैसे समुझाऊ धर्मसुवन युधिष्ठिर ताको बैरी दुर्योधन ताको अवतार दुस्सीलता सो आस बहावै है ॥ २१ ॥

उठि राधे कत रैनि गवाँवै। महिसुतगति तजि नल सुत तित तजि सिंधुसुतापतिभवन न भावै ॥ अलिबाहन को प्रीतम बाला ता बाहन रिपु ताहि सतावै। सो निवारि चलि प्रानपियारी धर्म सुनहि मति भावन पावै ॥ सैलसुतासुतबाहन सजनी ता रिपुता मुष सबद सुनावै। सूरदास प्रभु पंथ निहारत तोहि ऐसी हठ क्यों बनि आवै ॥ २२ ॥

उठि राधे इति। सषी की उक्ति। हे राधे रैनि काहे कों गंवावै है महिसुत वृक्ष ताकी गति जड जलसुत जोक ताकी गति ढिठाई ताको छोडि सिंधु सुतापति कृष्ण तिन को घर तोहि नाहीं भावै है । अलि भ्रमर ताको बाहन कमल ताको पीतम समुद्र ताकी बाला गंगा ताके बाहन महादेव तिन को रिपु काम सो ताकों सतावै है हे प्रानप्यारी सो तूं निवार धर्म जामें नहीं है ऐसो को दुर्योधन ताकी मति मान सोई भावै

है सैलसुतासुत षडानन तिन को बाहन मयूर ताको रिपु सर्प ताके मुष में है विष सो विष बचन सुनावै है ॥ २२ ॥

राग सारंग।

जिनि हठ करहु सारँगनैनी। सारँग ससि सारँग पर सारँग ता सारँग पर सारँगबैनी ॥ सारँग रसन दसन गुनि सारँग सारँगसुतहग निरष निपैनी। सारँग कहौ सुकौन बिचारौ सारँगपति सारँग रचि सैनी ॥ सारँग-सदनहि ले जु बरुन गइ अजहुं न मानति गति भइ रैनी। सूरदास प्रभु तुव मग जोवै अंधकरिपु ता रिपु सुषदैनी ॥ २३ ॥

जिनि हठ करो इति। उक्ति सषी की नायका सों। हे सारंगनैनी मृगनैनी। सारंग कमल चरन तिन पैं ससि नष सारंग ससि अरु सारंग सिंह ताकी सी गति ता पर फेरि सारंग कटि ता पर सारंग सर नाभी हे सारंगबैनी पिकबैनी सारंग नाम जल तासु नाम सुधा सी है रसनी अरु सारंग कही बिजुरी तदवत गुन है दसन में अरु सारंग कही मृग ताके सुत के गुन हैं द्गन में। अरु सारंग कहे अलि नाम सषी ताकों काहे नहीं विचारै है। सारंगपति जो कृष्ण हैं सो सारंग कमल ताकी सेज बिछाय बैठे हैं सारंग कही चंद ताहि बारुनी कहें पछिम दिसा ले गई अंधकरिपु शिव ताको रिपु काम ताके सुष की दीबे वारी हौ ॥ २३ ॥

राग नट।

देषे चारि कमल एक साथ। कमलहि कमल गहे सोवति है कमलहि

मध्य समात ॥ सारँग पर सारँग षेलत है सारँग ही सों हँसि हँसि जात । सारँग स्याम औरहू सारँग सारँग सों करै बात ॥ अरि सारंग राषि सारँग को सारँग गहि सारँग को जात ॥ तौलें राषि सारँग सारँग कों सारँग लै आऊँ हाथ । सोइ सारँग चतुरानन दुर्लभ सोइ सारँग संभु मुनि ध्यात ॥ सेवत सूरदास सारँग कौ सारँग ऊपर बलि बलि जात ॥ २४ ॥

देषिये चार कमल इति । सषी की उक्ति सषी प्रति । हे सषी आज चार कमल देषु नायका को कुच कमल दो औ कृष्ण के कर कमल दो अरु कमल को कमल गहे ते जो कृष्ण के कर कमल जिन्हे कुच कमल गहे हैं तिन करन को राधा के जो कर कमल है ते गहि कै रोकत हैं कमल कर कमल में समान है जुदे नाहीं जाने जात अरु सारंग नाम चद्रबदन कृष्ण को सो राधा के चंदबदन पै पेलै है अरु ताही सारंग मुष सों हंसि हंसि जात है अरु सारंग जो स्याम कमल नेत्र सों औरहू सारंग के हैं लाल कमल भये हैं औ सारंग जो कृष्ण के कमल नयन हैं तिन सों बातें करे हैं । कहैं इसारा करै हैं अरु सारंग अरि जो पट ते की ओट तू राषु नायक नायका को काहे सारंग जो रात्री औ सारंग जो चंद ताको लै कै गयो चाहै है तौ लों राषु । सारंग नाम सषी सारंग दीप को जौलों सारंग नाम नेह लै आऊं जैसा रंग राधाकृष्ण चतुरानन ब्रह्मा तिन कों दुर्लभ है जिन सारंग कों संभु मुनि ध्यान धरे हैं तेई

सारंग को सूर निति ध्यावै हैं औ सारंग जे चरन कमल तिन पै बलि बलि जाइ है ॥ २४ ॥

हरि उर मोहनी बेलि लसी । ता पर उरग ग्रसित तब सोभित पूरन अंस ससी ॥ चाँपति कर भुज दंड रेष गुन अंतर बीच कसी । कनक कलस मधु-पान मनौ कर भुज निज उलटि धसी ॥ ता पर सुन्दरि अंचर झांप्यौ अंकित दंस तसी । सूरदास प्रभु तुमहिं मिलत जनु दाडिम बिगसि हसी ॥ २५ ॥

हरि उर इति । उक्ति सषी की हरि श्रीकृष्ण तिन के उर पै राधा जो है मोहन बेलि सोभै है । तो मोहन बेलि के ऊपर उरग जो है बेनी सो पूरन ससि मुष ताको ग्रसे है चांपै है ताको गुन सूत्र सो अंतर तर के बीच में कसी है सो मानो कनक कलस जो कुच हैं तिन की मधु पान करि कै निज भुज में धंसी उलटि कै । तापै सुंदर अंचल जो ढांप्यो है सो दंसत सी अंकित कहै जाहिर होय है सो सूरदास प्रभु के मिलत न मानों दाडिम जो अनार सो बिगसो ऐसी हंसी है ॥ २५ ॥

उर पर देषियत ससि सात । सोवत हुती कुंवरि राधिका चौंकि परी अध-रात ॥ षंड षंड होइ गिरे गगन ते बासपतिन के भ्रात । कै बहु रूप किये

सारँग ते दधिसुत आवत जात॥ बिधु बिहुरे बिध किए सिपंडी सिव मैं सिव सुत जात। सूरदास धरै को धरनी स्याम सुनो यह बात ॥ २६ ॥

सषी की उक्ति नायक सों। उर परेति। देषिये ससि सात को अर्थ ससि १ सात ७ आठ कहे नाग कहे केस तें करौट क्रिया सों उपर पर परे हैं तासों सर्प्प भय तें राधा चौंकि परी आधी राति मैं। गगन सीस तातें षंडै षंड कहें अनेक भाग ह्वै गिरे। वासपति नाग तिन के भय है मानो सो वह रूप की मारग में दधिसुत चंद चंद कहे मुष तापे आवे है। बिधु कहे मुष ताके बिषे बिहरे जे वार ते सिपंडी कहे मयूर ताकी बिधु किये है। अर्थात् मोर चंद्ररूपी मुष करे हैं औ सिव जो उरोज तिन में सिवसुत कहे स्वामकार्तिक जात हैं। हे स्याम ऐसी धरन को न धरि सकै अर्थ कोई न। अथवा ससि कहे १ सात तो एक के ऊपर सात ऐसे करि कै सत्रह सत्र नाम रिपु सुत पत्नी राधिका स्वप्न में देषि चौंकि परी। ताके दुष सों षंडषंड कै के गिरे गगन तें। कहे ऊपर तें वासय कहे आंस औ तिन के भ्रात प्रसेदकन कै मानो बहुत रूप करि कै दधिसुत चंदमुष ताकी राह आवत है। जात कहे आंसू। बिधु जो मुष तातें बिहुरे कहे फैले आंसू सो सिपंडी कहे मोरवारी बेसर तामें सिवसुत कहे कितमुष मुष कृत सिव जो है कुच तामें जात है कहे प्राप्त होत है सो हे स्याम यह वात सुनो धरनी छमा सों छमा को कैसे धरै॥ २६॥

राग बिलावल।

आजु बन राजत जुगल किसोर। दसन वसन षंडित मुष मंडित गंड तिलक कछु थोर॥ डगमगात पग

धरत सिथिल गति उठे काम रस भोर। रतिपति सारँग अरुन महा छबि उमगि पलक लगे भोर। स्रुति अवतंस बिराजत हरिसुत सिद्ध दरस सुत बीर॥ सूरदास प्रभु रस बस कीन्हो परी महा बन जोर ॥ २७ ॥

आजु बन इति। सषी की उक्ति सषी सों। आजु बन में राधा कृष्ण राजे हैं। दसन बसन कहै अधर ते षंडित है। मुष मंडित कहै सोभित है औ गंड कहै कपोल ता विषै तिलक थोर राजत है। पग डगमगाइ है सिथिल गति है काम केलि करि भोर उठे हैं रतिपति कहे काम ताकी केलि सों सारंग कहैं नैन सों महा छबि अरुन भये सो उमंग निद्रा सों पलक पलक लगै है औ भोर कहे पुले हैं। स्रुति भूषन है हरि सुत कहे गज मोती सिद्धि सो दरस अमावस्या है ताको सुत अंधकार केस ताकी ओर कहे बीच में ॥ २७ ॥

राग कान्हरा।

सोचति राधा लिषति नषन में बचनिन कहत कंठ जल तास। छिति पर कमल कमल पर कदली पंकज कियो प्रकास॥ तापर अलि सारंग प्रति सारंग रिपु लै किनो बास। तहँ अरि पंथ पिता जुग उदित बारिज बिबि रंगभजो अभास॥ सारंग मष ते परत अंबु ठरि मर

सिव पूजति तपति बिनास । सूरदास प्रभु हरि बिरहा रिपु दाहत अंग दिखावत वास ॥ २८ ॥

सोचत इति । सषी की उक्ति नायक प्रति । कै राधा आज सोचत नष ते भूमि षनत है कंठ गदगद होइ गयो है बात नहीं कहत अचल हो रही है । छिति पर कमल पद तापर कदली जंघा कंज उरोज तापर अलि स्यामता तापर सारंग कपोत कंठ तापर सारंग कमल मुष तापर सारंग रात्री ताको रिपु दुपहरिया को फूल ताके ऊपर पंथ अरि जमुना अलक तापै जमुना के पिता सूर्य सो ताटंक तापर वारिज बिव संष कपोल अरु सारंग पंजरीट नेत्र तिन तें जल गिरै है सो मानों ताप दूर करिबे कों सिव ऊपर ढारे हैं सूरदास प्रभु हरि हे विरह के रिपु वास जो निवास सो अंग को दाहै है ॥ २८ ॥

राग मल्लार ।

सषी री हरि बिन हरि दुष भारी । सिंह को सुत हरभूषन ग्रसि ज्यौं सोइ गति भई हमारी ॥ सिषर बंधु अरि क्यों न निपारत पुहुप धनुष लैकै बिसेष । चच्छुस्रवा उरहार ग्रसी ज्यौं छिन दुति या बपु रेष ॥ घटसुतअसन समै सुत आनन असीगलित जैसे मेत । जलधर व्योम अंबुकन मुंचत नैन होड बदि लेत ॥ जदुपति प्रभु मिलि आनि मिला-

वहु हरिसुत आरत जानि। जैसे हरि करि बंधु प्रगट भये तैसे तुम हरि आरति मानि॥ षटआननबाहन कानन मै घन रजनी तहँ बासी। सूरदास प्रभु चतुर सिरोमनि सुनि चातिक पिक चासी॥ २९॥

सषी री इति। नायका की उक्ति सषी सों। हे सषी हरि बिना हमारे दुष को हरै। सिंह को सुत राहु अरु हर भूषन चंद्रमा को ग्रसे है तैसे हमारी गति भई है। सिषर जो है कैलास ताको बंधु मित्र सिव तिन को अरि काम सो पुष्प धनुष लै कै बहुत पीडा देत है। चक्षुस्रवा सर्पवत उर को हार भयो हैं या वपु सरीर की रेष छीन करे हैं। अरु घटसुत अगस्त ताको असन समुद्र ता बरोबर तो समे भयो है। अरु ताको सुत चंद जैसे जैसे अमी ते रहित होय है तैसो आनन भयो है। जलधर मेघ अंबु जल ताको बरसै है तासों हमारे नेत्र बाजी बदि लैत कै हम अधिक बरसैं हैं जदुपति गर्भ प्रभु कृष्ण मिलावहु। हरिसुत काम ताकी आरति जानि कै जैसे हरि जो विष्णु हैं सो करी जो गज ताके बंधु नाम मित्र हो आरत हरी तैसे तुम हो। षटआननबाहन मयूर कानन में बोलै है औ रजनी में घन भये हैं हे सूरदास प्रभु चतुर सिरोमनि मोको चातिक पिक की त्रास जानो॥ २९॥

राग सारंग।

कहाँ लौं राषिय मन बिरमाई। एकटक सिव धरे नैनन लागत स्याम सुता सुत घन आई॥ हरबाहन दिव बास सहोदर तिहि मिलि उदित सुरछि

महि जाई। गिरिजापतिरिपु नष सिष व्यापतु बसत सुधा पिय कथा सुनाई॥ बिरहिन बिरह आपु बस कीन्हीं लेउ कमल जिमि पाइ छुवाई। बेगि मिलौ सूर के स्वामी उदधितनया पति मिलि है आई॥ ३०॥

सषी की उक्ति नायक सों। राधे के चित के कहा बिरमाइयै नैन एकटक रहै हैं। सिवधर गिरि पलक गिरि के नैन नाहीं लागत हैं। स्याम सुता है रति पुत्र अनुरुध। तन ऊषा नाम प्रात है आयो। हर वाहन बैल ताको नाम गो गो कहिये पछी कों दिव कहिये स्वर्ग ताके बासी कहिये पछी को दिव कहिये स्वर्ग ताके बासी कहिए सुर दूनो मिलि गरुड भये तिन के सहोदर अरुन तिन के उदित भये ते मूर्छित भूमि में गिरै है। गिरिजापतिरिपु काम नष सिष में व्याप्यो है औ सुधा प्रिय पपीहा ताने पीआ सुनायो है औ बिरहिनि कों बिरह ने अपने बस कियो है। ताको कमल जिमि पाय सो छुवाय लेव। हे सूर के स्वामी बेगि मिलो उदधिसुता सीप पति मेघ नाव जीव दान को पुन्य मिलि है॥ ३०॥

राग सारंग।

प्रीति करि काहू सुष न लह्यौ। प्रीति पतंग करी दीपक सौं आपै प्रान दह्यौ॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों संपति हाथ गह्यौ॥ सारंग प्रीति करी जो नाद सौं सनमुख बान सह्यौ। हम जो प्रीति करी माधौ सौं चलतन कछू कह्यौ॥

सूरदास प्रभु बिनु देषे दुषनैनानि नीर बह्यो ॥ ३१ ॥

प्रीति करी इति। नायका की उक्ति। प्रीति करि काहू सुष नाहीं लह्यौ। पाषी दीप सों प्रीति करि आपनो सरीर दह्यौ औ भ्रमर कमल सो प्रीति करि आपै कमल संपुट ते बझ्यौ औ सारंग हरिन सारंग राग सों प्रीति करि सामुहे बान कों सह्यो। औ हम प्रीति जो करी माधो सों सो चलत से कछू नहीं कह्यौ। सो सूरदास प्रभु कृष्ण तिन के बिन देषे दुष करि नैनन सों नीर बहै है ॥ ३१ ॥

राग नट।

ग्वालिनि छांडि देषि रहु परयो। तेरे बिरह बिरहिनी व्याकुल भवन काज बिसरयो॥ कर पल्लव ते पतिरथ पैंच्यो मृग पति बैर करयो॥ पंषीपति सबही सकुचाने चात्रिक अनग भरयो। सारँगसुत सुनि भयो बियोगी हिमकर गरब टरयो। सूरदास सागरसुत हित पति देषत मदन हरयो ॥ ३२ ॥

ग्वालिन इति। हे ग्वालिनि तोकों देषि दोष कहैं बिरोध छोडि षड्यो है। औ करपल्लव तें उडपति ने रथ मृग पैंच्यों है। अपनी पति सों बैर कऱ्यौ है अर्थात् मलीन भयो है। पक्षी और पति कहैं अपनी मरजाद सो सकुचाने हैं एक चातकै अनंग सों भरो है। ताको पी बैन सुने सारंग जो चंद आपै वियोगी भयो है। औ हिम कहैं सीत ताको करिबे को गरब टरि गयो। सागरसुत चंद ताके हित नक्षत्र तिन की पति दीप्ति सों देषतै मदन हरिलयो ॥ ३२ ॥

राग सारंग ।

ऊधो इतने मोहि सँतावत । कारी घटा देषि वादर की दामिनि चमकि डेरावत ॥ हेमसुतापति को रिपु व्यापै दधिसुत रथ न चलावत । अंबूषंडन सबद सुनत ही चित्त चक्रत उठि धावत ॥ कंचनपुरपति का जो भ्राता ते सब बल हिन आवत । संभुसुत को जो बाहन है कुहुकै असल सलावत ॥ जद्यपि भूषन अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास बिरहिन अति व्याकुल षगपति चढ़ि किन आवत॥३३॥

ऊधो इति । उक्ति गोपी की हे ऊधो इतने हमैं सतावत हैं कारी घटा औ दामिनी हेमसुतापति शिव तिनको रिपु काम औ दधिसुत चंद रथ नाहीं चलावत । औ अंबुषंडन पपिहा को शब्द औ कंचनपुरपति रावन ताको भाई कुंभकरन ताकी प्रिया निद्रा नहीं आवति शंभुसुतबाहन मोर कुहुकै है । जे भूषन अंग से बतावो है हो सर्प होय दौरे हैं बिरहनि ऐसी व्याकुल कि षगपति कृष्ण क्यों नहीं आवत ॥ ३३ ॥

राग धनाश्री ।

हरिसुतसुत हरि के तन आहि । ह्याँको कहै कौन की बातैं ज्ञान ध्यान

सुमिरो को काहि॥ को सुष भ्रमर तास जुवती को को जिन कंसहते। हमरे तौ गोपति सुत अधिपति बनिता और रन ते। मोरज रँध्र रूप रुचि कारी चितै चितै हरि होत॥ कबहूँ कर करनीस मैतिलै नेक न मान कै सोत। ता रिपु समै संग सिसु लीन्है पै आवत तन घोष। सूरदास स्वामी मनमोहन कत उप-जावत दोष॥ ३४॥

हरिसुत इति। गोपी की उक्ति। हरि जो पवन तिन के सुत मकर-ध्वज सो नाम काम को हरि के तन में है हां कहै को कौन की बातें। ज्ञान ध्यान समेटि जाय है औ भ्रमर जो ऊधो है तिन के सुष में जो निरगुन ब्रह्म है सो को है औ ताको तिया जो माया है सो को है। औ कंस मारो सो को है। हमारे गोपद जो कृष्ण हैं सोई अधिपति राजा हैं औरन तें हम तें नाहीं बनत कैसे हैं मोरपछ धारन करें हैं हमारे चित्त को हेरत कबहूं हाथ सों हाथ पकरे हमारे मान को बढावे हैं। औ अपमान करै हैं। ता मान को रिपु जो बसंत है तामें बालक लीन्हे घोषन में आवत हम देषे ऐसे जो मनमोहन हैं ते काहे दोष उपजावत हैं॥३४॥

राग धनाश्री।

हरि हम काहे को जोग बिसारी। प्रेमतरंग बूडत ब्रजबासी तरत स्याम

सोइ हारी ॥ रिपु माधव पिक बचन सुधाकर मरुत मंद गति भारी। सहि न सकत अति बिरह त्रास तन आगि सलाकनि जारी। ज्यौं जल थाके मीन कहा करै तउ हरि मेलि अडारी ॥ बिजय अधोमुष लैन सूर प्रभु कहिअहु बिपति हमारी ॥ ३५ ॥

हरि हम काहे कों जोग। गोपी की उक्ति हरि ने हम को काहे को बिसारी। प्रेम की जो तरंग है तामें बूडत बृजबासी पैरत से हारे हैं। माधवरिपु पावस औ पिक बचन औ चंद्रमा औ मंदगति मारुत इन्हैं बिरह की त्रास सों हम नाहीं सहि सकै हैं। इनते आगि जरै है बिजय को उलटो अर्थ अजब तरह के प्रभु कों कहियो की अजब बिपति गोपिन कों है ॥ ३५ ॥

राग धनाश्री।

चौबीस चतुष्पद ससि से बीस मधुकर अंग अंग रस कंद नवीन। तोल निलै मिलि घटा बिबिधि दामिनि मनो षोडस सृंगार सोभित हरि हीन ॥ फिरि फिरि चक्र गगन मैं अमी बतावत जुबती जोग मौन कहुँ कौन। बचन रचन रस रास नंदनँदन ते कहियो पौन

हृदय लीलीन ॥ नंद जसोदा दूषित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गात दिनहीं दिन दुषीन । बकी बका सकटा तिन केसी बछ बृष भए समै अलि बिन गोपाल इति बैर कीन । उद्धव इहाँई मिलाइ परै पाइ तेरे सूरप्रभु आरति हरै भई तन छीन ॥ ३६ ॥

की स्यामता लोह ए तीन चौक चाह बारह प्रतिबिंब ऐसे के चौबीस धातु तीनों का मुष औ प्रतिबिंब छ चंद्र राधा औ सषी के चारि तरयोना औ कृष्ण के दोय कुंडल ए छह तिन का छह प्रतिबिंब ए बारह पतंग कहैं सूर्या द्वादसै मधुप तीनों की छह पुतरी तिन का प्रतिबिंब ए द्वादश अलि मानो कहैं जानो ॥ ३६ ॥

भर भर लेत लोचन नीर । तुम बिना ब्रजराज सुंदर बिरह षेद अधीर ॥ कमल ऊपर धरत छन छन छिरक चंदन चीर । जाल मग ससि रोक राषत मलय मंद समीर ॥ हौं तिहारे पास आई देषि मनसिज भीर । सूरदास सुजान सुंदर मिलि हरहु तन पीर ॥ ३७ ॥

उक्ति सषी की नायक प्रति । नीर नैन में भर लेत बिरह अधीर हो कें उर कमल कुच चंद मलय रोकत ॥ ३७ ॥

राधा बसन स्याम तन चीन्ही। सारंग बदन बिलास बिलोचन हरि सारंग जान रति कीन्ही ॥ सारंग बचन कहत सारंग सो सारंग रिपु दै राषत झीनी। सारंग पान कहत रिपु सारंग कहा कहत लिय छीनी ॥ सुधा पान कर कुच नीको बिधि रह्यो सेष फिर मुद्रा दीन्ही। सूर सुदेस आहि रति नागर भुज आकर्ष बाम कर लीन्ही ॥ ३८ ॥

राधा कों स्याम बसन लिये चीन्ही। सारंग राति के बचन सारंग अली सों कहत सारंग दीप रिपु पट ओट। सारंग कमल कर सारंग रिपु पट छीन लियो। अरु अधर पान कियो कुच मर्दन। आलिंगन मुद्रा कर बाम भुज में भरी ॥ ३८ ॥

राधे दधिसुत क्यौं न दुरावत। हौं जु कहत वृषभाननंदनी काहे कों तू जीव सतावत ॥ जलचर दुषी दुषी वे मधुकर द्वै पंछी दुष पावत। सारंग दुषी होत सारंग बिन तोहि दया नहिं आवत ॥ सारंगरिपु की नेक ओट कर ज्यौं सारंग सुष पावत। सूरदास सारंग

किहि कारन सारंग कुलहि लजावत॥३९॥

दधिसुत चंद मुष जलसुत कमल बनचर मृग बर दो पक्षी चक्रवाक। सारंग भ्रमर सारंग सुगंध हीन देषी अचंल ओट कर सारंग चंद सुष पावै। हे सारंग राधे बृषभान कुलन लज्जा ॥ ३९ ॥

सषी मिल करहू कछू उपाउ । मार मारम चल्यौ बिरहिन निदरि पायोदाउ॥ हुमासन धुज जात उन्नत बह्यौ हर दिस बाउ। कुसमसररिपु नंद बाहक हहर हरषित गाउ ॥ बार भव सुत तासु मावर अब न करिहौं काउ । बार अबकी प्रान प्रीतम बिजै सषा मिलाउ ॥ बितु बिचार जु मान कीनों बहै बहकि न जाउ। संग सषी सुभाव रहि हो सूर सिर मनि राउ ॥ ४० ॥

हे सषी उपाउ करो। हुतासन धुज जात मेघबाउ बहन लागो कुसमसररिपुनंदन स्वामकार्तिक वाहन मोर बोले। बारिभव बिष सुत मद भावना नहीं करिहौं। बिजै सषा कृष्ण ॥ ४० ॥

छन पल रावरे की आस । करन नाव सुपंच सँज्ञा जान के सब नास ॥ भूमिधर अरि पिता बैरी बांध राषि पास ।

सिंधुसुतधर सुहित सुत गुन गहक गोपी गास ॥ भानुअंस गिरीस आषर आदि अंग प्रकास । सूर फिर फिर सूर-सुत की परन चाहत पास ॥ ४१ ॥

पंचबस ४० संज्ञा मन भूमिधररिपु सामिकार्तिक पिता बैरी काम। सिंधुसुतधर सिव हित कृष्ण सुत काम नाम समर समरन गुन कोप सो भी गांसे है सूर सुत । जम की फांसी ॥ ४१ ॥

प्रभु कब देषिहौ मम ओर । जान आपुन आप ते गिरनाथ गाठी छोर ॥ श्रवन वचन विचार सेनापति सुआनन भोर । दिसा बस तस कहत जानत सात साषी जोर ॥ जगा जोनो मेल की सुधि कीजिये रुचि जोर । सूर निपट अनाथ भाषित जुगल बर करजोर ॥४२॥

प्रभु इति । गिरनाथ भव संसार श्रवनश्रुत सेनापति आनन शास्त्र दिसाबस १८ पुरान सात मुनि । जगाजोनी नाम अजमेल मिली अजा-मेल की सुधि करो ॥ ४२ ॥

सुंदर स्याम सोभा देषि। वार ससि के आदि कोटिन कोटि लाजत लेषि ॥ मीन रिपु के संग गुन मन गहत बरबस आन।

चलन सरितन की सम्हारे षचर षेलन बान ॥ बिकट भृकुटी मुकट लटकन सुकटि सोभा सोय । सूर बलि बलि जात तन मन तपन तीषन धोय ॥४३॥

सुंदर इति । बार जल नाम का ससि मयंक आदि ते काम लाजत । मीनरिपु बंसी सुन गुन शब्द सरित नयनषचर षंजन की बान ॥४३॥

देषि सषी पांच कमल द्वौ संभु । एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरषत नैन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हे कमल सकोमिल अंग । जुगल कमल सुत कमल बिचारत प्रीत न कबहूं भंग ॥ षट जु कमल मुष सनमुष चितवत बहु बिधि रंग तरंग । तिन मे तीन सोम बंसी बस तीन तीन सुक सीयज अंग ॥ जेई कमल सनकादिक दुर्लभ जिन ते निकसी गंग। तेई कमल सूर नित चितवत नीठ निरंतर संग ॥ ४४ ॥

उक्ति सषी की सषी प्रति । कै हे सषी पाँच कमल दो संभु के निकट है राधा के उर में स्याम मुष धरो मुष १ नेत्र दो कर दो। तिन में एक कमल जो मुष है सो ब्रज समूह के ऊपर है। ताहि देष अचंभो

लागत। अरु एक कमल कर तें प्यारी राधा कमल कर पकरो राधा अंग कोमल कमलवत। ऐसे राधा कृष्ण जो जुगल कमल हैं तिन कों कमल सुत ब्रह्मा निहारत है। प्रीत जाकी भंग नाहीं होत। मुष नयन जुगल के तीन सोम दो मुष अरु राधा मुष मुकट में प्रतिबिंब। काहे कृष्ण को मुष नीचे है। बंसी लट काकपक्ष। तीन सुक नासिका बिंब। प्रतिबिंब राधा के २ कृष्ण एक अरु जे कमल सनकादि कों दुर्लभ हैं चरन अरु गंगा निकसी हैं। जिनतें ते सरोज। भृंगजि सूर ते देषत अथवा संसार नाहीं देषत ॥ ४४ ॥

तुम बिन कहो कासों जाय। संभु आयुध उठ करेजे करत बहु बिधि घाय॥ गोपपति लषन के बैरी आन के अकुलाय। पच्छिराज सुनाथ पतनी भोगिबो चित चाय॥ पायतोय निहार कबहूं हिलत ना हरषाय। सूर अनभल आन को सुनत वृच्छ बैरि बुताय॥४५ ॥

तुम बिन कासों कहों। संभु आयुध सूल घाउ करत। गोपपति नद ताको विसेषन नर्क को बैरी आन के देषि अकुलात। पक्षिराज नाथ विष्णु पतनी लक्ष्मी भोगो चाहत पांयतोय गंगा में नाहीं नहात। अनभल आन को सुन वृक्षबैरी अग्नि बुझावत ॥ ४५ ॥

बृज की कही कहा कहु बातें। गिरतनयापतिभूषन जैसे बिरह जरी दिन रातें॥ मलिन बसन हरि हेरि हित

अंतर गति तन पीरो जनु पातें। गद-गद बचन नयनजल पूरित बिलष बसन क्रस गातें॥ मुक्तौ तात भवन तें बिछुरो मीन मकर बिललातें। सारंगरिपु सुत सुहृद पती बिन दुष पावन वहु भांते॥ हरि सुर भषन बिना बिरहाने छीन लई तन तातें। सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिल के नातें॥४६॥

ब्रज की का बातें का कही। गिरतनयापति अग्नि समान बिरह तें जरती हैं। वसन मलीन हो रहे अंतर की गति हरि सूज हित अरुन गत पंग हो रही तन पीयरे पात सो। गदगद सुगम सुक्ता तात जीवन ताते बिछुरत मगर मीन की रीति तें बिललाति। सारंग पर्वत रिपु इंद्र सुत अर्जुन सुहृद कृष्ण पति बिना दुष पावत। हरि बानर सुर सुकंठ। अर्थ सुंदर कंठ भाषा बिन है गयो छीन है गई हैं तातें मिलो॥ ४६॥

हरि कत भये ब्रज चोर। तुहरे मधुप बियोग राधे मदन के झकझोर॥ एक कमल पर धरे गजारिपु एक कमल पर ससिरिपु जोर। दो कमल इक कमल ऊपर जगी इकटक भोर॥ एक सषी मिल हँसत कहत षेंच कर की कोर। तज

सुबाइस भषत नाहीं बिरष उन की ओर ॥ बिरस रासिनिसुरत कर कर नैन बहु जल तोर । तीन त्रिवली मनहु सरिता मिली सागर छोर । षटकंध अधर मिलाप उर पर अजयारिपु की घोर । सूर अबलान मरत ज्यावो मिलो नंदकिसोर ॥ ४७ ॥

हे हरि तुम बृज के चोर काहे भए । तिहारे बिरह मदन के झकझोर तें राधा की यह दसा भई है । एक कमल कर कटि पर धरे है यामें साध्य बसाना लछना तें जामें आरोप सोई कहै है कमल में कर को सिंह में कटि को एक पै ससि रिपु राहु पाटी एक कमल मुष पर दो नेत्र तें इक टक जागत है । एक सषी कर पकर कहत है बाइस तज सुरत सुरत छोड़ के कछू भाषत बोलत काहे नाहीं अथवा षात काहे नाहीं ऐसी बेरस ए ससि न है गई है । आंसू ढारति है सो त्रिवली तट आवत कुच के मध्य तें अरु दोई कुच हो मानो तीन नदी समुद्र में मिली । अथवा आसू गंगा का जल मिल जमुना सिंदूर मिल गिरा यह तीन सरिता षट कंध स्याम-कार्तिक तिन को नाम सक्तिधर सक्तिधर मान अधरन पर आय रहे हैं । अजयारिपु उद्दीपन उद्दीपन उर पर घोर भयो है । ऐसी जो अवस्था तिन को मरत जियावहु हे नंदकिसोर ॥ ४७ ॥

राग कर्नटी ।

देषि रे प्रेम प्रगट द्वादस मीन । ऊधो एक बार नंदलाल राधिका वन ते आवत सषी ही सहित गिरिधर रस

भीन ॥ गए नवकुंज कुसुमनि के पुंज अलि करैं गुंज सुष हम देषि भईं लव-लीन । षट उडगन षट मनिधर राजत चौबीस घात केहि चित्र कीन ॥ षट इंदु द्वादस पतंग मनो मधुप सुनि षग चौअन माधुरी दस पीन । द्वादस बिंबाधर सो बान वै बज्र कन मानो षट दामिनि षट जलज हँसि दीन ॥ द्वादस धनुष द्वादसै बिच्छा मन मोहे न घटै चिबुक चिन्ह चित चीन । द्वादस व्याल अधोमुष झूलत मधु मानौ कंज दल सौ बीढ़ै षगीन ॥ द्वादसै मृनाल द्वादस कदली षंभ मानो द्वादस दारिम सुमन प्रबीन ॥ चौबीस चतुष्पद ससि सौ बीस मधुकर अंग अंग रस कंद नवीन । नील निलै मिलि घटा बिबिधि दामिनी मनो षोडस शृंगार सोभित हरि हीन ॥ फिरि फिरि चक्र गगन मै अमी बतावत

सुभतो जोग मौन कहुं कौन। बचन रचन रस रास नंदनंदन ते बहियो यो न हृदय लौ लीन ॥ नंद जसोदा दुषित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गात दिन ही दिन दुषीन। बकी बका सकटा टन केसी बछ वृषभ रास से अलि बिन गोपाल हनि बैर कौन। उद्धव इहाँई मिलाइ परै पाइ तेरे सूर प्रभु आरतिहरैं भई तन छीन ॥ ४८ ॥

देषि परे। गोपी की उक्ति। हम को प्रगट हम को प्रगट बारह मीन देषि परे। जा समें नंदलाल राधा सषीसमेत गावत रहे ता समै तीन कुंज में गए जहाँ बहुत पुष्प रहे औ अलिगुंजत रहे वह सुष देषि सें आनंदित भई। मीन की तपसील राधा के औ कृष्ण के औ सषी के छह नेत्र तिन के छह प्रतिबिंब षट उडगन राधा सषी की हीरा की बेंदी कृष्ण को नासा मोती ए तीन औ तीन प्रतिबिंब षट मणिधर राधाकृष्ण सषी की चोटी छाती पै परी है तीन तिन के प्रतिबिंब चौबीस धातु सुवर्ण रजत ताम्र लोह कृष्ण को पीतांबर राधा सषी को अंगवर्ण ए सुवर्ण धातु हसिबो रजत का चरण लालिमा ताम्र चरन की स्यामता लोह ए तीन चौक बारह प्रतिबिंब ऐसे कै औ बारह चौबीस धातु तीनो का मुष औ प्रतिबिंब छ चंद्र राधा औ सषी के चारि तरौना औ कृष्ण के दोय कुंडल ए छह तिन का छह प्रतिबिंब ए बारह पतंग कहैं सूर्य द्वादस मधुप तीनो की छह पुतरी तिन का प्रतिबिंब ए द्वादस अलिमानो कहै जानो ॥ ४८ ॥

बालम बिलम बिदेस रहोर। भूषन

पितु पितु सेनापति पितु ता अरि अंग दहोरि ॥ सारंगसुतधर भष धर बैरी जातन बचन सहोरि । नृपत आदि सुत तृतीय तलफ कहु को सक राष चहोरि ॥ बाजिनि ते तिथि थान संतोसी सोई बचन कहोरि । जो आपन हित बृज-हित जगहित कुबजा कूर चहोरि ॥ कासोँ कहोँ सुने को मेरी बिपता बोल बहोरि । सूरज प्रभु बिन मोकहँ बैरी सब सुष जहर भरोरि ॥ ४९ ॥

उक्ति नायका की अंतरंग सषी सों । द्वरावर्त्त कूट व्याघात अलंकार लछित लछना है । भूषन नाम अंगद तिन के पिता बालि तिन के पितु इंद्र तिन के सेनापति सामकार्तिक तिन के पिता सिव तिन को बैरी काम सो अंग जरावे है । सारंग समुद्र ताको सुत चंद ताको धर महादेव तिन को भष बिष ता धर सर्प ताको बैरी मयूर ताको बचन नहीं सह्यो जाय । नृपत आद की वर्न भू पृथ्वी सुत मंगल ताते तृतीय बृहस्पत तिन को नाम जीव सो तलफै है । बाजिनि अस्विनि ते तिथि थान पंदरह स्थान स्वाति तिन ते संतोस पावे है । पपीहा सो पापी रटै है पिय पिय ताते सुषद को सब दुषद भयो ॥ ४९ ॥

बाबू चंडीप्रसाद सिंह संग्रहीत।

हरिसुत पावक प्रगट भयोरी। मारुतसुत भ्राता पितु पूरोहित ता प्रति पालन छाडि गयोरी॥ हरसुतवाहन ता रिपु भोजन सो लागत अंग अनल भयोरी। मृगमद स्वाद मोद नहिं भावत दधिसुत भान समान भयोरी॥ बारिधसुतपति क्रोध कियो सखि मेटि दकार सकार लयोरी। सूरदास प्रभु सिंधुसुता बिनु कोपि समर कर चाप लयोरी॥ ५० ॥

एक सखी दूसरेसे कहती है कि हरि श्रीकृष्ण सुत प्रद्युम्न वह कामदेव के अवतार हैं सो पावक के समान हुए। मारुत वायु सुत भीम भ्राता अर्जुन पिता इन्द्र पुरोहित बृहस्पति बृहस्पति का नाम जीव सो जीव के प्रतिपालन का बाना जो था सो छाड़ि गये। हर सुत गणेश बाहन मूस अरि सांप असन बतास सो अग्नि के समान लगता है। वा हरसुत बाहन मूस रिपु सांप भोजन चन्दन वा हरसुत श्यामकार्त्तिक बाहन मयूर भोजन साँप शेष अर्थ पूर्ववत्। मृगमद कस्तूरी वह पुष्टि और सुगन्ध के लिये भोजन में पड़ती है सो भी नहीं पसंद है। दधिसुत चन्द्रमा तिस में ठंढई अमृत श्रवता है सो सूर्य के समान गरम लगता है। बारिध समुद्र सुता लक्ष्मी पति विष्णु, सो क्रोध किये हैं और विष्णु दयानिधि हैं सो दया मेटि गया और सकार नाम मूल सो क्रोध हो गए। सूरदास जी के प्रभु श्री कृष्ण सिन्धुसुता लक्ष्मी सो लक्ष्मी विना क्रोध करिके समर में चाप लिये हैं॥ ५० ॥

माधो बिलमि बिदेस रहोरी। अमर-

राजसुत नाम रहूनि दिन निरखत नीर बहोरी ॥ कुन्तीपतिपितुतातनारिधर ता अरि अंग दहोरी । घटसुतअरि-तनयापति सजनो नाहिं नेह निब-होरी ॥ जलरितु नाम जान अब लागे हरिभाखि वचन गयोरी । मारुतसुत पति नन्द ग्रेह के कास नेह निबहोरी ॥ सैलसुतापति ता सुत बाहन बोली न जात सहोरी । सूरश्याम आवन की आसा संसा प्रान रहोरी ॥ ५१ ॥

माधो श्री कृष्ण सो प्रदेश में बिलमि गये, अमर देवता राजा इन्द्र सुत अर्जुन अर्थात् पारथ और पारथ के अर्थ पंथ सो पथ हेरते २ नीर बहा जाता है । कुन्ती पति पांडो पिता बिचित्रविर्य और तात नाम पिता तिस के पिता सन्तनु ऋषि नारि गंगा गंगा के धारण करनेवाले महादेव अरि काम सो अंग को दहे नाम जलाता है । घटसुत कुंभज-ऋषि अरि समुद्र तनया लक्ष्मी पति विष्णु सो लक्ष्मी से भी सनेह नहीं निबाहा । जल ऋतु बरसात सो अब बीत गया और हरि जो श्रीकृष्ण सो आने को कह गये थे सो नहीं आये । और मारुतसुत हनुमान पति रामचन्द्र सो नन्द ग्रेह के श्री कृष्ण उन से भी नेह नहीं निबहा । सैल सुता पार्वती पति महादेव पुत्र स्याम कार्त्तिक बाहन मयूर सो मयूर की बोली नहीं सही जाती सूरदास कहते हैं कि स्याम जो हैं श्रीकृष्ण सो उन की आने की आशा लगी है उसी से अब तक प्राण है ॥ ५० ॥

सभे मिलि श्याम सन्देस सुनोरी । जो

त्रिय चढत सीस गिरधर के सो अब कंठ गहोरी ॥ नीचे चलत तासु अरि ता भख भूषन अंग लगोरी। दधिसुत बाहन मेखला लेके बैठि अनईस गनोरी ॥ ताते सुक महुक बक तीतर यह मति दसन गहोरी। कनक दहन पट अरु दस मिलि के सोई उतारी धरोरी ॥ बैरागी के बगल बसतु हैं, तापर प्रीति करोरी। सूर श्याम प्रभु रस की बातें मधुपुर दूरि गनोरी॥५२॥

उधो जी कहत हैं कि सब मिलि के श्याम के सन्देस सुनो। जो त्रिय गिरधर के सीस पर चढ़ती है अर्थात् तुलसी सो तुलसी की माला कंठ में धारण करो अर्थात् पहनो। नीचे चलता है जल अरि आग भख नाम भभूत उसी का भूषण बनाव। दधिसुत चन्द्रमा बाहन मृगा सो मृगा के चमरा ले कर अनईस जो श्रीकृष्ण सो श्रीकृष्ण को ध्यान धरो। सुक कहिये सुग्गा अर्थात् सुग्गा के रंग जो पान और महुक जो है पक्षी तिस का रंग कथ बक जो बकुला तिस का रंग चूना और तीतीर के रंग जो कसेली अर्थात् पान मत खाव। कनक सोना दहन करनेवाला सोहागा सो सोहागा माने सोलहो शृंगार मत पहनो। बैरागी के बगले रहता है तुम्बा सो- अब तुम्बा पर नेह करो। सूरश्याम जो हैं कृष्ण सो अब श्रीकृष्ण सो रस की बात जाने दो क्योंकि मधुपुर जो मथुरा है उस को दूरि जानो ॥ ५२ ॥

सखी री कमल नैन परदेसे ॥ ऋतु के राज भए संप्राप्त ताते गये बिदेसे। हरहित रिपु बाहन के भोजन पठए न

देत सन्देसे ॥ पांडो नाथ वेद कर पल्लव अलि पंकज रहे घेरो। एक सै साठि चरन है जिन को सो हरि हम सों फेरो ॥ जननी स्वान वहन पसुभाषा सारंग रिपु के स्वादे। ई दौ नाम मिलत मोहि दुरजन ताते बिरह बिखादे ॥ सुरगुरु अरि बाहन अरि ता पति ता अरि यह तन तावत। कनकपटनपति तासु अनुजहित सुर अजहु नहीं आवत ॥ ५३ ॥

कमल नैन श्रीकृष्ण परदेश में हैं, ऋतु राज चइत सो चित में आ गये तेहि से विदेश चले गये, हर महादेव हित चन्द्रमा रिपु राहु बाहन भेड़ा भोजन पत्ता सो पत्र नहीं पठाते हैं। पांडव ५ नाथ ९ वेद ४ कर दोनों हाथ पल्लौ दोनों हाथ की १० अंगुली मिलाने से ३० हुआ सो तीसो दिन अलि भौंरा पंकज कमल सो भँवरा कमल को तीसो दिन घेरे रहता है, इस से अभिप्राय यह है कि भँवरा तो सुख के लिये घेरे रहता है। एक सौ साठ चरण अर्थात् १६० पांव अर्थात् पाव सो १६० पाव का एक मन होता है सो श्रीकृष्ण ने हम से मन फेर लिया। जननी माता माता की बहन नाम बोली स्वान की भाषा सी लगती है, सारंग पच्छी रिपु बिलार बिलार के स्वादिष्ट दही सो यह दोनों (माता और दही) रिपु के समान मालूम होता है क्योंकि माता दही महने कहती है इस से बिरह बिखाद होता है। सुरगुरु बृहस्पति रिपु शुक्र बाहन बेंग रिपु साँप पति महादेव रिपु काम सो काम सता रहा है, कनकपटन लंकापति रावण भाई कुम्भकरण हित नींद सो सूरदास कहते हैं कि गोपियों को नींद नहीं आती है ॥ ५३ ॥

सूरदास का जीवनचरित्र।

एक सौ अठारह पद की टिप्पणी में लिखा है कि ग्रंथ के अंत में सूरदास के विषय में लिखा जायगा। अतएव यहां इस समय मुझे जहां तक सूरदास के विषय में लेख मिला है उन सबों को यहां प्रकाश करता हूं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने चरितावली और शूरसतक पूर्वार्द्ध में जो लिखा है उसे छोड़ देता हूं। सूरदास के समय से अनेक कवियों का समय निर्णय होगा।

रामरसिकावली—महाराज रघुराज सिंह कृत से—

दोहा—सूरदासजी जग बँदित, श्री उद्धव अवतार।
कथा पुरानांतर कथित, बरनन करो उदार ॥ १ ॥

चौपाई।

जब मथुरा में श्रीनंदलाला। गोपिन को बिज्ञान बिसाला ॥ १ ॥
सादर करन हेत उपदेसू। पठयो उद्धव गोकुल देसू ॥ २ ॥
तहं गोपिन पर प्रेम परेषी। उद्धव बोले ज्ञान बिसेषी ॥ ३ ॥
धारि भक्तिहरि निजउर माहीं। आवत भे पुर मथुरा काही ॥ ४ ॥
राषि भाव उर गोपिन केरो। लष्यो संग हरि चरित घनेरो ॥ ५ ॥
तब उद्धव को श्रीजदुराया। बदरीनाथ कांह पठवाया ॥ ६ ॥
यह सुवासना ऊधव के तब। रही आय व्रज येक बार कब ॥ ७ ॥
गोपिन को अनूप अनुरागा। हरिलीला जो व्रज सब जागा ॥ ८ ॥
सो रसना ते बरनन करहूं। वर संतोष हिये पर धरहूं ॥ ९ ॥
कीन्हे यही बासना कांही। उद्धव प्रगट भये कलि मांही ॥१०॥
सूरदास ते संत सिरोमनि। बिरचन सवालाख पद को गुनि ॥११॥
करि संकल्प मुदित मनसा मे। हरि लीला बिभूति हू तामे ॥१२॥

दोहा—बरन्यौ तिमि गोपीन को, जो जथार्थ अनुराग।
बिरचे कृष्णपद सूर बदि, सहस पचीस अदाग ॥ २ ॥
पूरन कीन्हो सूर मन, सूरस्याम जहं होय।

सो पद बिरच्यो कृष्णही , जानि लेहु सब कोय ॥ ३ ॥
महा घोर कलिकाल महं , जनम लेव दुष दूर ।
इग बिकार गुनि याहिते , सूरदास भे सूर ॥ ४ ॥

चौपाई ।

जन्महि ते है नैन बीहीना । दिव्य दृष्टि देषहि सुष भीना ॥१॥
लीन परिच्छा सो तेही नारी । एक समै अस बचन उचारी ॥२॥
पिय मोहि सकल ग्रामकी वामा । मोसो कहहिं बचन असि बामा ॥३॥
तूं केहि देषन करहि सिंगारा । तेरो पति तो अंध अपारा ॥४॥
सुनि कै सूर कही यह बानी । आजु सिंगार भली बिधठानी ॥५॥
बहु इस्त्रीन को लै निज संगा । बैठहु आइ ईहां सउमंगा ॥६॥
भूषन तुव बिगरो जो होई । दैहै हम बताइ सत सोई ॥७॥
सूनि यह सूरदास की नारी । सब भूषन निज अंग सँवारी ॥८॥
बेंदी देत भये नही भाला । सूर बोलायो ढिग तव बाला ॥९॥
तिय भूषन सब अंग निहारी । सूरदास बोल्यो सुष धारी ॥१०॥
बंदी भाल दियो क्यों नांही । लषि प्रभाव यह सूर तहांही ॥११॥
कीन्हे सकल लोग जय सोरा । ष्यात बात भै जग सब ठोरा ॥१२॥

दोहा—ह्वै बिरक्त संसार ते , दिव्य दृष्टि हरि ध्यान ।
सूरदास करते रहे , निसिदिन बिदित जहांन ॥ ३ ॥
सूरदास इतिहास बहु , परचै अहैं अनेक ।
जानिं लेहु सब संतजन , कहौं नेक सबिबेक ॥ ४ ॥

कवित्त—कबिकुल कोक कंज पाइकै किरिनि काव्य बिकसे चिनोदित है नेरे और दूर के। सूषिगो अज्ञान पंक मंद भो मयंक मोह बिषय बिकार अंधकार मिटै कूर के॥ हरि की बिमुषताई रजनी पराई गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूक के। छायो तेज भुहुमि में रघुराज कूर हरि जन जीव मूर सूर उदै होत सूर के ॥१॥ मतिराम (१) भूषन (२) बिहारी (३) नीलकंठ (४) गंग (५) बेनी (६) संभु (७) तोष (८) चिंतामनि (९) कालदास (१०)की । ठाकुर (११) नेवाज (१२) सैनापति(१३) सुकदेव (१४) देव (१५) पजन(१६) घनआनंद (१७) घनस्यामदास (१८) की ॥ सुंदर (१९) मुरारि (२०) बोधा (२१) श्रीपति हू (२२) दयानिधि (२३) जुगुल (२४) कविंद (२५) त्यौं गोबिंद (२६) केसोदास (२७) की । भनै रघुराज

---

* अंक वाले कवियों का वर्णन आगे किया जायगा ।

और कविन अनूठी उक्ति मोहि लगी जूंठी जांनि जूंठी सूरदास की ।।२।। अषिल अनूठी उक्ति जुक्ति नहि झूठी नेकु सूधाहूं ते सरस सरस को सुनावतो । उद्धत बिराग भाग सहित अनेक राग हरि को अदाग अनुराग को सिषावतो ।। जगत उजागर अमल पद आगर सुनट नागर ध्याय सूरसागर को गावतो । भाषै रघुराज राधा माधव को रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहि आवतो ॥ ३ ॥ साह सुन्यो सुरन से बेगहीं बलायो डिल्ली पूछ्यौ कोन हो तूं सूर कह्यौ पूंछो बेटी सों। साह कह्यौ जानौ कैसे सूर कह्यौ जंघ तिल साह पूंछवायो सो तुरत एक चेटी सों ॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही सरीर छूटी हठ रे कहि तन तजि हरि भेटी सों। भनै रघुराज साह सूर पद सिरनायें पूछ हरिदास मोरि भवभीति मेटी सों ॥ ४ ॥ गोकुल मे रास होत राधा जूने मान कीन्हो हरि मान मोरिबे को उद्धवै पठायो है । जानि गुरमान कह्यो नेसुक कटुक बैन दीनी वृषभानसुता साप कों पठायो है॥ धारी ये मनुज तन तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भायो है । भनै रघुराज सोई ऊद्धौ अवनी में आइ रसिक सिरोमनि सो सूर कहवायो है ॥ ५ ॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'शिवसिंहसरोज' पढ़ने के समय में जिन जिन कवियों के विषय में कुछ लिखा है उन में अकबर और गंग के इतिहास पर अपनी राय नाम मात्र को लिखी हैं उसे नीचे प्रकाश करता हूं।

अकबर ।

अकबर बादशाह दिल्ली सं० १५८४ हुए इन के हालात में अकबरनामा १ आईन अकबरी २ तबकात् अकबरी ३ तारीख़ अबदुल्कादिर बदाऊनी ४ इत्यादि बड़ी बड़ी किताबें लिखी गई हैं जिन से इस महाप्रतापी बादशाह का जीवनचरित्र साफ़ साफ़ प्रगट होता है इहां केवल हम को उन की कविता का वर्णन करना अवश्य है सो हम को कोई ग्रंथ इन का नहीं मिला दो चार कवित्त जो मिले हैं सो हम ने लिखा है जहांगीर बादशाह ने अपने जीवनचरित्र की किताब तुजुक जहांगीरी में लिखा है कि अकबर बादशाह कुछ पढ़े लिखे न थे परंतु मौलाना अबदुल्क़ादिर की किताब से प्रगट है कि अकबर शाह संस्कृत महाभारत को एक रात आप ही उलथा कराने बैठे और सुलतान मोहम्मद थानेसरी औ ख़ुद मौलाना बदायूनी औ शेख़ फ़ैज़ी ने जहां जहां कुछ आशय छोड़ दिया

था उसे फिर तर्जुमा होने को हुकुम दिया इन के समय में नरहरि १ करन २ हाल ३ खानखाना ४ बीरवर ५ गंग इत्यादि बड़े बड़े कवि हुए हैं परंतु ख़ास जे कवि नौकर थे उन के नाम इस कवित्त से प्रगट होंगे।

कवित्त—पृथी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी।
गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुण सागर गंग सुग्यानी॥
जोध जगन्नज में जगदीश जगामग जैत जगत है जानी।
कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलि कै कविता जु बखानी॥१॥

श्रीगोसाईं तुलसीदास तौ दरबार में हाजिर नहीं हुए * सूरदास जी औ बाबा रामदास उन के पिता गानवालों में नौकर थे † जैसा कि आईन अकबरी में लिखा है केशवदास जी उस समय में इन के मंत्री श्री राजा बीरवर के दरबार में हाजिर हुए थे जब इंद्रजीत राजा उड़छा बुंदेलखंडी प्रवीन राइ पातुरी के लिए बादसाही कोप में था।

दोहा—जाको यश है जगत में, जगत सराहे जाहि।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि॥ १॥

गंग।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर ज़िला इटावा अथवा बंदीजन दिल्लीवाल) सं० १५९५ में हुए गंगकवि को हम सुनते रहे कि दिल्ली के बंदीजन हैं औ अकबर बादशाह के इहां थे जैसा किसी कवि ने बंदीजनों की प्रशंसा में यह कवित्त लिखा है।

कवित्त—प्रथम विधाता ‡ ते प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु यज्ञ तें प्रकास सरसात है। माने सूत सौनकन सुनत पुराण रहे यश को बखानै महा सुख बरसात है॥ चंद चउहान के केदार गोरी साहि जू के गंग अकबर के बखाने गुण गात है। काग कैसे मास अजनास धन भाटन को लूटि धरै जाको खुरा खोज मिटि जात है॥ १॥

परंतु अब जो हमने यांचा तौ बिदित हुवा कि गंग कवि एकनौर गांउ जिला इटावा के ब्राह्मण थे जब गंग मरगए हैं औ जैनखां हाकिम ने एक नौर में कछु जुलुम किया तब गंग जीके पुत्र ने जहांगीर शाह के

* श्री तुलसीदासजी का काल यह नहीं है। हरिश्चंद्र

† श्री सूरदास कहीं नौकर न हुए। हरिश्चंद्र

‡ सूरदास जी के पद से मिलाना। हरिश्चंद्र

इहां यह कवित्त अरजी के तौर पर दिया है। जैन खां जुनारदार मारे एक नौर के। जुनारदार फारसी मे जनेउ रखनेवाले का नाम है लेकिन खास ब्राह्मण हीं को जुनारदार कहते हैं खैर जो हो हम को इस बात में बहुत लिखने से कछु मतलब नहीं गंग जी महान कवि थे राजा वीरबर ने गंग को इस छप्पै में (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपिया इनाम दिया इसी प्रकार से अकबर, जहांगीर, बीरबर, खानखाना, मान सिंह सवाई इत्यादि सभों न गंग को बहुत दान मान दिया है।

भक्त बिनोद—कवि मियांसिंह कृत से।

दोहा—करन बिमल मनहरन तम , दमन त्रिबध दुख दोष।
भक्ति महातम करहुं कल , कथन ललित प्रदमोष ॥१॥
नासन कुमति कृतांत भय , भासन भानु प्रबोध।
सुमति बिकासन भक्त जन , दलन मदनमद क्रोध ॥२॥

चौपाई।

कृष्ण देव जब जनन उबारा। मथुरा लीन ललित अवतारा।
कीए कृपाल चरित जस चारू। सो मनहरन बिदित संसारू ॥१॥
तब जादव इक भक्त प्रवीना। कृष्ण सरोज चरन मन लीना।
सूर नयन बर बंस उजागर। उपज्यो भक्त सृष्ट गुन सागर ॥२॥
सखा पुनीत मीत ब्रत धारी। मन बच करम कृष्ण हितकारी।
जब मथुरा तजि करत पयाना। द्वारावती आय भगवाना ॥३॥
ते किमि चंचरीक बड भागी। सकहिं सरोज चरन प्रभु त्यागी।
भक्ति प्रेम कल नवल उमंगा। आयो दीनदयाल कर संगा ॥४॥
जद्यपि आनंद भवन प्रसादू। तांके तहां सुलभ सब साधू।
पै निवास बृंदावन चारू। बिहरन कुंज गलिन मनहारू ॥५॥
कृष्ण संग नित नवल बिलासा। सो न पलक कल बिसरत तासा।
तन मथुरा बृंदावन मनुआं। लग्यो रहत निसि दिवस अननुआं ॥६॥
करि स्मरन कल कुंजन सोभा। होत प्रबल जिय जादव छोभा।
प्रभु सन बारबार अस बरनी। नम्रत बिनय दिवस निसि करनी ॥७॥
कृपा निकेत जनन सुखदाई। तुव सन कवन दिवस सुभ जाई।

सुचि भंडीर बिपन मनहरना । रविजा कुंज सनख नग धरना ॥८॥
आन ललित लावण्य तनी के । देहु दैव परम प्रिय जीके ।
जब लगि जियन नाथ संसारा । सो प्रमोद किमि बिसरन द्वारा ॥९॥
अस प्रकार उतकंठित रहना । बृंदाबिपुन अहिर निस कहना ।
काल पाय तब भक्त उबारा । लिए संग जादव परिवारा ॥१०॥
दोहा—करि कौतुक करुनायतन , निज बिकुंठ कल धाम ।
गए गमन करि भमन मुद , रमारमन अभिराम ॥ १ ॥
चौपाई ।
ते जादव हरिभक्त सुजाना । तहांपि जोरि जुगल निज पाना ।
बृंदावन दरसन अनुरागा । नम्रत बिनय करन अस लागा ॥१॥
चलन होंहि तुव दीन सनेहू । कब कृपाल बृंदाबन तेहू ।
सो प्ररण्य कल कुंज सुहाए । दीननाथ मोरे मनभाए ॥२॥
बिसरत सोन भक्त सुखदाई । एक बार प्रभु देहु दिखाई ।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई । बोले बदन बचन मुसकाई ॥३॥
सुनहु मीत पूरवत ताहीं । मोर गवन बृंदाबन माहीं ।
अब न होंहिं पय भक्त सुजाना । मैं परिवार सहित निज नाना ॥४॥
कुंज कुंज राधा जुत चारू । तहां निवास करहुं मन हारू ।
ते मथुरा बृंदाबन जोही । जन बैकुंठ अधिक पृय मोही ॥५॥
जब तें तज्यो मनोहर नगरी । कलित कुंज लीला निज सगरी ।
तब तें जद्यपि मोर सुहावा । इह बैकुंठ अखिल सुख छावा ॥६॥
तद्यपि तिहि समान सुभदाई । उपज्यो नाहिं न तनक सुख भाई ।
जिमि बारानिसि संकर काहीं । बिदत बिस्व प्रिय मानस माहीं ॥७॥
तजत न तासु दैव त्रिपुरारी । तिमि मथुरा मोहि प्रानन प्यारी ।
अजहुं स्मरन होत मन भाई । ललित बाल लीला सुखदाई ॥८॥
दोहा—मृतका भक्षण पूतना , शकट बिभंजन मित्र ।
अरजुन जयमल मदहरन , अघ बक बदन चरित्र ॥१॥
काली पद क्षय करन पुनि , मोह नलन भव देन ।
बृंदाबन बंसि बजन , चरन चारु बर धेन ॥२॥
धयनक बधन प्रलंभ पुन , त्रिणाबरत बस काल ।
बृंदाबन रक्षाकरन , नग नख धरण रसाल ॥३॥
रचन रास लीलादि पुनि , पचन सखन सखि संग ।

केसि बिध्वंसन नंद कल , लालन हृदय उमंग ॥४॥
दावानल कर समन पुन , ग्वालन सन मन चाउ ।
बनबन बिहरन सजन सुन , हनन कंसरिपु राउ ॥५॥
जननि जनक बंधन मुकत , चरित चारु इत्यादि ।
जब जब होत स्मरन इह , उपजत हृदय दुखादि ॥६॥

चौपाई ।

सदा रहत मानस उतकंठा । तजि निज रुचिर धाम बैकुंठा ।
पुनि कब बपुख पूरववत धारी । अदभुत करहुं चरित मनहारी ॥१॥
जे जन भक्ति निरत बड भागे । मोर प्रेम पावन रस पागे ।
हृदय कुतरक कपट सब खोई । मोर रुचिर लीला कृत जोई ॥२॥
जथा विधान रास बिरचाई । गायन स्त्रवन करहिं मन लाई ।
सो साक्षात त्रिस्व सुभ चारी । मोर सरूप भक्त ब्रत धारी ॥३॥
मथुरा धारि जनम त्रिय जोई । मोर ललित उतसव पर होई ।
सो मोहि जसुमत मातु समाना । सुनहु आन अब भक्त सुजाना ॥४॥
जे नर मोर जनम दिन लेखी । धारि रुचिर बृत भक्ति बिसेषी ।
बाल रूप मम पूजन करहीं । आवागवन सहज स्रम हरहीं ॥५॥
करि प्रवेस मथुरापुरि माहीं । जो जन करहिं रटन मोहि काहीं ।
भक्ति मोर सूई प्रानन प्यारू । ताकर तरन सुमन संभारू ॥६॥
अब तोहि जोपि भक्त बडभागा । मथुरा गवन प्रीति अनुरागा ।
तो अब सुनहु कथन कल मोरा । संतत भक्त सृष्ट हित तोरा ॥७॥
जाहि तें तहां सजन तुव जाई । सोऊ लेहु सुख कीरति पाई ।
अस कहि कृष्ण दैव भगवाना । लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना ॥८॥
कलीकाल संध्या अवसाना । मथुरा प्रांत भक्त गुन खाना ।
सुब्रत विप्र बंस उपजाई । मथुरा मोर ललित पुर आई ॥९॥
मोर जनम लीला गत पारू । करत करत गायन ब्रत धारू ।
सोउ अखंड सुजस सुख जोही । होहिं भक्त जन प्रापत तोही ॥१०॥
बहुरि मोर लीला मन भाइन । प्राकृत पदन सफुट जब गायन ।
कीन तुमहुं संगीत प्रकारू । सुब्रत ललित प्रेम रस सारू ॥११॥
सुनत लोक कलिकाल मझारा । हुइहैं भक्ति निरत संसारा ।
बढहिं मोर चरनन अनुरागा । उघरहिं तुव प्रसाद बड भागा ॥१२॥
पै तुव जनम अंध द्दग हीना । जननि जनक असं देखि प्रबीना ।

दोहा—पालहिं जन समान कछु , सुत सनेह बस तोहि ।
आन सक बांधव सुहृद , सो न करहिं हित कोइ ॥१॥

चौपाई ।

केवल जननि करहिं तुव सेवा । अस कहि बदन भक्त द्रुम देवा ।
भए बिराम कृष्ण घन बरना । तब प्रनाम करि जादव चरना ॥१॥
कालि संध्या कर अंत प्रवीना । सोचन लग्यो भक्ति मन लीना ।
सो जब समय आव नियराना । तजि बिकुंठ जादव गुन खाना ॥२॥
मथुरा प्रांत बिप्र बर गेहा । भा उतपन्न भक्त हरि नेहा ।
जनम अंध दृग ज्योति विहीना । जननी जनक कछु हरख न कीना ॥३॥
रहे मोन बांधव समुदाई । करहिं प्रीति केवल इक माई ।
अष्ट बरष कर जानि सुहावा । जज्ञोपबीत जनक तब पावा ॥४॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा । सूरदास ताकर अस नामा ।
अवसर एक मातु पितु संगा । आन लोक पुर प्रेम उमंगा ॥५॥
कृष्ण जनम पुरि दरसन लागी । आए सकल सदन निज त्यागी ।
करि जात्रा बिधिवत अनुरागे । जब निज सदन चलन सब लागे ॥६॥
सूरदास तब कहत उचारी । मैं अब इहां सदन नगधारी ।
कछुदिन करहुं ललित निजबासा । कृष्ण प्रसाद बिगत स्रम त्रासा ॥७॥
तुव निज गवहुं सदन सुभ काहीं । चिंता मोर करहु कछु नाहीं ।
सुनि अस जननि जनक तहि बानी। सुत सनेह निज मानस बानी ॥८॥
रुदन करत अस बचन उचारे । बसत अंध दृग जुगल तुमारे ।
करहिं कवन भोजन पट दाना । सिसु निदान तुव देस बिराना ॥९॥
कस तजि जाहि सुवन पितु माता । काहु न देखि परत तुव त्राता ।
सुनि अस जननि जनक मुख बानी। कृष्ण भरोस सूर जीय मानी ॥१०॥

दोहा—बोल्यो अभय प्रसन्न मन , बदन बचन सुख दान ।
तुव जिय करहु न सोच कछु , मोहि बदेस अस जान ॥१॥

चौपाई ।

मोरे कृष्ण देव भगवाना । करन हार कल पालन नाना ।
अंध दीन बल हीनन कोहीं । पोषन करत दैव प्रभु सोहीं ॥१॥
सरन चरन दुख हरन करीके । परे कोटि अस मोर सरीके ।
दीनबंधु जन दीन न पाला । दीननाथ प्रभु दीनदयाला ॥२॥
दीनहरन भय दीन उबारन । दीन सुखद दुख दीन निवारन ।

अस प्रकार जब दीन सहाए । बिदत पुरान बेद स्तुति गाए ॥३॥
मोरे कसन होहिं तब मय्या । जानि दीन दृग हीन सहय्या ।
तब अस सुनत बचन बर ताहू । साधु जठिर दाया बस काहू ॥४॥
बोल्यो सूर मातु पितु काहीं । तुव न करहु चिंता जिय माहीं ।
हरषि जाहु सुभ्रत निज गेहू । तुव दृग हीन बाल बर एहू ॥५॥
मोरे बसहिं सदन सुख मानी । अस कहि गहत संत सुभ पानी ।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने । उत पितु मातु सदन निज गवने ॥६॥
साधु सनेह प्रीति अविलोकी । भई प्रसन्न मातु गत सोकी ।
सूरदास मानस अनुरागा । प्रमुदित बसन संत ग्रह लागा ॥७॥
पूरब चरित कृष्ण कल गायन । रह्यो सुनत सादिर मन भायन ।
आपु प्रेम जुत भक्ति उमंगा । बैष्णव संत जनन कर संगा ॥८॥
नृत्य गीत गायन करि चारू । कृष्ण चरित्र विमल मन हारू ।
प्रभु अदभुत लीला जिमि कीनी । आद उपांत स्रवन करि लीनी ॥९॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना । सो पूरब संचित निज ज्ञाना ।
अनुभव भयो बिदित सब भास्यो । दैव चरित लीलादि विलास्यो ॥१०॥

दोहा—भयो छकत उनमत्तवत , प्रेमासुव करि पान ।
कृष्ण चरित पद नवल नित , निज विरचत रुचि मान ॥१॥

चौपाई ।

अस प्रकार कृत नवल सुहाई । भक्त सृष्ठ कल कुंजन जाई ।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन । भयो कृष्ण पद भक्ति परायन ॥१॥
मथुरा निवसि सुजस सुख लय्यौ । सूर बिदत सब देसन भय्यौ ।
निरमत तास ललित पद पावन । संस्तुति गाय लोक मन भावन ॥२॥
बैष्णव भए भक्ति रतनागर । भक्त प्रधान सुजस बन सागर ।
सूरदास हरि गुन गन गाते । जहं जहं फिरहिं भक्ति मदमाते ॥३॥
तहं तहं भक्ति व्यवस अनुरागे । पाछे फिरहिं तास प्रभुलागे ।
सूर चरित पाछिल भगवाना । ग्वाल केलि बन धेनु चराना ॥४॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए । देखत रहत भक्ति सरसाए ॥५॥
ब्रह्मानंद मगन दिन राती । प्रेम भक्ति कछु कही न जाती ॥६॥

दोहा— एक दिवस मारग चलत , बिधुन कूप कल कोय ।
दृगविहीन चीन्यो न कछु , लग्यो भक्त च्युत होय ॥ १ ॥

चौपाई ।

तब भगवान भक्त रखवारे । अद्भुत गोप बैस निजधारे ॥
गहित करन कर तुरत मुरारी । भक्त कूप चुत लीन निवारी ॥ १ ॥
करि कर हरण त्रास कर केरा । सूरस परस लेत जीय हेरा ॥
इह कर जानि परत नर नाहीं । करिबिचार करुना निधकाहीं ॥ २ ॥
कर ते लीन पकरि कर संगा । कहि सबचन मन मोद उमंगा ॥
अबन तजहुं बिनु सांच बखाने । तब भगवान बदन मुसकाने ॥ ३ ॥
सूर करन कर करिबर जोरा । चले छुडाय भक्तचित चोरा ॥
अस जीय जानि दैव चतुराई । ब्रह्मानंद सूर सुख पाई ॥ ४ ॥
मानत भयो भूरि निज भागा । कर सों कर कृपाल जब लागा ॥
गदगद गिरा प्रेम दृग बारी । बोल्यो बदन बचन मनु हारी ॥ ५ ॥
बंदहु बार बार प्रभु तोही । जो अस निबल जानि जीय मोहीं ॥
केसी कंस असुर मद गंजा । लीन छुडाय सबल कर कंजा ॥ ६ ॥

दोहा—काह भयो कर तें छुटे, करन धार भवसिंधु ।
मन तें छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद उर इंदु ॥ १ ॥
अब तो बलकर तोरिकर, चले निबल कर मोहि ।
पै मन तें टूटों न जव, तब देखों प्रभु तोहि ॥ २ ॥

चौपाई ।

सुनि कटाक्ष मय बचन सुहाए । सूरदास कर प्रभु मनभाए ॥
हरषे दीनदयाल भगवाना । कीन स्परस दृगन तिहि पाना ॥ १ ॥
ततक्षण अंध नयन जुग तासा । असल बिमल कल जोति प्रकासा ॥
पाय दिष्टि अस सूर सुजाना । सनमुख कृपासिंधु भगवाना ॥२॥
कलित कंजलोचन घनबरना । आनन हृदय भक्त तमहरना ॥
चारु लिलाट खोर श्री खंडन । माल जयंति जनन मनमंडन ॥ ३ ॥
जज्ञोपवीत पीतपट राजा । निज छवि कोटि मदन मद लाजा ॥
चितवनि चारु मुनिन मन मोहन । धृत गोपाल बेस बर सोहन ॥ ४ ॥
मूरति बिमल बाल बल भय्या । निरत प्रबर धरचारन गय्या ॥
सूर बिलोकि रूप मन हरना । पर्‌यो दंडवत चरनन धरना ॥ ५ ॥
सुमरि कृष्ण जब सीस उठाया । कीन तुरंत मुगध प्रभु माया ॥
जानत भयो सूर मनमाहीं । गोप बाल नँदनँदन काहीं ॥ ६ ॥
लग्यो बहुरि अस बदन उचारन । तुमहुं कूप चुत कीन निवारन ॥

भयो सहाय अंध तकि मोरा । अहो कीन उपकार न थोरा ॥ ७ ॥
बंदहुं बार बार अब तोही । कीन्यो कूप त्रास-गत मोही ॥
अब वृतांत निज देहु सुनावा । कहि ते आव कवन किति जावा ॥ ८ ॥
मोह व्यवस अस तासु निहारी । बोले गोप वेस गिरधारी ॥
मथुरा बसहुं गोपसुत भय्या । आवा बिपुन चरन हितगय्या ॥ ९ ॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना । उहां निवरन कूप चुत कीना ॥
अब तुम जाहु सदन सुखमाना । मैं इत करहुं बिपन निजप्याना ॥१०॥
दोहा—अस कहि बतसल भक्तप्रभु , कृष्ण दलन दुख क्रूर ।
द्रुमन ओट करुनायतन , गए कछुक जब दूर ॥ १ ॥

चौपाई ।

तब दरसन हित सूर सुजाना । पाछिल चल्यो बेग अकुलाना ॥
गवन्यो कहां बाल मृदु अंगा । हरण ललित छबि कोटि अनंगा ॥१॥
इतउत फिरहिं बिथत मन माहीं । आवत दृष्टि बाल प्रभ नाहीं ॥
अति से कलेस सूर तब पावा । पूछत पथक देखि जित आवा ॥२॥
कौ अस बरन स्याम मृदु चारू। बेत्रपानि गय्यन चरवारू ॥
कामर कंध्र माल बन सोहा । देखा तुमहु बाल मन मोहा ॥३॥
सुनितहि कथन पथिक इहि भांती। इह कस कहत कवन तोहि भ्रांती ॥
इहां न काउ धेन बनचारी । जाहु सजन निज सदन सिधारी ॥४॥
सूर सुनत अस पथक बखाना । आगल चल्यो बिपन बिसमाना ॥
खोजत नील जलधवत बरना । गोपवाल कानन मन हरना ॥५॥
भ्रमत भ्रमत दारुन स्रम पाया । बैठ्यो अंत बिथत द्रुगछाया ॥
तोलो हुन्यो सूर निसि छायो । भक्त सूर व्याकुल उठि धायो ॥६॥
जहं तहं लग्यो भ्रमन बन माहीं। खोजत गोपवाल मृदुकाहीं ॥
गति अनन्न अस भक्त जडाना । भा तदरूप कृष्ण भगवाना ॥७॥
पावन भक्ति प्रीति मन माहीं । तजि न जाहि कानन पुर काहीं ॥
तब निसि स्वपन रूप मृदु सोई। देखे दिवस गोपसुत जोई ॥८॥
मंदहास जुत भक्त सहय्या । बोले बदन बचन सुख दय्या ॥
इहां न भक्त गोपसुत कोई । मैंहुं कीन कौतुक कल सोई ॥९॥
कीन्यो तुमहिं कूप चुत वारन । बनत गोप बन गय्यन चारन ॥
ज्योति बिमल तुव दृगन प्रकासा । भक्त सृष्ट सब मोर बिलासा ॥१०॥
तुव नयनन इन लीन निहारी । मोर सरूप भक्त ब्रतधारी ॥

तुव हित देन दरस मन हारू । इह मैं कीन चेष्ट निज चारू ॥११॥
दोहा—अब मथुरा तुव गवन करि , मोर चरित गुन गान ॥
करि गायन भव पूर्ववत , बिचरहु अभय सुजान ॥१॥
चौपाई ।
सुनि प्रभु बचन सुखद अभिरामा । सूर दंडवत करत प्रनामा ॥
बोल्यो आज धन्य जगदीना । जेहि इन दृगन दरस प्रभु कीना ॥१॥
मुनि जोगिन सुर दुरलभ जोई । मोरे सुलभ आज जग सोई ॥
अब न देव कछु संसृति कामा । एक स्मरन तोर अभिरामा ॥२॥
मोरे हृदय लालसा छाई । बिसराहिं सोन भक्त सुखदाई ॥
अरु तुमार माया बलवाना । करहिं न मोहि मुगध भगवाना ॥३॥
हे कृपाल कल कमल बिलोचन । हृदय भक्त जन सोच बिमोचन॥
जिन नयनन अस रूप तुमारा । मैं प्रतक्ष प्रभु लीन निहारा ॥४॥
तिन सन जगत बिलोकन काहीं । दीनदयाल मोरे रुचि नाहीं ॥
ताते करहु पूर्बवत मोरे । दृग, बिहीन बंदहुं प्रभु तोरे ॥५॥
तुव सरूप नित दीन सनेहू । देखत रैहुं दिवस निसि एहू ॥
करि अस बिनय बदन अनुरागा । भयो बिराम सूर बड भागा ॥६॥
बोले कृष्ण भक्त चित चोरा । सूर कथन सब संतत तोरा ॥
होंहिं सत्य संसय कछु नाहीं । भाषि बदन अस त्रिभुवनसांई ॥७॥
भये लुपत प्रभु भक्त उबार्‍यो । उठे सूर जन स्वपन बिचार्‍यो ॥
जुगल अंध लोचन निज पायो । प्रभु पद सीस मनहिं मनभायो ॥८॥
निज कलपत-पद पावन चारू । लग्यो करन गायन मन हारू ॥
उदय अरन तजि बिपन सधाए । जमना तीरं भक्त बर आए ॥९॥
करि सनान गुन गन प्रभु गाते । मथुरा आय भक्ति मद माते ॥
भजन प्रभाव देखि अधिकाई । सादिर कराहिं लोक सिवकाई ॥१०॥
दोहा—सबकर हित जीय मानिनिज, द्विज बिरक्त संसारु ।
रटन कृष्ण गुनगन निरत, सूर भक्त व्रत धारु ॥ १ ॥
चौपाई ।
अवसर एक मलेछ सुहावा । बिदत दलीस लोक सब गावा ॥
संजुत भक्ति प्रीति हरषाए । तास सूर जन लीन बुलाए ॥ १ ॥
आवत देखि भक्त अभिरामा । साह कीन उठि दंडप्रनामा ॥
सादिर सूचि आसन बैठारे । भक्ति पूरबक बचन उचारे ॥ २ ॥

तुव जादव प्रभु लोगन गाए । भक्त कृष्ण भगवान सुहाए ॥
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू । देहु उतर उर हरहु संदेहू ॥ ३ ॥
सदन मोर प्रभु अगनित भामा । एक तें एक सरस अभिरामा ॥
तिनहुं मध्य जादव कुलबारी । ऐहिं कोऊ किन भक्त मुरारी ॥ ४ ॥
सुनि दलीस अस कथन सुहावा । सूर बदन अस वचन अलावा ॥
सुनहु धरन नाइक बड भागी ! करहुं कथन कछु तुव हितलागी ॥ ५ ॥
जिहितें तोर मनोरथ एहा । अबहिं होहिं फुर बिगतसंदेहा ॥
इह तुमार संकुल बर नारी । तुमहिं देखि पुनि मोहिं निहारी ॥ ६ ॥
क्रम तें एक एक अस आई । करहिं गमन इत मारग राई ॥
तिनहुं मध्य तब कर त्रीय जोई । सो निज सकुचलाज सब खोई ॥ ७ ॥
मोहि सन करहिं रुचिर संभाषा । होहिं तुरंत बहुरि मृत तासा ॥
साह सुनत अस दीन रंजाई । महिषी सुनत सकल चलिआई ॥ ८ ॥
एक एक करि नम्र प्रनामा । चली जात भामन निज धामा ॥
आई एक सबन तें पाछे । पति प्रिय रूप ललित गुनआछे ॥ ९ ॥
दोहा—निरखत सनमुख हरषबस , कहि सबदन मुसकाय ।
कहि तें कीन आगमन तुव , मोर मरम कछु पाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

देखत कहि ससूर तिहि ओरा । सुभ्रे मोहि मरम सब तोरा ॥
भामन सुनत चरन गहि लीने । देखत सबन प्रान तजि दीने ॥ १ ॥
महिषी आन देखि अस तासा । लागी रुदन करन संभाषा ॥
साहु बिथत मानस बिसमायो । धरत धीर पुनि बदन अलायो ॥ २ ॥
बंदहुं बार बार अब तोही । भगवन करहुं कथन सब मोही ॥
कोइ हरही भवन मम भामा । जहि अस तज्यो बपुष निसकामा ॥ ३ ॥
तब पूरबबतहि कथा सुहायन । लागे सूरदास मुखगायन ॥
इह मथुरा पुरि बसहि सुहाई । बार बधू सब लोगन गाई ॥ ४ ॥
हाव भाव कल निरत परायन । कला प्रवीन परम कटु गायन ॥
सभा महिंद्र धनक जन जाई । निज प्रभाव गुन लेत रहाई ॥ ५ ॥
काहु धनाढ्य काल सुभ पायो । पानिग्रहन निज सुवन रचायो ॥
इहि कहं पठ्यो बोलि सनमाना । लाग्यो होन नृत्य कलगाना ॥ ६ ॥
करि निज कला ललित चतुराई । मूर्छित सभा कीन समुदाई ॥
तब कोऊ आन देस कर राई । इहि नृत गीत देखि चतुराई ॥ ७ ॥

निज पुर गयो लेत हरषाना । पावा तहां बिबिध सनमाना ॥
एक दिवस रत नृत्य अगारा । देखिस रुचिर धरन पतिदारा ॥ ८ ॥
सजि सृंगार आभरन सोहन । ठाडी मनहु मान रति मोहन ॥
चारि ओर परिवारत दासी । सेवइ सुखद रूप गुन रासी ॥ ९ ॥
अस प्रभाव दृग देखि सुहावा । तहि कर हृदय मनोरथ छावा ॥
हमहुं होब इहि सम कस रानी । अस विचारि मानस सकुचानी ॥१०॥
इन कर भूप पुण्य संसारा । हमहुं अधम धिग जनम हमारा ॥
पुनि देखिस छित पत पटरानी । देत दान दीनन रति मानी ॥११॥
दोहा—धन भूषन पट भक्तिजुत, करत सकल सिवकाई ।
अतथि संत आवतसदन, भोजन देहुं जिवाई ॥ १ ॥
हमहुंकरब यदि पुण्यअस, कहत गुनत जिय माहिं ।
तो पावहुं संसय नहीं, भूप पतनि पद काहिं ॥ २ ॥

चौपाई ।

अस प्रकार पावन सुभ तासा । ललित दान रुचि हृदय प्रकासा ।
तब तहिं दैव योग कर आई । ज्वररुज उपज प्रबल दुखदाई ॥१॥
पुनि पंचत्यभाव कहं सोई । प्रापत भई व्याधि सब खोई ॥
धरम दूत रौरव तहि डाऱ्यो । तहां भोग निज कृत अगसाऱ्यो ॥२॥
सुर पुर गवनि बहुरि हरखाती । अपसर नृत्य गीत कलराती ।
मथुरा भवन भवन भगवाना । जो नृत गीत ललित पुन गाना ॥३॥
कीनसि भक्ति प्रेम सरसाए । तहि परिनास अमर पुरपाए ॥
अरु उपकार देखि नृप रानी । जोतहि हृदय दान रुचिमानी ॥ ४ ॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई । भोगे बिबिध भोग सुखपाई ॥
आज बिदित देखत तुव एहा । मृत बस भई तुरत तजि देहा ॥ ५ ॥
पै जादव बंसी तीय जेहू । रही सो दैव रूप सब तेहू ।
कौतुक करन दैव पुर त्यागी । आई धरनि कृष्ण अनुरागी ॥ ६ ॥
गवनी बहुरि अमर पुर काहीं । रही सो मनुज रूप कछु नाहीं ॥
अस कहि सूरदास हरषाते । मांगि बिदाय भक्ति मदमाते ॥ ७ ॥
तब दलीस सादिर धन दीना । भक्त सृष्ट सृइ कारन कीना ॥
हमरे नहिन द्रव्य कछु कामा । तब दलीस बरनन्त अभिरामा ॥ ८ ॥
धऱ्यो सीस नमृत कर जोरी । बिनय बदन कछु कीनन थोरी ॥
चले सूर तब होत बिदाए । हरषत कृष्ण ललित पुरआए ॥ ९ ॥

अगनित बिमलभक्ति सरसावन । बिरचत कृष्ण चरित पदपावन ॥
रहे करत गायन संसारा । सकल लोक हित हृदय बिचारा ॥१०॥
पदन प्रबंध सूर जन नागर । बाध्यो जलहुं सेतु भव सागर ॥
बिनु प्रयास कलिकाल मझारा । तहि प्रसाद उतरत सब पारा ॥११॥
दोहा—सूर सूरसम बिदतजग, सकल कविन सिरमोर ।
सूरस्याम जेहि भक्ति बस, भए भक्त चित चोर ॥ १ ॥
जो लो बिचरें धरण तल, पलन बिसारे स्याम ।
भए अंत अलचर नकल, कंज कृष्ण अभिराम ॥ २ ॥

बाबू रघुनाथ सिंह तालुकेदार भदवर ने मुझे १६ दोहे दिये थे उन दोहों में सूरदास के समय के कवियों के नाम है पर कईएक में मुझे संदेह है जो हो वे दोहे नीचे प्रकाश किये जाते हैं ।

दोहा—सूरदास के समय में, जो कबि भये महान ।
उन सब से बढ़ि के सबें, इन्हैं करत सनमान ॥१॥
[१] ओलिराम [२] अकबर [३] अगर, [४] दास कबी [५] करनेस ।
[६] चतुरबिहारी [७] गोपकबि, [८] घनआँनँद [९] अमरेस ॥ २ ॥
[१०] आसकरन [११] अजबेस अरु, [१२] कादर [१३] केसवदास ।
[१४] टोडर [१५] गोबिंद [१६] जैतकवि, [१७] चरन [१८] चतुरभुजदास ॥ ३ ॥
[१९] जीवन [२०] केसो [२१] ताजकवि, [२२] होलराय कवि [२३] खेम ।
[२४] जोधा [२५] जोयसी [२६] चंदसपि, [२७] कृष्णदास कवि [२८] छेम ॥ ४ ॥
[२९] अमृत [३०] खानखाना [३१] जगन, [३२] ऊधोराम [३३] कमाल ।
[३४] जमालुदीन [३५] जगनंद कवि, [३६] गोबिंददास [३७] जमाल ॥ ५ ॥
[३८] जमालुदीन [३९] कल्यान कबि, [४०] फैजी [४१] ब्रह्म [४२] फहीम ।
[४३] अभयराम [४४] परसिद्ध कवि, [४५] बिट्ठलबिपुल [४६] रहीम ॥ ६ ॥
[४७] अमरसिंह [४८] घनश्याम हूं, [४९] दील्ह [५०] नरोत्तमदास ।
[५१] चेतनचंद [५२] कविंद [५३] भट, [५४] बारक [५५] बिद्यादास ॥ ७ ॥
[५६] छितस्वामी [५७] भगवतरासिक, [५८] छत्र [५९] बिहारीलाल ।
[६०] मिश्रगदाधर [६१] मानसिंह, [६२] लालन [६३] मोतीलाल ॥ ८ ॥

[६४] हरीदास [६५] हरिनाथकवि, [६६] मानराय [६७] रघुनाथ ।
[६८] मिश्रगनेस [६९] कबीर अरु, [७०] लीलाधर [७१] कबिनाथ ॥ ९ ॥
[७२] दामोदर [७३] दिलदार कवि, [७४] दौलत [७५] नागर [७६] दास ।
[७७] नंदन [७८] हितहरिबंस कबि, [७९] सेन [८०] नारायनदास ॥ १० ॥
[८१] नीलकंठ [८२] नँदलाल कबि, [८३] नंददास [८४] रसखान ।
[८५] नाभा [८६] नरबाहन [८७] नरसि, [८८] नारायणभट [८९] तान ॥ ११ ॥
[९०] निपटनिरंजन [९१] इंद्रजित, [९२] पृथीराज को जान ।
[९३] लछमीनारायन [९४] हरी, [९५] बलीभद्र को मान ॥ १२ ॥
[९६] बिट्ठलनाथ [९७] बिसुनाथ कबि, [९८] पदुमनाभ [९९] परवीन ।
[१००] भगवनदास [१०१] मनोहरा, [१०२] परमानंद [१०३] नवीन ॥ १३ ॥
[१०४] मानिकचंद [१०५] निहाल कवि, [१०६] मुकुंद [१०७] मुबारक [१०८] बीर ।
[१०९] देव [११०] दिनेश न [१११] दानकबि, [११२] तेही [११३] तोषी न [११४] धीर ॥ १४ ॥
[११५] श्रीपति जद्यपि भक्ति में, न्यून न कछुक लखात ।
तद्यपि कबिता में कहाँ, समता कछु न दिखात ॥ १५ ॥
[११६] बिद्यापति आदिक कबिन, जितने भये सुजान ।
काव्य भाव में सूर सम, [११७] तुलसी * एक प्रमान ॥ १६ ॥

चौरासीवार्ता—बाल कृष्ण जी से ।

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिन की बार्ता ।

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू अंडेलते ब्रज कों पाउं धारे सो कितनेक दिन में गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचा-

२।४—अगरदास और अगर कवि ।

९१—धीर नरिन्द्र भी इन का नाम है ।

९९—प्रवीनराय पातुरी ।

१००—भगवानदास

* अंक वाले कवियों का आगे वर्णन किया जायगा ।

बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू पांवधारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू श्नान करि कें संध्याबंदन करिकें पाक करन कों बैठें और श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन कौ समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतो सो सूरदास जी स्वामी है। आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते तातें बहुत लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जी के सेवक देख कें सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिन ने दक्षिण में दिग्विजय कियौ है सब पंडितन को जीते हैं भक्ति मार्ग स्थापन कियो है सो श्री बल्लभाचार्य यहां पधारे हैं तब सूरदास जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जो तू जाय कें दूर बैठि जब आप भोजन करि कें बिराजें तब खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों जांयगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयौ तब श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर कर के महाप्रसाद लै के श्री आचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुंचि कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आसपास आय बैठे तब वह सूरदास को सेवक आयो सो सूरदास सों कही जो श्री आचार्य जी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थल तें आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो सूर आवो बैठो तब सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि कें आगे आय बैठे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो सूर कछु भगवद् जस वर्णन करो तब सूरदास नें कही जो आग्या तब सूरदास जी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ सो पद ।

राग धनाश्री ।

हों हरि सब पतितन को नायक ॥ को करि सके बराबर मेरी इते मान को लायक ॥१॥ जो तुम अजामेल सों कीनी जो पाती लिख पाऊं। होय बिस्वास भलौ जिय अपने औरहु पतित बुलाऊं ॥२॥ सिमिट जहां तहां ते सब कोऊ आय जुरे एक ठौर । अब कें इतने आन मिलाऊं बेर दूसरी और ॥ ३ ॥ होडाहोडी मन हुल्लास करि करे पाप भरि पेट ॥

सबहि न ले पायन तर परिहौं यही हमारी भेट। ऐसी कितनीक बनाऊं प्रानपति सुमिरन है भयो आडौ। अब की बेर निवार लेउ प्रभु सूरपतित का टाडौं।

फिर दूसरो और पद गायौ सो पद।

राग धनाश्री।

प्रभु मैं सब पतितन कौ टीकौ। और पतित सब द्यौस चार के मैं तौ जन्मत ही कौ ॥१॥ बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतनाही कौ। मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे शूल कैसें जी कौ ॥२॥ कोऊ न समरथ सेव करन कों खेच कहत हौं लीकौ। मरियत लाज सूरपतितन में कहत सबन में नीकौ ॥३॥

ऐसो पद श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी नें गायौ सो सुनि कें श्री अचार्य जी महाप्रभून नैं कह्यौ जो सूर है कैं ऐसो काहे कों घिघियात है कछु भगवद लीला वर्णन करि तब सूरदास ने कह्यौ जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास कों नाम सुनायौ पाछे समर्पण करिवायौ और दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोष दूर भये ताते सूरदास जी कों नवधा भक्ति सिद्ध भई तब सूरदास जी ने भगवद लीला वर्णन करी अनुक्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कंध की सुबोधनी जी में मंगलाचरण को प्रथम कारका किये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी ने कह्यौ सो—श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीला क्षराब्धि सायिनं।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभी सेव्य मानं कलानिधि ॥ १ ॥

और ताही समें श्री महाप्रभून के सन्निधि पद किये सो पद।

राग बिलावल।

चकई री चलि चरन सरोवरि जहां न प्रेम बियोग।

यह पद संपूरण करि कें सूरदास जी नें गायो सो यह पद दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारका के अनुसार कियौ सो यामें कह्यौ है जो तहां श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदास नें या भांति पद किये तातें जानी जो सूरदास कों संपूर्ण सुबोधनी स्फुरी सो श्री आचार्य जी महाप्रभून ने जान्यौ जो लीला कौ अभ्यास भयौ पाछें सूरदास जी ने नंद महोत्सव कियौ सो श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो सो पद।

राग देवगंधार ।

ब्रज भयौ महर कें पूत जब यह बात सुनी ।

सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहें जो सूरदास मानों निकट्ही हुते पाछें सूरदास जी नें अपने सेवक किये हुते तिन सबन कों नाम दिवायौ पाछें सूरदास जी नें बहुत पद किये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सूरदास जी कौं पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदास जी को संपूरण भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद किये सो भागवत प्रथमस्कंध ते द्वादसस्कंध पर्यंत(ताई)किये तातें वे सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीय है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन बिराजे पाछें फेर ब्रज कों पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज कों आये ।

वार्ता प्रसंग ॥१॥

अब जो श्री आचार्य जी महाप्रभू ब्रज कौं पाव धारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये तब श्री महाप्रभू जी अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो सूरदास श्री गोकुल को दर्शन करौ सो सूरदास नें श्री गोकुल कों दंडवत करी सो दंडवत करत मात्र श्री गोकुल की बाल लीला सूरदास जी के हृदै में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्री महाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी है ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्री गोकुल की बाल लीला स्फुर्तना भई तब सूरदास जी नें मन में बिचार्यौ जो श्री गोकुल की बाल लीला कौ वर्णन करि कें श्री आचार्य जी के महाप्रभून के आगें सुनाइये जन्म लीला कौ पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्री गोकुल की बाल लीला कौ पद गायौ सो पद ॥१॥

राग विलावल ।

सोभित कर नवनीत लिये । घुटुरुवन चलत रेणुतनमंडित मुख लेप किये ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन कौ तिलक दिये । लार लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पियें ॥२॥ कठुला कंठ बज्र केहरनख राजत हैं सखि रुचिर हियें। धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ सत कलप जियें ॥३॥

यह पद सूरदास नें गायो सो सुनि कें आप बहुत प्रसन्न भये पाछें

औरहू पद गाये तब श्री महाप्रभू जी अपने मन में विचारें जो श्रीनाथ जी के इहां और तौ सब सेवा कौ मंडान भयौ है पर कीर्तन कौ मंडान नाहीं कियौ है तातें अब सूरदास जी कौं दीजिये तब आप श्री जी द्वार पधारे सो सूरदास जी कों साथ लिये हीं सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुंचे तब आप स्नान करि कें मंदिर में पधारे तब सूरदास जी सों कह्यो जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करि कें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि तब सूरदास पर्वत ऊपर जाय कें श्री नाथ जी को दर्शन कियौ तब आप ने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथ जी कौं सुनावौ तब सूरदास ने प्रथम विज्ञप्ति को पद गायौ सो पद।

राग धनाश्री।

अब हों नाच्यौ बहुत गुपाल॥

यह पद संपूरण करि कें श्रीनाथ जी के आगे गायौ तब श्री महाप्रभू जी नें कह्यौ जो सूरदास अब तौ तुम में कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या प्रभू न नें दूरकीनी तातें कछू भगवद् जस वर्णन करौ तब सूरदास ने महात्म और लीला ऐसो जस करि कें गाय सुनायौ सो पद।

राग गौरी।

कोन सुकृत इन ब्रजवासिन कौ।

यह पद संपूरण करि कें गायौ सो सुनि कें श्री महाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये सो जसो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें मार्ग प्रकास कियौ हो ताके अनुसार सूरदास जी ने पद किये श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग कौ कहा स्वरूप है महात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढ स्नेह की तौ परम काष्टा है और स्नेह आगे भगवान कौ महात्म्य रहत नाहीं तातें भगवान बेर बेर महात्म्य जनावत हैं नाम प्रकरन में पूतना करि सकट तृनावृत करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसें करि कें भगवान नें बहुत महात्म्य जतायौ परि इन ब्रज भक्तन कौ स्नेह परम काष्टापन्न है तातें ताही समें तौ महात्म्य रहे पाछें विस्मृत होय जाय।

वार्ता प्रसंग॥२॥

और सूरदास जी नें सहस्रावधि पद किये हैं ताकौ सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सूरदास जी के पद देशाधिपति नें सुनें सो सुनि कें यह विचार्यौ जो सूरदास जी काहू रीत(विधि)सों मिलैं तौ भलो सो भगवद् इच्छा तें सूरदास जी मिले सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति नें जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने बिसन पद बहुत किये हैं

जो मोकों परमेश्वर नें राज दियो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं तातें तुमहूं कछु गावो तब सूरदास जी नें देशाधिपति के आगें कीर्तन गायो सो पद।

राग बिलावल।

मना रे तू करि माधौ सों प्रीति।

यह पद देशाधिपति के आगें संपूरण करि कें सूरदास जी ने गायौ सो यह पद कैसो है जो या पद कौ अहर्निस ध्यान रहे तौ भगवद् अनुग्रह की सदां सालि रहे और संसार ते सदा वैराग्य रहे और कुसंग कौ सदां भय रहे और भगवदीय के संग की सदां चाह रहे और श्री ठाकुर जी के चरणाविंद ऊपर सदां स्नेह रहे देसाधिक ऊपर आशक्ति न होय ऐसो पद देसाधिपतिकों सुनायौ सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर ने राज दीनों है सो जब गुनी जन मेरो जस गावत है तातें मेरो जस कछु गावौ तब सूरदास जी नें यह पदगायौ सो पद।

राग केदारा।

नाहिं न रह्यौ मन में ठौर।

यह पद संपूर्ण करि कें गायौ सो सुनि कें देशाधिपति अकबर पातशाह अपने मन में बिचार्‌यौ जो ये मेरौ जस काहे कों गामेंगे जो इन कों मेरो कछु बात को लालच होय तौ गामें ये तो परमेश्वर के जन हैं और सूरदास जी ने या पद के अंत में गायौ हो जो सूर ऐसे दर्श कों ए मरत लोचन प्यास यह गायो हौ सो देसाधिपति नें पूछो जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तौ देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखे तुम उपमा कों देत हो सो तुम कैसें देत हो तब सूरदास जी कछु बोले नाहीं तब फेर देसाधिपति बोल्यो जो इन के लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो बरनन करत हैं तब देशाधिपति ने सूरदास जी के समाधान की मन में बिचारी जो इन कों कछू दियो चाहिये परि यह तौ भगवदीय हैं इन कों काहू बात की इच्छा नाहीं पाछैं सूरदास जी देसाधिपति सों बिदा होय कें श्री नाथ जी द्वार आये।

वार्ता प्रसंग ॥३॥

एक समें सूरदास जी मार्ग में चले जात हैं सो कोऊ चौपड खेलते हुते

सो वा चौपड खेल में ऐसे लीन हो जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मग्न है सो देख कें सूरदास जी के संग भगवदीय है तिन सों सूरदास जी ने कह्यौ जो देखौ वह प्रानी कैसो अपनों जमारो खोवत है भगवान नें तौ मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो तौ या देह सौं हाड कूटत है यामें यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तौ अपजस और परलोक में भगवान ते वहिर्मुखता तातें श्री ठाकुर जी नें इन कों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समें एक पद सूरदास जी ने अपने संगिन सों कह्यौ सो पद ।

राग केदारो ।

मन तू समझ सोच बिचार। भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ १ ॥ साधु संगति डार पासा फेर रसना सार । दांव अब कें पर्‍यो पूरो उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ बाक सत्रे सुनि अठारे पंचही कौं मार। दूर तें तजि तीन काने चमकि चोंकि बिचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नार। सूर हरि के पद भजन बिन चल्यौ दोऊ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जी ने अपने संग के भगवदीयन सों कह्यौ सो या पद में सूरदास जी ने कहा कह्यो मन तू समझ सोच बिचार। ये तीनों वस्तु चोपड में चाहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चहिये काहे ते जो समझ न होय तौ श्रवण कहा करे गौ ताते पहिलें तौ समझ चाहिये और सोच कहिये चिंता सो भगवान के प्राप्ति की चिंता न होय तौ संसार ऊपर बैराग्य कैसें आवै तातें सोच कहिये और विचार जो या जीव कौं विचार ही नहीं तौ संग दुसंग में कहा करैगो तातें विचार चहिये सो ये तीनों वस्तु होंय तौ भगवदीय होय तातें ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहिये और चौपड़ में हूं तीनों वस्तु चाहिये समझ कहें गनबो न आवे तौ गोट केसें चले और सोच अगम जो मेरें यह दाव पड़े तौ यह गोट चलूं विचार जो वाही में तन मन जो ये तीनों वस्तु होंय तौ चौपड़ खेली जाय सो वे सूरदास जी श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे परम भगवदीय है।

वार्ता प्रसग ॥४॥

बहुर श्री सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आय्र कें बहुत दिन तांई

श्री नाथ जी की सेवा कीनी बीच बीच में श्री गोकुल श्री नवनीत प्रिया जी कों दर्शन कों आवते सो एक समें सूरदास जी श्री गोकुल आये श्री नवनीत प्रिया जी के दर्शन कीये और बाल लीला के पद बहुत सुनाये सो श्री गुसांई जी सुनि कें बहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसाई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ सो पालना सूरदास जी नें श्री नवनीतप्रिया जी झूलत हुते ता समय गायो सो पद ।

राग रामकली ।

प्रेषपर्यंकशयनं ।

यह पद सूरदास जी नें संपूर्ण करि कें गायौ सुनायौ श्री नवनीत-प्रिया जी को पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद कीये सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पालना के भाव अनुसार पद गायो सो पद ।

राग बिलावल ।

बाल बिनोद आंगन में की डोलनि । मणिमय भूमि सुभग नंदा-लय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥ कठलाकंठ रुचिर केहरनख व्रजमाल बहु लई अमोलनि । बदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मधु गनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यों कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि । कहे जन सूर कहालों बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

और पद राग बिलावल ।

गोपाल दुरे हें माखन खात । देख सखी सोभा जो बढी अति श्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी ह्वै जिहिं बिधि नहिं लखि लेत । चक्रित नैन चहुं दिस चितवत और सवन कों देत ॥ २ ॥ सुंदर कर आनन समीप हरि राजत यहे अकार ॥ जनु जलरुह तजि बेर बिधि सों लाये मिलत उपहार ॥३॥ गिरि गिरि परत बदन ते ऊपर ह्वै दधि सुत के बिंदु । मानहुं सुधाकन खोरवत पिय जन बिंदु ॥ ४ ॥ बाल बिनोद बिलोक सूर प्रभु बित भई व्रज की नारि । फुरतन बचन बर-जिवे कौ मन गहि बिचार बिचार ॥ ५ ॥

राग जैतश्री ।

कहां लगि बरनों सुंदरताई । खेलत कुमर कांतिक आंगन में नैन

निरखि सुखपाई ॥१॥ कुलहे लसत श्याम सुंदर के बहुविधि रंगवि बनाई ॥ मानउ नव धन ऊपर राजत मधुवा धनुष चढाई ॥ २ ॥ सेत पीत अरु असित लाल मणि लटकन भाल रुराई। मानहुं असुर देव गुरु सों मिलि भूमिज सो समुदाई ॥ ३ ॥ अति सुदेस मृदु चिहुर हरत मनमोहन मुख बिगराई। मानहुं मंजुल कंजन ऊपर दर अलि आवलि फिरि आई ॥ दूध दंत छवि कही न जात कछु अलि पल लप झलकाई ॥ किलकत हंसत दुरित प्रगटत मानों बिंदु में बिपुलताई ।• खंडित बचन देत पूरन मुख अद्भुत यह उपमाई। घुटुरुन चलते उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि-जाई ॥ ६ ॥

राग रामकली।

देखो सखी एक अद्भुत रूप। एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधि सुत जूप ॥ १ एक अवलि दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंज चार चढ़िगहि देखियत कहो कहां स्वरूप ॥ २ ॥ सिसुगन में भई सोभा करो कोऊ बिचार ॥ सूर श्री गोपाल कीं छवि राखौ यह निरधार ॥ ३ ॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछैं फेर श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ९ ॥

अब सूरदास जी नें श्री नाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताईं ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है यह विचार कें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करें हैं ऐसो जो परासोली तहां सूरदास जी आये श्रीनाथ जी की ध्वजा कों दंडोत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन में यह जो श्री आचार्य जी सहा प्रभु दर्शन देंयगे अब यह देह तौ थकी तातें अब या देहसों श्रीनाथ जी कौ दर्शन होय तौ जानियें परम भाग्य है श्री गुसांई जी कौ नाम कृपा सिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरनकर्त्ता है ऐसें विचार कें सूरदास जी श्री गुसाईं जी को चिंतवन करत हैं और श्री गुसांई जी कैसें कृपासिंधु है जैसें सूरदास जी उहां स्मरण करत हैं तैसें श्री गुसाईं जी इन कों छिनहुं नाहिं भूलत हैं श्रीनाथ जी कौ सिंगार हो तौ ता समैं सूरदास जी मणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते सो ता दिन श्री गुसाईं जी श्रीनाथ जी कौ शृंगार करत हुते और सूरदास जी कों कीर्तन करत न देख्यौ तब श्री गुसाईं जी ने पूछी जो सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे तें तब काहू वैष्णव ने

कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तौ आज परासोली को आये [illegible] हैं तब श्री गुसांई जी नें जान्यौं जो भगवद् इच्छा ते अवसान समें हैं तातें सूरदास जी परासोली गये हैं तब श्री गुसांई जी नें अपने सेवकन सों कह्यौ जो पुष्टिमार्ग को जहाज जात है जाकों कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवद् इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत है तौ मैंहूं आवत हों पाछें श्री गुसांई जी बेरबेर सूरदास जी की खबरि मंगायौ करें जो आवै सोई कहे जो महाराज सूरदास जी तौ अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसें करत श्रीनाथ जी के राजभोग कौ समय भयौ सो राज भोग आरती करिकें श्री गुसांई जी गिरिराज ते नीचें उतरे सो आप परासोली पधारे भीतर के सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्री गुसांई जी के सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्री गुसांई जी के साथ आये सो आवत ही सूरदास जी सों श्री गुसांई जी नें पूछौ जो सूरदास जी कैसें हौ तब सूरदास जी नें श्री गुसाई जी कों दंडौत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हौ महाराज की बाट देखत हुतौ यह कहिकें सूरदास जी नें एक पद कह्यौ सो पद ॥

राग सारंग ।

देखौ देखौ हरि जूकौ एक सुभाय ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जानि सिरोमनि राय ॥१॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान। समझि दास अपराध सिंधु सम बूंदन एकौ जान ॥२॥ बदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है ऐसें ॥ ऐसे बिमुखहु भये कृपा या मुख की जब देखौ तब तैसे ॥ ३ ॥ भक्त बिरह करुत करुणामय डोलत पाछैं लागै ॥ सूरदास ऐसे प्रभु कों कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी नें कह्यौ सो सुनिकें श्री गुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसे दैन्य प्रभू अपने सेवकन कों देहिं या दैन्य के पात्र एही हैं तब वा बेर श्री गुसांई जी के पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हू ठाडे हुते तब चत्रभुजदास नें कह्यौ जो सूरदास जी नें बहुत भगवद् जस बर्णन कियौ परि श्री अचार्य जी महाप्रभून कौ बर्णन नाहीं कियौ तब यह बचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो मैं तौ सब श्री आचार्य जी महाप्रभून कोही जस बर्णन कियौ है कछू न्यारौ देखूं तौ न्यारो करूं परि तेरे साथ कहत हों या भांति कहिकें सूरदास जी नें एक पद कह्यौ सो पद ॥

राग बिहागरो।

भरोसो दृढ इन चरनन केरो ॥ श्रीबल्लभनख चंद छटा बिनु सब जग मांझि अंधेरो ॥१॥ साधन और नहीं या कलि में जासों होत निबेरो। सूर कहा कहे दुबिंधि आंधरो बिना मोल को चेरो ॥३॥

यह पद कह्यौ पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई तब श्री गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित की वृति कहां है तब सूरदास जी नें एक पद और कह्यौ सो पद ॥

राग बिहागरो।

बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमनि प्रीत करी कैसें होत है छानी ॥ १ ॥ वे जु धरत तन कनक पीतपट सो तो सब तेंरी गति ठानी । तें पुनि श्याम सहज वे सोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अबही ह्वै आयौ निरखि देखि निज देह सियानी ॥ सूरसुजान के बूझे प्रेम प्रकास भयौ बिहसानी ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनो कहिकें श्री सूरदास जी के चित श्री ठाकुर जी कौ श्री मुख तामें करुणा रस के भरे नेत्र देखे तब श्री गुसाईं जी पूछौ जो सूरदास जी नेत्र की वृति कहां है तब सूरदास जी नें एक पद और कह्यौ सो पद ॥

राग बिहागरो।

खंजन नैन रूप रस माते ॥ अति से चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ॥१॥ चल चल जात निकट श्रवनन के उलट पलट ताटंक फंदाते ॥ सूरदास अंजन गुन अटके नातर अब उडिजाते ॥२॥

इतनों कहत ही सूरदास जी नें या शरीर कौ त्याग कियौ सो भगवद लीला में प्राप्ति भये पाछें श्री गुसांई जी सब सेवकन सहित श्री गोबर्द्धन आये तातें सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते (सो) इन की वार्ता कौ पार नाहीं तातें इन की वार्ता कहांताईं लिखिये।

'सीधीहिन्दी—पहिला भाग में गया गवर्न्मेन्ट स्कूल के पंडित बलदेव मिश्र ने लिखा है कि—' सूरदास का घर कृष्णाबेना गांव में देवशर्म्मा ब्राह्मण का बेटा बिलमङ्गल पांडे इनका नाम था । पहले इनकी चाल-

चलन अच्छी नहीं थी। पीछे ये सुधरे और सवालाख भजन का सूरसागर बना कर बड़े नामी हुए। लोग कहते हैं कि इन्हों ने 'अपनी आंख आप ही फोड़ी थी।'

'सुगम पंथ' में पंडित गनपत लाल चौबे फ़र्स्ट असिस्टेंट मास्टर स्कूल रायपुर ने लिखा है कि—सूरदास किंवा शूरदास—मदनमनोहर शूरध्वज ब्राह्मण दिल्लीनगर के समीप किसी ग्राम के रहनेवाले थे। किसी समय दिल्ली आये वहां एक दिन किसी स्त्री को कोठे पर खड़ी देख उस पर मोहित हुए, और कोठे की ओर इकटक चितै रहे। लोग इनकी दशा देख धिक्कारने लगे परंतु वह स्त्री घर से बाहर निकल बोली "बिप्र जी क्या आज्ञा होती है" बिप्र बोले "क्या सचमुच मेरी आज्ञा पालेगी" वह बोली "निस्सन्देह" मुझे ईश्वर साक्षी है तब तो वह बिप्र के कहने के अनुसार दो सुइयां ले आई और जब बिप्र ने कहा कि मेरी छाती पर बैठ इन दोनों सुइयों को मेरे नेत्रों में घुसेड़ दे उस ने वैसाही किया और तबही से सूरदास कहलाने लगे। लोगों ने इन की बड़ी प्रशंसा कर इन के कहने के अनुसार मथुरा ब्रिन्दावन में पहुंचा दिया यहां पर इन्हों ने सवा लाख विष्णु पद का एक बहुत बड़ा सूरसागर नामी ग्रंथ बनाया निदान कुछ काल तक ये अकबर बादशाह की सभा में रहे और फिर परलोक को सिधारे।

प्राचीन मनुष्यों की कहावत है कि ये उद्धव का अवतार थे वे सब कवियों में श्रेष्ठ गिने जाते हैं यथाः—

दोहा—शूर सूर्य्य तुलसी शशी, उड़गण केसवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहं तहं करहिं प्रकाश॥"

रामरसिकावली के टिप्पणी में लिखा है कि 'अंक वाले कवियों का आगे वर्णन किया जायगा।' परंतु मतिराम कवि का वर्णन काव्यरत्नाकर में लिखा गया है अतएव यहां उन का कुछ काव्य लिखा जाता है।

(१) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुर वाले।

पूरन पुरुष के परम दृग दोऊ जानि कहत पुरान बेद बानियो रति गई। कवि मतिराम दिनपति यों निसापति यों दुहुन की कीरति दिसान मांझ मढि गई। रबि के करन भये एक महादानी यह जानि जिय आनि चिंता चित्त मांझ चढ़ि गई। तोहि राव बैठत कुमांऊं श्रीउदोत चंद चंद्रमा की करक करेजहूं ते कढ़ि गई॥ १॥

ललितललाम ।

परम प्रवीन धीर धरम धुरीन दीनबंधु सदा जाकी परमेसुर में मति हैं। दुर्जन बिहाल करि जाचक निहाल करि जगत में कीरति जगाई ज्योति अति है॥ राउ शत्रुसाल के सपूत पूत भाउसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है। जानपति दानपति हाड़ा हिन्दुवानपति दिल्ली पति दलपति बालाचंद पति है॥ २॥

कैसे आसमान से बिमान से घटा से गज रावरे चलत मानौ मेरु से लहति है। अतल बितल तल हलत चलत दल गज मद राजै दिगदंती चिक्करति है॥ कहै मतिराम संभु दुरद दराज ऐसे जिन्है पाइ कविराज आनंद भरति है। कुंभ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि बिलंद गद गरद करति है॥ ३॥

जब लगि कच्छप कोल सहस मुख धरनि भार धर ।
जब लगि आठौ दिसनि दाबि सोहत दिग्गजबर ॥
जब लगि कवि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल ।
जब लगि सुबरन मेरु सघन घन मगन अगनचल ॥
नृप सत्रुसालनंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि ।
जग चिरंजीव तब लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥४॥

दोहा—भौंह कमान कटाक्ष सर, समरभूमि बिच नैन ।
लाज तजेहूं दुहुन के, सलज सुहृद से बैन ॥ १ ॥
रूपजाल नंदलाल के, परिकरि बहुरि छुटैन ।
खंजरीट मृगमीन से, ब्रजबनितन के नैन ॥ २ ॥

बानी को बसन कैधौं बात को बिलास डोलै कैधों मुखचंद चारु चांदनी प्रकास है। कवि मतिराम कैधों काम को सुजस कै पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुबास है॥ नासा नथुनी के गज मोतिन कै आभा कैधों रतिवंत प्रगटित हिये को हुलास है। सीत करिबे को पिय नैन घनसार कैधों बाला के बदन बिलसत मृदु हास है॥ ४॥

छंदसार पिंगल ।

दाता एक जैसो सिवराज भयो जैसो अब फतेसाहिसी नगर साहिबी समाजु है। जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊं पति परो रज लाज है॥ जैसे जयसिंह जसवंत महाराज भयो जिन को

मही में अजौं बाढ्यो बल साजु है। मित्रसाहि नंद सो बुंदेल कुलचंद जग ऐसो अब उदित सरूप महाराजु है ॥ ५ ॥

लषमनही संग लिये जोबन बिहार किये सीता हिये बसै कहो तासों अभिराम को। नव दल सोभा जाकी बिकसै सुमित्रै लखि कोसलै बसत कोऊ धाम ठाम को ॥ कवि मतिराम सोभा देखिये अधिक नित सरस निधान कबि कोबिद के काम को। कीनौ है कवित्त एक ताम रस ही को यासौं राम को कहत कै कहत कोऊ बाम को ॥ ६ ॥

रसराज।

चंदन चढ़ारी नभ चंदनै चढ़ारी अंग चंद उजियारी देखि नकराति कैसी है। फूंद फंद फबदी गंसीली गांठि गूंदि गूंदि मूंदि मूंदि मुख मंद मंतरात कैसी है ॥ मतिराम मिलन बिहारी तूं प्यारी चलु नितरति बारी आजु जकराति कैसी है। कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसी रात रत रात कैसी है ॥ ७ ॥

चोर की चोर छिनार छिनार की साहु की साहु बली की बली।
ठग की ठग कामुक कामुक की अरु छैल की छैल छली की छली।
परबीनन की परबीनही जानै मतिराम न जानै कहा धौं चली।
उन फेरि दई नथ की मुकुता उन फेरि कै फूंकी गुलाब कली ॥७॥
गोपबधू तन तोलत डोलत बोलत बोल जुकोनल भाषैं।
ऊरु नितंबनि की गुरुता पगजात गयंदनि की गति नाषैं ॥
आगम भो तरुनापन को मतिराम भनै भई चंचल आंषैं।
खंजन के जुग सावक ज्यों उड़ि आवत ना फरकावत पांषैं ॥८॥

येरे मतिमंद चंद धिग है अनंद तेरो जोपै बिरहीन जरि जात तेरे ताप ते। तू तो दोषाकर दूजे धरे हैं कलंक उर तीसरे सखानि संग देखौ सिर छाप ते ॥ कहै मतिराम हाल हाजिर जहान तेरो बारुनी के बासी भासी राहु के प्रताप ते। बांधो गयो मथो गयो पियो गयो खारो भयो बापुरो समुद्र ऐसे पूतहीं के पाप ते ॥ ९ ॥

(२) शिवसिंहसरोज में लिखा है भूषण त्रिपाठी टिकमापुर ज़िले कानपुर सं० १७३८ में हुए। रौद्र वीर भयानक ए तीनौ रस जैसे इनकी काव्य में है ऐसे और कबि लोगों की कविता में नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रसाल पन्ना नरेश के इहां छः महीने

तक रहे तेही पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सतारागढ़ वाले के इहां जाय बड़ा मान पाया औ जब यह कवित्त भूषण जीने पढ़ा (इंद्र जिमी जंभ पर) तब शिवराज ने पांच हाथी औ २५ हजार रूपिया इनाम दिया इसी प्रकार से भूषण ने बहुत बार बहुत २ रूपियां हाथी घोड़ा पालकी इत्यादि दान में पाये ऐसे शिवराज के कवित्त बनाए हैं जिनकी बराबर किसी कवि ने वीर यश नही बनाये पाया निदान जब भूषण अपने घर को चले तौ परना होकर राजा छत्रसाल से मिले छत्रसाल ने बिचारा अब तौ शिवराज ने इन को ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उस्का दशवां हिस्सा भी नहीं दे सकते ऐसा शोच विचार करि चलते समय भूषण की पालकी का बांस अपने कंधे पर धरि लिया ब्राह्मण कोमल हृदय तौ होते ही हैं भूषण जी बहुत प्रसन्न है यह कवित्त पढ़ा। साहू को सराहीं की सराहौं छत्रसाल को । औ दूसरा यह कवित बनाया। तेरी बरछीने बरछीने हैं खलन के। औ दो दोहा बनाय छत्रसाल को दै घर में आए—

दोहा—एक हाड़ा बूंदी धनी , मरद महेवा वाल ।
सालत नौरंगजेब के , ए दोनौं छत्रसाल ॥१॥
ए देखौं छत्तापत्ता , ए देखौं छत्र साल।
ए दिल्ली की ढाल ए , दिल्ली ढाहनवाल ॥२॥

भूषण जी थोड़े दिन घर में रहि बहुत देशांतरों मे घूमि घूमि रजवारों में शिवराज का यश प्रगट करते रहे जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तब राजा ने शोचा कि ये कुछ दान लेने आए हैं औ हमने जो सुना था कि शिवराज ने लाखों रुपिया इन को दिया सो सब झूंठ है ऐसा बिचारि हाथी घोड़े मुद्रा बहुत कुछ भूषण के आगे किया भूषण जी बोले इस की अब भूख नहीं हम इसलिए इहां आए थे कि देखैं शिवराज का यश इहां तक फैला है या नहीं—इनके बनाए हुए ग्रंथ शिवराज भूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास ४ ए चारि ग्रंथ सुने जाते हैं कालिदास जूने अपने ग्रंथ हजारा की आदि में ७० कवित्त नवरस के इन्हीं महाराज के बनाए हुए लिखे हैं।

(३) बिहारीलाल चौबे ब्रजबासी संवत् १६०२ हुए से कवि जयसिंह कछ-

राजे मानसिंह से जो संवत् १६०२ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह हो गये हैं पर हम को निश्चय है कि ये कवि महाराजे मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महा गुणग्राहक थे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे यह बात प्रगट है कि जब महाराजे जयसिंह किसी एक थोरी अवस्था वाली रानी पर मोहित है रात दिन राजमंदिर में रहने लगे राज्य के संपूर्ण काज काम बंद हो गए तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजा के पास तक किसी उपाय से पहुंचाया।

दोहा—नहिं पराग नहिं मधुर रस, नहिं बिकास यहि काल।
अली कलीहूं सो बिंध्यौ, आगे कौन हवाल ॥१॥

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न है १०० मोहर इनाम दे कहा इसी प्रकार के और दोहा बनावो बिहारीलाल ने सात सौ दोहा बनाए औ ७०० अशरफ़ी इनाम में पाया यह सतसई ग्रंथ अद्वितीय है बहुत कवि लोगों ने इस के ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कवि की सुर्खरूई प्राप्त नहीं हुई यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हम ने १८ तिलक तक इस के देखे हैं औ आज तक तृप्ति नहीं है लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तव में इसी ग्रंथ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं।

सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरे वाले का तिलक विचित्र है औ सब सतसैयों में बिक्रमसतसई औ चंदनसतसई इस के लगभग है।

बिहारी कवि २ सं० १७३८ इन के महा सुंदर कवित्त हजारा में है।

बिहारी कवि ३ बुंदेल खंडी सं० १८०६ सरस कविता करी है।

बिहारीदास कवि ४ ब्रजबासी सं० १६७० इन के पद राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुम में हैं।

(५) नीलकंठमिश्र अंतरबेदि बासी संबत् १६४८ दास जी ने इन की प्रशंसा ब्रजभाषा जानने में करी है।

नीलकण्ठत्रिपाठी टिकमापुर वाले मतिराम के भाई। संबत् १७३० इन का कोई ग्रंथ हम ने नहीं देखा।

(६) बेनीकबि प्राचीन असनी जिले फतेपुर वाले। संबत् १६९० ए महान कवीश्वर हुए हैं इन की एक ग्रंथ नाइका भेद में अति विचित्र देखने में आया है इन की कबिताई बहुत ही सरस ललित मधुर है।

बेनीकबि २ बंदीजन बेंती जिले राइबरेली के निवासी संबत्

१८४४ ए कवि महाराजै टिकैत राइ दीवान नवाब लखनऊ के इहां थे औ बहुत वृद्ध है संवत् १८९२ के करीब मर गए।

बेनी प्रवीन ३ वाजपेई लखनऊ के निवासी संबत् १८७६ ए कवि महा सुंदर कविता करने में बिख्यात हैं इन का ग्रंथ नाइका भेद में देखने के योग्य है।

बेनी प्रगट ४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासी के पुत्र संवत् १८८० इन की काव्य महा सुंदर है।

(७) एक शंभु कवि का वर्णन काव्यरत्नाकर की टिप्पणी में है उसके सिवाय यहां लिखा है। शंभुनाथ मिश्र कवि सं० १८०१ ए महाराज महान कवि भगवंत राइ खीची के इहां असोथर में रहा करते थे शिव कवि इत्यादि सैकरों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया कविता में महा निपुण थे रसकल्लोल १ रसतरंगिणी २ अलंकार दीपक ३ ए तीनि ग्रंथ इन के बनाये हुए हैं।

शंभुनाथकवि बंदीजन सं० १७९८ ए कवि सुखदेव के शिष्य थे रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिका की ऐसी इस ग्रंथ में भी नाना छंदैं हैं।

शंभुनाथकवि त्रिपाठी डौंडिया खेरेवाले सं० १८०९ ए महाराज राजा अचलसिंह बैस डौंडिया खेरे के इहां थे राव रघुनाथसिंह के नाम बैतालपचीसी को संस्कृत से भाषा किया है औ मुहूर्त्तचितामणि ज्योतिषग्रंथ को भाषा में नाना छंदों में बनाया है ए दोनों ग्रंथ सुंदर हैं।

शंभुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ए कवि राना यदुनाथ सिंह बैस खजूर गाउं के इहां थे थोरी अवस्था में अल्पायु हो गया बैल बंसावरी औ शिवपुरान का चतुर्थ खंड भाषा में बनाया है।

शंभुप्रसाद कवि शृंगार में सुंदर कवित्त हैं।

(८) तोष कवि सं० १७०५ ये महाराज भाषा काव्य के आचार्य्यों में हैं ग्रंथ इन का कोई हम को नहीं मिला पर इन के कवित्तों से हमारा कुतुबखाना भरा हुआ है कालि दास तथा तुलसी जी ने भी इन की कविता अपने ग्रंथों में बहुत सारी लिखी है।

(९) चिंतामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर वाले सं० १७२९ ए महाराज भाषा साहित्य के आचार्य्यों में गिनेजाते हैं अंतरवेदि में विदित है कि इन के पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवी जी के स्थान में जाते थे वे देवीजी वन की खुइआं कहाती हैं टिकमापुर से एक मैल के अंतर पर

हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न है चारि मुंड दिखाय बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा कि चिंतामनि १ भूषन २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उतपन्न हुए इन में केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनौ भाई संस्कृत काव्य को पढ़ि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहैगा इन्हीं के बंश में शीतल औ बिहारी लाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिंतामनि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्य्यबंशी भोसला मकरंदशाहि के इहां रहे औ उन्हीं के नाम छंदबिचार नाम पिंगल बहुत भारी ग्रंथ बनाया औ काव्य विवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ए पांच ग्रंथ इन के बनाए हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त औ नाना अन्य छंदों मे बहुत अपूर्व है बाबू रुद्र साहि सुलंकी औ शाहिजहां बादशाह औ जैनदी अहमद नें इन को बहुत दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रंथों में कहीं कहीं अपना नाम मनिलाल करि कै कहा है।

चिंतामनि २। ललित काव्य करी है।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अंतरबेद के निवासी सं० १७४९ ये कवि अंतरवेद में बड़े नामी गिरामी हुए हैं। प्रथम औरंगजेब बादशाह के साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिण के देशों में बहुत दिन तक रहे तेहि पीछे राजा जोगाजीत सिंह रघुवंशी महाराजै जंबू के इहां रहे औ उन्हीं के नाम बधूबिनोद नाम ग्रंथ महा अद्भुत बनाया औ एक ग्रंथ कालीदास हजारा नाम संग्रह बनाया जिस्में सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५ तक के कवि लोगों के एक हजार कवित्त २१२ कवि लोगों के लिखे हैं हम को इस ग्रंथ के बनाने में कालिदास के हजारा से बड़ी सहायता मिली है औ एक ग्रंथ और जंजीरा बंदनाम महा बिचित्र इन्हीं महाराज का हमारे पुस्तकालय में है इन के पुत्र उदयनाथ कविंद औ पौत्र कवि दूलह बड़े महान कवि हुए हैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कवि को किसी नें कहा है कि वै असनी ग्राम के बंदीजन थे संवत् १८०० के करीब मोहम्मद शाह बादशाह के जमाने में हुए हैं औ कोई कहता है कि नहीं ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्ड के बासी हैं किसी बुंदेलखण्डी कवि का बयान है कि क्षत्र-

पुर बुंदेलखण्ड में बुंदेला लोग हिम्मति बहादुर गोसाईं के मारने को इकट्ठा हुए थे ठाकुर कवि ने यह कवित्त (समयो यह बीर बरावने हैं) लिखि भेजा सब बुंदेला चले गए औ हिम्मति बहादुर ने ठाकुर को बहुत रुपिया इनाम दिया हिम्मति बहादुर संवत् १८०० में थे औ कवि कालिदास ने हजारा संवत् १७४९ के करीब बनाया है औ उस्में ठाकुर के बहुत कवित्त औ ऊपर लिखा हुवा कवित्त भी लिखा है इस्से हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि बुंदेलखण्डी अथवा असनी वाले भाट या कायथ कछु होवैं पर ए कवि अवस्य संवत् १७०० में थे इन की काव्य महा मधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है सवैया इन के बहुत ही चोटीले हैं इन के कवित्त तौ हमारे पुस्तकालय में सैकरौं हैं पर ग्रंथ कोई नहीं औ न हम ने किसी ग्रंथ का नाम सुना।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर ज़िले रायबरेली सं० १८८२ ये महान पंडित संस्कृत साहित्य में महाप्रबीण सारे हिन्दुस्तान में काव्य ही के हेतु फिरि ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्य की इकट्ठा कीं थीं अपने हाथ से भी नाना ग्रंथ लिखे थे औ बुंदेलखंड में तौ घर घर कवि लोगों के इहां फिरि फिरि एक संग्रह भाषा कवि लोगों की इकट्ठा की थी रस चन्द्रोदय ग्रंथ इन का बनाया हुवा है तत्पश्चात् काशी जी में गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगों से बहुत मेल जोल रहा औ अवधदेश के राजा महाराजों के इहां भी गये जब इन का संवत् १९२४ में देहान्त हुवा तौ इन के चारों महामूर्ख पुत्रों ने १८। १८ बस्ते बांटि लिये औ कौड़ियों के मोल बेंचि डाले हम ने भी प्रायः दो सौ ग्रंथ अंत में मोल लिया था।

ठाकुरराम कवि इन के कवित्त शांतरस में सुंदर हैं।

ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी अलीगंज ज़िले खीरी विद्यमान हैं सतकवि हैं

(१२) निवाज कवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगार में अच्छे कवित्त हैं

निवाज २ ब्राह्मण अंतरवेदि वाले सं० १७३९ ये कवि महाराजे छत्रसाल बुंदेला परना नरेश के इहां थे आजमशाह की आज्ञानुसार शकुंतला नाटक को संस्कृत से भाषा बनाया एक दोहा से लोगों को शक है कि निवाज़ कवि मुसल्मान थे पर हम ने बहुत जांचा तौ १ निवाज मुसल्मान और २ हिन्दू पाये गये हैं।

दोहा—तुम्हैं न ऐसी चाहिये, छत्रसाल महराज ।
जहं भगवत गीता पढ़ै, तहं कवि पढ़ै निवाज ॥ १ ॥

निवाज ३ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं० १८०१ ये कवि भगवंत राइ खींची गाजीपुर वाले के इहां थे।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन वासी १६८० ए महाराज वृंदावन में क्षेत्र सन्यास ले सारी बैस उहा हीं व्यतीत किया काव्य में इनकी प्रशंसा हम कहां तक करैं अपने समय के भाम थे काव्य कल्पद्रुम इन का ग्रंथ वहुत ही सुंदर है हजारा में इन के बहुत कवित्त हैं।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ ए कवि भाषा साहित्य के आचार्य्यों में गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुन सिंह के पुत्र राजाराज सिंह गौर के इहां जाय कविराज की पदवी पाय वृत्त्यविचार नाम पिंगल सब पिंगलों में उत्तम ग्रंथ को रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मति सिंह बंधलगोती अमेठी के इहां आय छंदबिचार नाम पिंगल बनाया फिरि नबाब फाजिलअली खां मंत्री औरंगजेब बादशाह के नाम भाषासाहित्य में फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रंथ महा अद्भुत रचाए तीनौ ग्रंथों के सेवाय हम ने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ए दो ग्रंथ और भी इन्ही महाराज के किए हुए हैं।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतिपुर जिले रायबरेली वाले । १८०३ एक महाराज महान कवि बैसवारे में हो गए हैं राव मरदन सिंह बैस डौंडियाखेरे के इहां थे और उन्हीं के नाम रसार्णव नाम ग्रंथ नायका भेद में बहुत सुंदर बनाया है शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हीं के शिष्य थे।

सुखदेव कवि ३ अंतरबेदि वाले। १७९१ ए कवि महाराजै भगवंत राय खीची असोथर वाले के इहां थे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ए महाराज सुखदेव मिश्र दौलतिपुर वाले न होवैं।

(१५) देव कवि प्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव ज़िले मैनपुरी के निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समय के भाम मम्मट की समान भाषा काव्य के आचार्य्य हो गये हैं शब्दों में ऐसी समाई कहां है जिन में इन की प्रशंसा की जावै इन के बनाये ग्रंथों की संख्या आज तक ठीक ७२ हम को मालूम हुई है तिन में केवल ११ ग्रंथों के नाम जो हम को मालूम है लिखे जाते हैं जिन्में अक्सर हम ने भी देखा है।

१प्रेमतरंग २ भावबिलास ३ रसबिलास ४ रसानंदलहरी ५ सुजानबिनोद ६ काव्यरसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंचनाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास।

देव (काष्टजिह्वा स्वामी) काश्यस्थ। १९११ ए महाराज पंडितराज षट्शास्त्र के वक्ता प्रथम संस्कृत काशी जी में पढ़ि दैव योग से एक बार अपने गुरू से बाद करि पीछे पछिताय काष्ट की जीभ मुहं में डालि बोलना बंद करि दिया पाटी में लिखि कै बात चीत करते थे उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनरायण सिंह काशीनरेश ने इन से उपदेश लै रामनगर में टिकाया तब ए महाराज भाषा में नाना ग्रंथ बिनयामृत इत्यादि बनाए इन्ही के पद आज तक काशीनरेश की सभा में गाए जाते हैं।

(१६) पजनेश कवि बुंदेल खण्डी १८७२ ए कान्ने परना में थे औ मधुप्रिया नाम ग्रंथ भाषासाहित्य में अद्भुत बनाया है इस कवि की अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रासैं जमक तारीफ के योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रस में औ कटु अक्षरों से जो अपनी कविता में भरि दिया है इस कारण से इन की काव्य कवि लोगों के तीर रूपी जिह्वा की निशाना हो रही है इन का नखसिख देखने योग्य है इन्हों ने पारसी विद्या में भी श्रम किया था।

(१७) घनआनंद कवि। १६१५ ए कवि कविलोगों में महाउत्तम कवि हो गए हैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ए कवि कविता में महानिपुण बांधवनरेश के इहां थे ग्रंथ तौ पूरा हम ने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इन के हमारे पास हैं कालिदास ने भी इन के कवित्त हजारा में लिखे हैं।

(१९) सुंदरकविब्राह्मण ग्वालियरनिवासी सं० १६८८ ये महाराज शाहिजहां बादशाह के कवि थे पहिले कविराय की पदवी पाया इन का बनाया हुवा सुंदर शृङ्गार नाम ग्रंथ भाषासाहित्य में बहुत सुंदर है इन्हीं कवि के पद में यह अगन परा था(सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रंथ में है।

सुंदरकवि दादूजी के शिष्य मेवाड़देश के निवासी। इन की कविता

शांतरस में कुछ अच्छी है सुंदर सांख्य नाम एक इन का बनाया हुआ ग्रंथ भी सुना जाता है।

(२०) सुंदरकवि बंदीजन असनी वाले रसप्रबोध ग्रंथ बनाया है।
मुरारि दास ब्रजबासी इन के पदराग सागरोद्भव में हैं।
(२१) बोधा कवि १८०४ इन के कवित्त बहुत ही सुंदर है।
बोध कवि बुंदेल खण्डी। १८५५ ऐज़न्।

(२२) श्रीपति कवि प्रयागपुर ज़िले बहिरायच निवासी सं० १७०० ये महाराज भाषासाहित्य के आचार्य्यों में गिने जाते हैं इन के बनाए हुए काव्यकल्पद्रुम १ काव्यसरोज २ श्रीपति सरोज ३ ये तीनि ग्रंथ बिख्यात हैं हम ने ये तीनौं ग्रंथ नहीं देखे और न इन के कुल और न जन्मभूमि से हम को ठीक ठीक आगाही है।

(२३) दयानिधि कवि बैसवारे के सं० १८११ राजा अचल सिंह बैस की आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया।

(२४) जुगुलकिशोरभट्ट कैथल बासी सं० १७९९ ए महाराज मोहम्मद शाह बादशाह के बड़े मुसाहिबों मे थे इन्हों ने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकार में अद्वितीय बनाया है जिस्में ९६ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किए हैं उसी ग्रंथ में ए दो दोहा अपने नाम औ सभा के समाचार में कहे हैं।

दोहा—ब्रह्म भट्ट हौं जाति में, निपट अधीन निदान।
राजा पद मोको दयो, महम्मद शाह सुजान ॥१॥
चारि हमारी सभा में, कोविद कवि मति चारु।
सदा रहत आनंद बढ़े, रस को करत बिचारु ॥२॥
मिश्र रुद्र मणि बिप्रवर, औ सुख लाल रसाल।
शतं जीव श्रुगुमान हैं, शोभित गुणनि बिसाल ॥३॥

जुगुलकिशोर कवि २ शृंगाररस में कवित्त नीके हैं।

जुगराज कवि बहुत ही सरस काव्य इन की है।

जुगुल प्रसाद चौबे। इन की बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर काव्य है।

जुगुलदास कवि—पद बनाए हैं।

जुगुल कवि सं० १७५५ इन के बनाए हुए पद अति अनूठे महा ललित हैं।

(२५) कविंद (उदयनाथत्रिवेदी) बनपुरा निवासी कवि कालिदास जू के पुत्र सं० १८०४ ये कवि अपने पिता के समान महान कवीश्वर हो गुजरे हैं प्रथम राजा हिम्मति सिंह बंधलगोत्री अमेठी महाराज के इहां बहुत दिन तक रहे औ कविता में अपना नाम उदयनाथ वर्णन करते रहे जब राजा के नाम से रसचंद्रोदय नाम ग्रंथ बनाया तब राजा ने कबिंद पदवी दिया तब से अपना नाम कबिंद करि के धरते रहे इस ग्रंथ के चारि नाम हैं रतिविनोद चंद्रिका १ रतिविनोदचंद्रोदय २ रसचंद्रिका ३ रसचंद्रोदय ४ यह ग्रंथ भाषासाहित्य में महा अद्भुत है तेहि पीछे कविंद जी थोरे दिन राजा गुरूदत्तसिंह अमेठी के इहां रहि भगवंत राइ खीची औ गज सिंह महाराजै आमेर औ राव बुद्ध हाड़ा बूंदी वाले के इहां महा मान सनमान के साथ काल बितीत करते रहे और एक कविंद त्रिवेदी बेतीगांव ज़िले रायबरेली में भी महान् कवि हो गये हैं।

कविंद २ सखीसुख ब्राह्मण नरवर बुंदेलखंड निवासी के पुत्र सं० १८५४ इन्होंने रसदीपक नाम ग्रंथ बनाया है।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशी निवासी सं० १६२२ ये कविन्दाचार्य्य महाराज संस्कृत साहित्य शास्त्र में अपने समय के भानु थे शाहजहां बादशाह के हुकुम से भाषा काव्य बनाना प्रारंभ किया औ बादशाही आज्ञानुसार कविंद कल्पलता नाम ग्रंथ भाषा में रचा जिस्में बादशाह के पुत्र दाराशिकोह औ बेगम साहेब की तारीफ़ में बहुत कवित्त हैं।

(२६)गोविंद अटलकवि सं० १६७० इन के कवित्त हजारा में है।

गोविंद जी कवि सं १७५० ऐजन्।

गोविंददास जू ब्रजबासी सं० १६१५ राग सागरोद्भव में इन की कविता है ए कवि नाभा जी के शिष्य थे।

गोविंदकवि सं० १७९८ ए कवीश्वर बड़े नामी कवि हो गए हैं इन का बनाया हुवा करणाभरण ग्रंथ बहुत कठिन औ साहित्य में शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इन का प्राचीन निवास टेहरी था राजा मधुकर साह उड़छवाले के इहां आये औ उहां उन का बड़ा सनमान हुवा राजा इंद्रजीतसिंह ने २१ गांव संकल्प दिये तब कुटुंब सहित उड़छे में रहने लगे भाषा काव्य के तौ भाम सम्मट भरता के समान प्रथम आचार्य्य समुझना चाहिये काहे ते कि काव्य के

दशौ अंग पहिले पहिले इन्हीं ने कविप्रिया ग्रंथ में वर्णन किए तेहि पीछे अनेक आचार्य्यों ने नाना ग्रंथ भाषा में रचि प्रथम मधुकर साहि के नाम विज्ञानगीता ग्रंथ बनाया औ कविप्रिया ग्रंथ प्रवीनराइ पातुरी के लिये रचा औ रामचंद्रिका राजा मधुकरसाह के पुत्र इंद्रजीत के नाम से बनाया औ रसिकप्रिया साहित्य औ रामअलंकृतमंजरी पिंगल ए दोनों ग्रंथ विद्वज्जनों के उपकार्थ रचे जब अकबर बादशाह ने प्रबीनराइ पातुरी के हाजिर न होने औ उकूल हुकुमी औ लड़ाई के कारण राजा इंद्रजीत पर एक करोर रुपया जुरमाना किए तब केशौदास जी ने छिपकर राजा बीरबर मंत्री से मुलाकात किया औ बीरबर जू की प्रशंसा में (दियो करतार दुहूं करतारी) यह कवित्त पढ़ा तब राजा बीरबर ने महा प्रसन्न ह्वै जुरवाना माफ़ कराया परन्तु प्रबीनराइ को दरबार में आने पड़ा।

केशवदास २ सामान्य कविता है।

केशवराइ बाबू बघेलखंडी सं० १७३९ इन्होंने नायका भेद में एक ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया है औ इन के कवित्त बलदेव कवि ने अपने संग्रहीत ग्रंथ सतकवि गिराविलास में लिखे हैं।

केशवराम कवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रंथ रचा है।

बाबू रघुनाथ सिंह के दोहे के अनुसार कवियों का समय 'शिव सिंह सरोज' से निरूपण किया जाता है।

(१) ओली रामकवि सं० १६२१ कालिदास जी ने इन की काव्य अपने हज़ारे में लिखा है।

(२) अकबर का हाल पहले लिखा गया है।

(३) अगर कवि सं० १६२६ नीति संबंधी कुंडलिया छप्पै दोहा इत्यादि बहुत बनाए हैं।

(४) अगर दास गलता जयपुर राज्य के नेवासी सं० १५९५ इन के बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में हैं ए महाराजे कृष्णदास पय अहारी के शिष्य थे औ इन महाराज के नाभा दास भक्तिमाल ग्रंथ कर्त्ता शिष्य थे।

(५) करनेशकवि बंदीजन असनीवाल सं० १६११ ये कवि नरहरि कवि के साथ दिल्ली में अकबरशाह की सभा में जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण २ भूपभूषण ३ ये तीनि ग्रंथ बनाये हैं।

(६) चतुरबिहारी कवि ब्रजबासी संवत् १६०५ इन के पदराग सागरोद्भव में बहुत हैं।

(७) गोपकवि सं० १५९० रामभुषण १ अलंकारचन्द्रिका २ ए दो ग्रंथ बनाए हैं।

(९) अमरेश कवि सं० १६३५ इन की कविता महा उत्तम है कालीदास जूने अपने हजारा में इन का कविता बहुत सी लिखी है।

(१०) आसकरन दास कछवाह राजा भीम सिंह नरवरगढ़ वाले के पुत्र १६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यास देव के संग्रहीत ग्रंथ में मौजूद हैं।

(११) अजबेस प्राचीन सं० १५७० ये कवि श्रीराजा बीरभान सिंह जोधपुर के इहां थे औ उसी देश के रहनेवाले बंदीजन मालूम होते हैं।

अजबेस नबीन भाट १८९२ ये कवि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह बांधव नरेश के इहां थे। *

(१२) कादर, [क़ादिरबख्स मुसलमान पिहानीवाल] सं० १६३५ कविता में निपुन थे औ सैयद इवराहीम पिहानी वाल रसखानि के शिष्य थे।

(१४) टोडर, (राजा टोडरमल्ल खत्री पंजाबी) सं० १५८०ये राजा टोडरमल्ल अकबर बादशाह के दीवान आला थे इन के हालात में तारीख फ़ारसी भरी हुई है अरबी फ़ारसी संस्कृत विद्या में महा निपुण थे श्रीमद्भागवत को संस्कृत से फ़ारसी में उल्था किया है औ भाषा में नीति संबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराज ने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियों के लिए किए हैं एक तौ पंजाब देश में खत्रियों के इहां रिवाज तीनि साला मातम को उठाय केवल वार्षिक रसम को नियत किया दूसरे फ़ारसी हिसाब किताब को ईरान देश के माफ़िक हिन्दुस्तान में जारी किया संवत् ९९८ हिजरी में शहर लाहौर में देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि सं० १६०१ अकबर बादशाह के इहां थे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर ज़िला फैजाबाद सं० १५३७ सुरोदय ग्रंथ बनाया।

(१८) चतुरभुज सुंदर कविता करी है।

चतुरभुज दास सं० १६०१ राग सागरोद्भव में इन के बहुत पद हैं

* १८९२ संवत् के अजबेस सूरदास के समय के नहीं है।

ए महाराज करौली के राजा स्वामी विट्ठलनाथ जी गोकुलस्थ के शिष्य थे अष्टछाप में इन का भी नाम है।

(१९) जीवन कवि सं० १६०८ इनके कवित हजारा में है।

(२१) ताजकवि सं० १६२२ हजारा में इन के कवित्त हैं।

(२२) होलरायकवि बंदीजन होलपुर जिले बाराबंकी सं० १६४० ए महान कवि अकबर के दरबार तक राजा हरिवंशराइ दिवान कायथ बदरकावासी के वसीले से पहुंचे औ एक चक पाइ उसी में होलपुर नाम ग्राम बसाया एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्या से लौटते समय होलपुर में आए होलराय ने गोसाईं जी के लोटा की प्रशंसा में कहा—

दोहा—लोटा तुलसीदास को, लाख टका को मोल।

तब गोसाईं जी बोले—

दोहा—मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल ॥१॥

होलराइ ने उस लोटा को मूर्त्ति के समान अस्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते रहे हम ने अपने आंख से देखा है कि आज तक उस की पूजा होती है इस होलपुर में सेवाय गिरधर औ नीलकण्ठ इत्यादि के कोई नामी कवि नहीं हुए इन दिनों लछिराम औ संतवकस ए दो कवि अच्छे हैं यह गाउं आज तक इन्हीं बंदीजनों के नंबर में हैं।

(२३) खेमकवि २ ब्रजबासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में इन के पद हैं। एक खेम कवि बुंदेलखंडी है।

(२४) जोधकवि सं० १५९० अकबर बादशाह के इहां थे।

(२५) जोयसीकवि सं० १६५८ इन के कवित्त हजारा में हैं।

(२६) चंदसखी ब्रजबासी सं० १६३८ इनके पदराग सागरोद्भवमें हैं।

(२७) कृष्णदास गोकुलस्थ बल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इन के बहुत पद राग सागरोद्भव में लिखे हैं औ इन की कविता अत्यंत ललित औ मधुर है ए कवि औ सूरदास औ परमानंददास औ कुंभनदास चारों श्रीबल्लभाचार्य्य के शिष्य थे कृष्णदास जी की कविता सूरदास की कविता से मिलती थी एक दिन सूर जी बोले आप अपना कोई ऐसा पद सुनावो जो हमारी काव्य में न मिलै तब कृष्णदास जी ने चारि पद सुनाये उन सब पदों में सूर जी ने चोरी अपने पदों की साबित किया तब कृष्णदास जी ने कहा कालिह हम अनूठे पद सुनावैंगे ऐसा कहि

सर्व रात्रि इसी शोच में नहीं सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखा हुवा देखि सूर जी के आगे पढ़ा ॥ आवत बने कान्ह गोप बालक संग नैचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली ॥ सूर जी जान गये कि यह करतूति किसी और ही कौतुकी की है बोले अपने बाबा की सहायता लीनी है । इन की गिनती अष्टछाप में है अर्थात् ब्रज में आठ ८ बड़े कवि हुए हैं जैसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथ में गोपालसिंह ने ब्यौरा अष्टछाप का लिखा है इस भांति से कि सूरदास १ कृष्णदास २ परमानंद ३ कुंभनदास ४ ए चारों बल्लभाचार्य्य के शिष्य औ चतुर्भुज ५ छीतस्वामी ६ नंददास ७ गोविंद दास ८ ए चारों बिट्ठलनाथ बल्लभाचार्य्य के पुत्र के शिष्य अष्टछाप करि कै विख्यात हैं कृष्णदास जी का बनाया हुवा प्रेमरसरासग्रंथ बहुत सुंदर है ।

(२८) छेमकवि २ बंदीजन दलमऊ के सं० १५८२ ए कवि हुमाऊं बादशाह के इहां थे ।

(२९) अमृतकवि सं० १६०२ अकबर बादशाह के इहां थे ।

(३०) खानखाना (नवाब अब्दुलरहीम खानखाना बैरमखां के पुत्र रहीम औ रहिमन छाप है । सं० १५८० ए महाविद्वान अरबी फारसी तुरकी इत्यादि यामनीभाषा औ संस्कृत ब्रजभाषा के बड़े पंडित अकबर बादशाह की आंख की पुतली थे इन्हीं के पिता बैरम की जवांमरदी औ तदबीर से हुमायूं को दुबारा दिल्ली का राज्य प्राप्त हुवा खानखाना जी पंडित कवि मुल्ला शायर ज्योतिषी और सब गुणवान मनुष्यों के बड़े कदरदान थे इन की सभा रात दिन विद्वज्जनों से भरी पुरी रहती थी संस्कृत में इन के बनाए श्लोक बहुत कठिन हैं औ भाषा में नवोरस के कवित्त दोहा बहुत ही सुंदर हैं नीति संबंधी दोहा ऐसे अपूर्व हैं कि जिन के पढ़ने से कभी पढ़नेवाले को तृप्ति नहीं होती फारसी में इन का दिवान बहुत उमदा है वाकियात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाह ने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जबान में आपही लिखा है उसको इन्होंने फारसी ज़बान में तर्जुमा किया है ७२ बरष की अवस्था में सन् १०३६ हिजरी में सुरलोक को सिधारे ।

श्लोक—आनीता नटवन्मया तवपुरः श्रीकृष्णया भूमिका ।
व्योमाकाशखखांबराब्धि वसवस्त्वत्प्रीतये ऽद्यावधि ॥
प्रीतिर्यस्य निराक्षणेहि भगवन्मत्प्रार्थितं देहिमे ।

नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनर्नामीदृशीं भूमिका ॥ १ ॥

श्रृङ्गार सोरठा—भाषा ।

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति ।
बाती सी उसकाय, मानौ दीनी दीप की ॥ १ ॥
गई आगि उर लाइ, आगि लेन आई जु तिय ।
लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै ॥ २ ॥

नीति, दोहा—खीरा शिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय ।
करुये मुख को चाहिये, रहिमन यही सजाय ॥ १ ॥

फारसी ।

شمار شوق نداﻧﺴﺘﻪام که تا چند ست   جز اینقدر که دلم سخت آرزومند ست
نه دانه دانم و نے دانم اینقدر دانم   که پاي تا بسرم هرچه هست در بندست

एक दिन खानखाना ने यह आधा दोहा बनाया—

तारायन शशि रैन प्रति, सूर होहिं ससि गैन ।

औ दूसरा चरण नहीं बनाइसके रोज रात्रि को यह आधा दोहा पढ़ा करते थे दिल्ली में एक खत्रानी ने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया ।

तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन ॥ १ ॥

(३१) जगनकवि सं० १६५२ श्रृङ्गाररस में कवित्त चोखे हैं ।

(३२) ऊधोराम कवि सं० १६१० इन की कविता कालीदास जू ने अपने हजारा में लिखी है ।

(३३) कमाल कवि (कबीरजू के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालीदास ने हजारा में लिखी है ।

(३४) जमालउद्दीन पिहानीवाल सं० १६२५ कवि अच्छे थे ।

(३५) जगनंद कवि बृंदावनवासी सं० १६५८ इनके कवित्त हजारा में हैं।

(३७) जमाल सं० १६०२ ए कवि गूढ़ कूट में बहुत निपुण थे इन के दोहा बहुत सुंदर हैं ।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं० १६१५ हजारा में इन के कवित्त हैं ।

(३९) कल्याणदास बृजवासी कृष्णदास पय अहारी के शिष्य सं० १६०७ इन के पद रागसागरोद्भव में हैं । पुनः कल्यान सिंह भट्ट एक है ।

(४०) फैजी शेख अबल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १६०८

इन को छोटे बड़े विद्वान् भली भांति जानते हैं कि ए फैजी अरबी पारसी संस्कृत भाषा में महानिपुण थे इन का ग्रंथ भाषा में हमने नहीं पाया केवल दोहरा मिले हैं ए अकबर के कवि थे।

(४१) ब्रह्मकवि राजा बीरबर ब्राह्मण अंतरवेदि वाले सं० १५८५ इनका नाम प्रथम महेश दास था ए कानकुब्ज दुबे ब्राह्मण ज़िले हमीरपुर के किसी गांव के रहनेवाले थे काव्य पढ़ि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेश के इहां कवि लोगों में नौकर हो गए राजा भगवान दास इन की कविता से बहुत प्रसन्न है अकबर बादशाह को नज़र के तौर इनको दैदिया ए कवि काव्य में अपना नाम ब्रह्म करिकै वर्णन करते थे अकबर कविता के सेवाय इन में सब प्रकार की बुद्धि पाय पूर्व संस्कार के अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाय कविराइ की पदवी दिया तेहीं पीछे पांच हज़ारी का मनसब औ मुसाहेब दानिश बरराजै बीरबर का ख़िताब दिया इनके जीवनचरित्र बिचित्र तवारीखों में लिखे हैं सन् ९९० हिज़री में बिजौर इलाके काबुल में पठानों के हाथ से समर भूमि में मारे गए इनका समग्रग्रंथ तौ कोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कविताई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालय में है सूरदास जी ने कहा है।

दोहा ।

सुंदर पद कबिगंग के, उपमा को वर बीर ।
केशव अर्थ गंभीर को, सूर तीनि गुण तीर ॥

राजा बीरवर ने अकबर के हुकुम से अकबरपुर गांउ जिले कानपुर में बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसी को नियत किया और नारे नौल कसवा में इन की पुरानी इमारतें बड़ी अलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराई का ओहदा जो बहुधा ब्राह्मणों को मिला औ गोवध बंद हुवा औ हिंदू मुसल्मानों में बहुत मेलजोल हो गया ए सब बातें इन्हीं महाराज की कृपा से हुई थीं।

(४२) फहीम शेख अबदुल फजल फैजी के कनिष्ट सहोदर सं० १५८० इन के केवल दोहरा हमने पाये हैं ग्रंथ कोई नहीं मिला ए अकबर के वजीर थे।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदास जीने इनकी काव्य अपने हजारे में लिखा है।

(४४) परसिद्ध कवि प्राचीन सं० १५९० ए महान कवीश्वर खानखानाके इहां थे।

(४५) बिट्ठल बिपुल २ गोकुलस्थ श्री स्वामी हरिदास के शिष्य १५८० इन के पद राग सागरोद्भव में हैं ए महाराज मधुबन में बहुधा रहा करते थे।

(४६) रहीम कवि ए रहीम कवि, खानखाना के सेवाइ दूसरे रहीम हैं कविता इनकी सरस है काव्यनिर्णय में दास कवि ने इन का नाम एक कवित्त में लिखा है परंतु दोनों रहीम अर्थात् अब्दुलरहीमखानखाना और इन रहीम की फुटकर काव्य का भिन्न भिन्न करना कठिन है। कवित-

सूर केशौ मंडन बिहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामणि मतिराम भूषण सो जानिए। नीलकंठ नीलाधर निपटि नेवाज निधि नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये॥ आलम रहीम खानखाना रसलीन वली सुंदर अनेक गन गनती बखानिए। ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान एते एते कविन की बानी हू ते जानिये॥१॥

(४७) अमरसिंह हाड़ा योधपुर के राजा सं० १६२१ ए महाराज अमर सिंह श्रीहाड़ावंशावतंस सूरसिंह के पौत्र हैं जिन सूरसिंह ने छः लाख रुपया एक दिन में छः कवि लोगों को इनाम दिया था औ जिन के पिता गजसिंह ने राजपुताने के कविलोगों को धनाधीश कर दिया था राजा अमरसिंह की तारीफ़ में जो बनवारी कवि ने यह कवित्त कहा है कि (हाथ की बड़ाई की बड़ाई जमधर की) सो इस की बाबत टाड साहेब की किताब टाडराजिस्तान से हम कछु लिखते हैं प्रगट हो कि राजा अमरसिंह हाड़ा महागुणगाहक औ साहित्यशास्त्र के बड़े क़दरदान औ खुद भी महाकवि थे इन्ही महाराजा ने पृथीराजरायसा चंद कवि कृत को सारे राजपुताने में तलास कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अब सारे राजपुताने मे बड़े बड़े पुस्तकालयों में मौजूद हैं शाहजहां बादशाह के इहां अमरसिंह का मनसब तीन हज़ारी था जो कि अमरसिंह बहुधा सैर शिकार में रहा करते थे इसलिए एक दफे शाहजहां ने नाराज़ है कछु जुरवाना किया औ सलावतिखां बखशी उल्मु मालिक को जुरमाना वसूल करने को नियत किया अमरसिंह महा क्रोधाग्नि से प्रज्वलित दरबार में आया पहिले एक खंजर से सलावतिखां का काम तमाम किया पीछे शाहजहां पर भी तलवार आबदार झारी तलवार

सितून में लगी बादशाह तौ भागबचे अमरसिंह ने पांच और बड़े सरदार मुगलों को मारि आप भी उसी जगह अर्जुन गौर अपने साले के हाथ से मारे गये बिस्तार के भय से मैंने संक्षेप से लिखा है।

(४९) दील्ह कवि सं० १६२९

(५०)नरोत्तम दास ब्राह्मण बाडी ज़िले सीतापुर वाले सं० १६०२सुदामाचरित्र बनाया है मानो प्रेम समुद्र बहाया है।

(५१) चेतनचंद कवि सं० १६१६ राजा कुशल सिंह सेंगर वंशावतंस की आज्ञानुसार अश्वबिनोद नाम शालिहोत्र बनाया।

(५४) बारक कवि सं० १६५५।

(५५)बिद्यादास ब्रजवासी सं० १६५०इन के पद रागसागरोद्भव में हैं।

(५६)छीतस्वामी ब्रजवासी सं० १६०१ इन के पद बहुत राग कल्पद्रुम में हैं ए महाराज वल्लभाचार्य्य के पुत्र बिट्ठलनाथ जी के शिष्य थे इन की गिनती अष्टछाप में है।

(५७) भगवत रसिक वृंदावननिवासी माधौदास जी के पुत्र हरिदास जी के शिष्य सं० १६०१ इन की कुंडलिया बहुत सुंदर हैं।

(५८)छत्रकवि सं० १६२५ विजयमुक्तावली नाम ग्रंथ अर्थात् भारत की कथा बहुतही संक्षेप से सूचीपत्र के तौर से नाना छंदों में वर्णन किया है।

(६०) गदाधर मिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इन के पदराग सागरोद्भव में हैं इन का बनाया हुवा यह पद 'सखी हौं श्याम के रंग रंगी। देखि बिकाय गई वह मूरति मूरति हाथ बिकी।' देख स्वामी जीव गोसांई जो उस समय बड़े महात्मा थे गदाधर भट्ट से बहुत प्रसन्न हुए।

(६१)मानसिंह महाराजे कछवाह आमेरवाले सं० १५९२ ए महाराज कवि कोविदों के बड़े कदरदान थे हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरों को एक एक दोहा में लक्ष लक्ष रुपिया इनाम दिया इन्होनें अपने जीवनचरित्र की किताब बहुत बिस्तार पूर्व्वक बनाया है जिस्का नाम मानचरित्र है उसी ग्रंथ में लिखा है कि जब राजा मानसिंह काबुल की ओर अकबर के हुकुम से चले और अटक नदी पर पहुंच कै धर्म्मशास्त्र को बिचारि उतरने में शोच बिचार करने लगे औ अकबर शाह को लिखा तब अकबर ने यह दोहा लिखा।—

दोहा। सबै भूमि गोपाल की, तामें अटक कहा।
जाके मन मैं अटक है, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढ़ि मानसिंह अटकपार जाय स्वामि कार्य्य में बड़ी बीरता करी ॥

(६२) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं० १६५२ ए महाराज बड़े महात्मा हो गुजरे हैं इन के कवित्त शांत रस मे हैं औ हजारा में भी कालिदास ने इन का नाम लिखा है। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६३) मोतीलाल कवि बांसी राज्य के निवासी सं० १५९७ गणेश पुराण भाषा में बनाया। एक और मोती लाल कवि हुए हैं।

(६४) हरिदास स्वामी बृंदाबन निवासी सं० १६४० इन महाराज का जीवनचरित्र भक्तिमाल में है इहां केवल हम को काव्य ही का वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृत काव्य में जयदेव कवि से इन की कविता कम नहीं है औ भाषा में इन के पद सूर औ तुलसी के पदों के समान मधुर औ ललित हैं इन्हों ने बहुत ग्रंथ बनाए हैं पर हमने इनकी कविता केवल वही देखा है जो रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में हैं तानसेन को इन्ही महाराज ने काव्य औ संगीत विद्या पढ़ाया था।

(६५) हरिनाथ कवि महापात्र बंदीजन असनीवाले सं० १६४४ ए महान कवीश्वर नरहरि जू के पुत्र बड़े भाग्यवान पुरुष थे जहां जिस दरबार में गए लाखौं रुपिया हाथी घोड़े गांव रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेश राजाराम बघेले की प्रशंसा में यह दोहा पढ़ा।—

दोहा। लंका लौ दिल्ली दई, साहि विभीषण काम।
भये बघेलो राम सो, राजा राजाराम ॥ १ ॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपिया इनाम पाया। औ राजा मानसिंह सवाई आमेरवाले के पास ए दोहा पढ़ि दो लक्ष रुपिया दान पाया।

दोहा। बलिबोई कीरति लता, करन करी द्वै पात।
सींची मान महीप ने, जब देखी कुंभिलात ॥ १ ॥
जाति जाति ते गुण अधिक, सुन्यो न अजहूं कान।
सेतु बांधि रघुबर तरे, हेला दै नृप मान ॥ २ ॥

जब हरिनाथ जू ए रुपिया औ सब सामान लै घर को चले तौ मार्ग में एक नागापुत्र मिला और उस ने हरिनाथ जू की प्रशंसा में यह दोहा पढ़ा।

दोहा। दान पाइ दोई बढ़े, की हरि की हरिनाथ।
उन बढ़ि ऊंचे पग किये, इन बढ़ि ऊंचे हाथ ॥ १ ॥

हरिनाथ ने सब धन धान्य जो पाया था सब ईसी नागापुत्र को

दै आप रीते हाथ घर को चले आए औ अवनी औ अपने पिता की कमाई तमाम उमर इसी भांति से लुटाते रहे।

(६६) मानराय बंदीजन असनीवाले। १५८० अकबर के इहां थे।

(६७) रघुनाथ राय कवि सं० १६३५ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुर के इहां थे।

(६८) गनेश जी मिश्र सं० १६१५।

(६९)कबीर (कबीरदास) जोलाहा काशी बासी सं० १६१० इन के दो ग्रंथ अर्थात् बीज १ रामैनी २ मेरे पास हैं औ इन के चरित तो सब मनुष्यों पर विदित हैं कालिदास जू ने हजारा में इन का नाम भी लिखा है इस लिये हम ने भी लिख दिया।

(७०) लीलाधरक सं० १६१५ ए कवि महाराज गज सिंह जोधपुर के इहां थे औ इन का प्रमाण सत कवि करते चले आए हैं।

(७१) नाथ कबि, नाथ कवि के नाम से मालूम नहीं होसक्ता कि नाथ कितने हुए हैं जैसे उदयनाथ काशीनाथ शिवनाथ शंभुनाथ हरिनाथ इत्यादि कबि लोगों ने नाथ करके अपना भोग वर्णन किया है जहां तक हम को मालूम हुआ तहां तक हर एक नाथ की कविता अलग अलग बर्णन करी है। नाथ कवि ब्रजबासी गोपाल भट्ट ऊंचगांव वाले के पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भव में षट ऋतु इत्यादि सुंदर है।

(७२) दामोदरदास ब्रजबासी सं० १६२२ इनके पद रागसागर में है एक और दामोदर कवि हैं।

(७३) दीलदार कवि सं० १६५० हजारा में इन की काव्य है।

(७४) दौलति कवि सं० १६५१।

(७५) नागर कवि सं० १६४८ हजारा में इन के कवित्त हैं।

(७६) दास (भिखारीदास कायस्थ) अरबल बुंदेलखण्डी सं० १७८० ए महान कवि भाषासाहित्य के आचार्य्य गिने जाते हैं छंदार्णव नाम पिंगल १ रससारांस २ काव्यनिर्णय ३ शृंगारनिर्णय ४ बागबहार ५ ए पांच ग्रंथ इन के बनाये हुए अति उत्तम काव्य हैं।

दास २ बेनीमाधौ दास पसका जिले गोंड़ा सं० १६५५ ए महात्मा गोस्वामी तुलसी दास जू के शिष्य उन्हीं के साथ रहते रहे हैं औ गोसाईं जी के जीवनचरित्र की एक पुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाया है संवत् १६९९ में देहांत हुवा।

(७७) नंदन कवि सं० १६२५ ए महाराज सत कवि होगए हैं हजारा में इन का नाम है।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसाईं वृंदावननिवासी व्यास स्वामी के पुत्र सं० १५५९ इन के पिता व्यास जी ने राधावल्लभी संप्रदाय को चलाया ए देव वंद के रहनें वाले गौड़ ब्राह्मण थे हितहरिवंस जी महान कवि थे संस्कृत में राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषा में हितचौरासी नाम ग्रंथ महा सुंदर बनाया है।

(७९) सेन कवि नापति बांधवगढ़ के सं० १५६० हजारा में इन के कवित्त हैं ए कवि स्वामी रामानंद जी के शिष्य थे।

(८०) नारायण दास कवि सं० १६१५ हितोपदेश राजनीति को भाषा में छंदबद्ध रचा है।

(८२) नंदलाल कवि सं० १६११ कबित्त सुन्दर हजारा में इनके कबित्त हैं।

(८४) रसखान कवि सैयद इबराहीम पिहानी वाले सं० १६३० ए कवि मुसल्मान थे श्रीवृंदावन में जाय कृष्णचंद्र की भक्तिभाव में ऐसे डूबे कि फिरि मुसल्मानी त्याग करि माला कंठी धारण किए हुए वृंदावन की रज में मिलि गए इन की कविता निपट ललित माधुर्य्यता से भरी हुई है इन की कथा भक्तिमाल में पढ़ने योग्य है।

(८५) नाभादास कवि नाम नारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १५४० इन को स्वामी अग्रदास जी ने गलता नाम इलाके आमेर में लाय अपना शिष्य बनाय भक्तिमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञाकरी नाभा जी ने १०८ छप्पै छंद में इस ग्रंथ को रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृंदावनी ने उस्का तिलक कवित्तों में किया तेहि पीछे लाल जी कायथ कांधला के निवासी ने संन् ११५८ हि० में उसी का टिका बनाय भक्त उरबसी नाम रक्खा इन दिनों उसी भक्तिमाल को महारसिक भगवत भक्त तुलसीराम अगरवाल मीरापुर निवासी ने उर्दू में उलथा करि भक्तिमाल प्रदीपन नाम धरा है नाभा दास की विचित्र कथा भक्तिमाल में लिखी है।

(८६) नरबाहन जी कवि भौ गांव निवासी सं १६०० ए कवि स्वामी हितहरिवंश जी के शिष्य थे इन के पद बहुत विचित्र हैं कथा इन की भक्तिमाल में है।

(८७) नरसिया कवि अर्थात् नरसी जी जूनागढ़ निवासी सं० १५९० इन पद राग सागरोद्भव में है।

(८८)नारायणभट्ट गोसांई गोकुलस्थ ऊंच गांव बरसाने के समीप के निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ये महाराज बड़े भक्त थे वृंदाबन मथुरा गोकुल इत्यादि में जे तीर्थस्थान लुप्त हो गये थे उन सब को प्रगट करि रासलीला की जड़ इन्हों ने प्रथम डाली है।

(८९) तानसेन कवि ग्वालियर निवासी १५८८ ए कवि मकरँद पाड़े गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे प्रथम श्री गोसांई स्वामी हरिदास जू गोकुलस्थ के शिष्य है काव्य विद्या को यथावत् सीखा तत्पश्चात् शेख मोहम्मद गौस ग्वालियरबासी के पास जाय संगीतविद्या के लिये प्रार्थना करी शाह साहेब तंत्रविद्या में अद्वितीय थे बरण मुसल्मानो में इन्हीं को इस विद्या का आचार्य्य सब तवारीखों में लिखा गया है शाह साहेब ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ में लगाय दिया उसी समय से तानसेन गान विद्या में महानिपुण हो गए इन की प्रशंसा में आईन अकबरी में ग्रंथकर्त्ता फहीम ने लिखा है ऐसा गाने वाला पिछिले हजारा • में कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलति खां शेरखां बादशाह के पुत्र पर आशिक है उन के ऊपर बहुत सी कविता करी तेहि पीछे दौलति खां के मरने पर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेला के इहां गए औ उहां से अकबर बादशाह ने अपने इहां बुलाय लिया तानसेन औ सूरदास जी से बहुत मित्रता थी तानसेन जी ने सूरदास की तारीफ़ में यह दोहा बनाया।

दोहा। किधौं सूर को सर लाग्यौ, किधौं सूर की पीर।
किधौं सूर को पद लग्यौ, तन मन धुनत शरीर ॥१॥

तब सूरदास जी ने यह दोहा कहा।

दोहा। बिधना यह जिय जानि कै, शेशन दीन्हे कान।
धरा मेरु सब डोल तो, तानसेन की तान ॥२॥

इन के ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्य के ग्रंथ हैं।

(९०)निपट निरंजन स्वामी सं० १६५० ए महाराज गोस्वामी तुलसी दास के समान महान सिद्ध हो गए हैं औ इन के ग्रंथों की ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानी संग्रहीत पुस्तकों में सैकरों कवित्त हम इन के देखते हैं हमारे पुस्तकालय में शांत सरसी १ औ निरंजन संग्रह २ दो ग्रंथ इन महाराज के बनाए हुए हैं इन की कविता में बहुत बड़ा प्रताप यह है कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पासों से बद्ध होवै इन की वाक्य के श्रवण कीर्त्तन से निःसंदेह मुक्त हो जावे।

(९१)इंद्रजीत त्रिपाठी बनपुरा अंतरबेदी वाले सं० १७३९ औरंगजेब के नौकर थे।

(९२) पृथीराज कवि सं० १६२४ हजारा में इन के कबित्त हैं ए कवि बीकानेर के राजा संस्कृत औ भाषा के बड़े कवि थे *।

(९३) लक्ष्मीनारायण मैथिल सं० १५८० ए कवि खानखाना के इहां थे।

(९४) हरिकवि ए महान कवि थे इन्हों ने चिमत्कार चंद्रिका नाम ग्रंथ भाषाभूषण का टीका १ औ कविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रिया का तिलक २ बिस्तार पूर्वक बनाया है औ तीनौ काण्ड अमरकोश भाषा किया है।

(९५) बलिभद्र सनाढ्य उड़छेवाले केशौदास कवि के भाई सं० १६४२ इन का नख सिख सारे कवि कोविदों में महाप्रमाणिक ग्रंथ है औ भागवतपुराण पर टीका बहुत सुंदर किया है।

(९६) बिट्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाईं बल्लभाचार्य्य के पुत्र सं० १६२४ ए महाराज वल्लभाचार्य्य जी के पुत्र परम भक्तवात्सल्यनेष्ठा के हुए हैं इन के सात पुत्रों की सात गादियां गोकुल जी में चली आती हैं इन की कविता पद इत्यादि बहुत से रागसागरोद्भव में हैं।

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५

(९८) पदुमनाभ जी ब्रजवासी कृष्णदास पयअहारी गलताजी के शिष्य सं० १५६० इन के पद बहुत राग सागरोद्भव में हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्यान, हठी नारायण, पदुमनाभ ए सब कृष्णदास जी के शिष्य, औ महान कवि हुए हैं औ अग्रदास के शिष्य नाभादास थे।

(९९)प्रवीन राइ पातुरीउडछा बुंदेलखण्डबासिनी सं० १६४० इस बेश्या की तारीफ में केशौ दास जू ने कविप्रिया ग्रंथ की आदि में बहुत कुछ लिखा है इस्के कवि होने में कुछ संदेह नहीं इस्का बनाया हुवा ग्रंथ तौ हम को नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिस में इस के सैकरों

---

* मारकंडे कबि ने मुझ से यह कबित्त कहा था—

जब ते सुनि हैं बैन तब तें न मोको चैन पाती पढ़ी नेकू सो बिलंब ना लगावेगो।
लैकै जमदूत सो समस्त राजपूत आज आठ घड़ी आगरा में उद्धम मचावैगो॥
कहे पृथ्वीराज प्रिया नेक उर धीर धारो चिरजीव राना ये मलेच्छन भगावैगो।
॥ मानको मरदि मान परवक प्रताप सिंह बब्बर को तड़पि अकब्बर पै आवैगो १

कवित्त बनाए हुए हैं हम ने किसी तवारीख में लिखा नहीं देखा कि बादशाह अकबर ने प्रवीन को बोलाया केवल विदित है कि अकबर ने प्रवीन की प्रवीनताई सुनी दरबार में हाजिर होने का हुकुम दिया तौ प्रवीन राय ने प्रथम राजा इंद्रजीत की सभा में जाय ए तीनि कूट कवित्त पढ़े (आई हों बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभा में बादशाह के गई तो बादशाह से प्रश्नोत्तर हुए।

बादशाह—युवन चलत तिय देह ते, चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन—मनमथ वारि मसाल को, सैंति सिंहारो लेतु ॥ १ ॥
बादशाह—ऊंचे ह्वै सुर बस किये, सम ह्वै नर बस कीन।
प्रवीन—अब पताल बस करन को, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥

इस्के पीछे जब प्रवीन ने यह दोहा पढ़ा।

बिनती राय प्रवीन की, सुनिये शाह सुजान।
झूंठी पतरी भषत हैं, बारी बायस स्वान ॥ १ ॥

तब बादशाह ने बिदाई दई औ प्रवीन इंद्रजीत के पास आईं।

(१००) भगवानदास निरंजनी भृत्यहरि सत कवितों में भाषा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० राग सागरोद्भव में इन के पद हैं।

(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ए महाराज अकबर शाह के मुसाहिब फारसी संस्कृत भाषा के महान् कवि थे फारसी में अपना नाम (तौसनी) करि कै बर्णन करते थे।

(१०२) परमानंद दास ब्रजबासी बल्लभाचार्य्य के शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं औ इनकी गिनती अष्टछाप में है।

(१०३) नवीनकवि बहुत ही सुंदर कवित्त शृंगार रस के हैं।

(१०४) मानिकचंद कवि सं० १६०८ राग सारारोद्भव में इन के पद हैं।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५

(१०६) मुकुंद सिंह हाड़ा महाराजै कोटा सं० १६३५ ए महाराजा शाहजहां बादशाह के बड़े सहायक औ कविताई में महा निपुण कवि-कोविदों के चाहक थे।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारक अली बिलग्रामी सं० १६४० इन की काव्य तौ विदित है इन का ग्रंथ कोई हम ने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालय में हैं।

(१०८) बीरबर (बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी) सं० १७७७ ए महान

कवि थे इन का बनाया हुवा कृष्ण चंद्रिका नाम ग्रंथ साहित्य में बहुत सुंदर औ हमारे पुस्तकालय में मौजूद है।

(११०) दिनेश कवि इन का नखसिख बहुत ही बिचित्र है।

(१११) दान कवि शृंगार में सरस कविताई है।

(११२) तोषी कवि।

(११३) तेही कवि।

(११४) धीरज नरिंद महाराजै इंद्रजीत सिंह बुंदेला उड़छावाले सं० १६१५ इन्ही महाराज के इहां कवि केशौदास थे औ प्रवीन राइ पातुरी भी इन्ही के सभा में विराजमान थीं इन के समय में उड़छा बड़ी राजधानी थी। *

(११७) श्रीगोस्वामी तुलसी दासजी सं० १६०१ ए महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर जिले पराग के रहनेवाले प्रायः संवत् १५८३ के करीब उत्पन्न हुए थे औ सं० १६८० में स्वर्गवास हुवा इन के जीवनचरित्र की पुस्तक बेनीमाधौदास कवि पसका ग्रामवासी ने जो इन के साथ साथ रहे हैं बहुत बिस्तार पूर्वक लिखी है उस्के देखने से इन महाराज सब चरित्र प्रगट होते हैं इस पुस्तक में ऐसे बिस्तार कथा को हम संक्षेप करिकै बर्णन करैं निदान गोसाईं जी बड़े महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध हो गए हैं इन के बनाए ग्रंथों का ठीक ठीक संख्या हम को मालूम नहीं हुई केवल जे ग्रंथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं उन का जिकिर किया जाता है प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफसील से।

---

* (११९) श्रीपति कवि का वर्णन पहले हुआ है परंतु वह इस दोहे का नहीं है।

रत्नाकर कवि ने हम से कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाह के नौकर थे परंतु खुशामदी न थे कईएक कवियों ने मिल कर अकबर बादशाह के सामने [करो मिलि आस अकब्बर की] समस्या दिये परंतु कवि ने स्पष्ट बादशाह को फटकारा यह कवि भक्त था वह तो कविता से स्पष्ट ही मालूम हुआ।

अब के सुलतॉं फुनियान समान हैं बांधत पाग अटब्बर की ।
तजि एक को दूजो भजै जो कोऊ तब जीभ कटै वह लब्बर की ॥
सरनागत श्रीपति श्रीपति की नहिं त्रास जरा कोऊ जब्बर की ।
जिन को नहिं आस कछू हरि की सो करो मिलि आस अकब्बर की ॥१॥

१ चौपाई रामायण ७ कांड । २ कवितावली ७ कांड । ३ गीतावली ७ कांड । ४ छंदावली ७ कांड । ५ बरवै ७ कांड । ६ दोहावली ७ कांड । कुंडलिया ७ कांड । औ सेवाय इन ४९ कांड के १ सतसई । २ रामसलाका । ३ संकटमोचन । ४ हनुमतबाहुक । ५ कृष्णगीतावली । ६ जानकीमंगल । ७ पारवतीमंगल । ८ कडकाछंद । ९ रोलाछंद । १० झूलनाछंद । इत्यादि और भी ग्रंथ बनाए हैं अंत में बिनयपत्रिका महा बिचित्र मुक्ति रूप प्राज्ञानंद सागरग्रंथ बनाया है. चौपाई गोसांई महाराज की ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न बिनयपत्रिका की समान अद्भुतग्रंथ आज तक किसी कवि महात्मा ने रचा इस काल में जो रामायण न होती तौ हम ऐसे मूर्खों का बेड़ा पार नहीं लगता गोसांई जी श्रीअयोध्या जी मथुरावृंदावन कुरुक्षेत्र पराग बाराणशी पुरुषोत्तमपुरी इत्यादि क्षेत्रों में बहुत दिन तक घूमते रहे हैं सब से अधिक श्रीअयोध्या काशी पराग औ उत्तराखण्ड बंशीबट इत्यादि जिले सीतापुर में रहे हैं इन के हाथ की लिखी हुई रामायण जो राजापुर में थी वह खण्डित हो गई है पर मलिहाबाद में आज तक संम्पूर्ण ७ काण्ड मौजूद हैं १ पत्रा नहीं है बिस्तार भय से अधिक हालात हम नहीं लिख सक्ते दो दोहा पर इन महाराज का बृत्तांत समाप्त करते हैं ।

दोहा । कविता करता तीनि हैं , तुलसी केशव सूर । *

---

* बाबू रघुनाथसिंह ने जो दोहे मुझे दिये थे उस से मालूम हुआ कि ११७ कवि सूरदास के समय में वर्तमान थे । इन में से दो तीन कवि को छोड़ कर सभों का नाम "शिवसिंह सरोज" में मिलता है पर इस से (शिवसिंह सरोज) जो मैंने समय लिखा है सब का समय सूरदास के समय से नहीं मिलता । सूरदास का समय १६४० संवत् "शिवसिंहसरोज" में लिखा है और सूरदास जी ने स्वयं " साहित्यलहरी " नामक पुस्तक में साहित्यलहरी के बनाने का समय १६०७ लिखा है । और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि संवत् १६२० के लगभग में इन्हों ने शरीर त्यागा । अब यदि सूरदास जी के जन्म से मरण प्रयंत १२५ वर्ष रख लेते हैं तौ भी संवत् १५०५ से ले कर १६२० तक होता है अब यदि संवत् १७०० से अधिक के समय के कवियों को सूरदास जी के सामायिक रघुनाथ सिंह के दोहे और "शिवसिंह सरोज" के अनुसार ठहराया गया है यह यथार्थ में ठीक नहीं है । अब सोचना

पड़ा कि बाबू रघुनाथ सिंह के दोहे ठीक हैं कि नहीं। यह तो मुक्त कंठ से कहना पड़ेगा कि उस दोहे के अनेक कवियों का सूरदास का सामयिक होना ठीक है परन्तु कईएक में भ्रम है उस में भी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस नाम के और कवि न हुये हों परन्तु "शिवसिंह सरोज" से जो मैं ने कवियों का समय प्रकाश किया है उस में अवश्य भ्रम है।

हरिश्चन्द्र जी ने लिखा है सूरदास के समय में तुलसी दास जी न हुए उस का कारण सोचने से यह मालूम होता है कि नन्ददास जी के भाई तुलसीदास जी पर ध्यान गया है क्योंकि वैष्णवों की चौरासीवार्ता में लिखा है कि तुलसी दास और नन्ददास भाई हैं और नन्ददास का समय सम्बत् १९८९ का है और तुलसीदास नन्ददास का भाई गोसांईचरित्र उर्दू में भी लिखा है। अथवा मीराबाई के समय पर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम" और "रामरसिकावली" तथा "हरिभक्तप्रकाशिका" में मीराबाई और तुलसीदास की बातचीत लिखी है परन्तु मीराबाई का समय तुलसीदास के समय में मेरी सम्मति से नहीं है।

क्योंकि 'शिवसिंहसरोज' में मीराबाई के विषय में यह लिखा है। "मीराबाई सं० १४७९में हुईं। हमने इनका जीवनचरित्र कविमाल तुलसीदास कायस्थ कृत में देखा और तारीख चित्तौर से मिलाया तो बहुत फरक पाया गया अब हम इन का हाल चित्तौर के प्राचीन प्रबंध से लिखते हैं ए मीराबाई माड़वार देश में राना राठौरवंसावतंस मेरतिया देशाधिपति के इहां उत्पन्न हुई थी यह रियासत सारे माड़वार के फिरकों में उत्तरोत्तर है और मीराबाई का विवाह संवत् १४७० के करीब राना मोकल देव के पुत्र राना कुंभकरन चितौर नरेश के साथ हुवा था संवत् १९२९ में ऊदाराना के पुत्र ने राना को मारडाला मीराबाई महा स्वरूपवान औ कविता में आति निपुणा थीं रागगोविंद ग्रंथ भाषा में बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढ़ में दो मंदिर करीब महल राना राय मल के थे एक राना कुंभू का औ दूसरा मीराबाई का सो मीराबाई अपने इष्टदेव श्यामनाथ की उसी मंदिर में अस्थापन कारि नृत्य गीत भाव भक्ति से रिझाया करती थीं एक दिन श्यामनाथ मीरा के प्रेमवस ह्वै चौकी से उतरि अंक में लै बोले हे मीरा, केवल एतना ही शब्द राधानाथ के मुंह से सुनि

अब के कवि खद्योत सम , जहं तहं करत प्रकाश ॥२॥

मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकबिहारी गिरिधारी के नित्यबिहार में जाय मिली इन दोनों मंदिरों के बनाने में नव्वे लाख रुपिया खर्च हुवा था।"

मीराबाई के विषय में 'तारीख़ तुहफ़ए राजस्थान' में मौलवी मुहम्मद उबैदुल्लाह फ़रहती ने लिखा है।

"सांगा को इस शिकस्त का निहायत रंज हुआ, वह इसी साल के अन्दर मेवाड़ के पहाड़ी इलाक़े में मौत से या किसी के ज़हर देने से इन्तिक़ाल कर गये, और उन के साथ मेवाड़ की तरक्की ख़त्म हो गई; अगर वह ज़िन्दह रहते, तो दोबारह लड़ाई में क़िस्मत आज़माई करते। यह महाराणा ज़ोरावर, ख़ूबसूरत और दर्मियानी क़द के आदमी थे। इन महाराणा के दो बेटे उन के साम्हने गुज़र चुके थे, जिन में से बड़े भोजराज के साथ मेड़तिया राठौड़ जयमल्ल की रिश्तहदार बहिन मीरांबाई, जिसके फ़क़ीरानह भजन अवाम में मशहूर हैं, ब्याही गई थी। कर्नेल टाड ने ग़लत तौर पर उस की शादी महारणा कुम्भा के साथ लिख दी है, जो सांगा जी के दादा थे। एशियाई मुल्कों में जियादह ब्याह करने से आदतें ख़राब और जिस्म ज़ईफ़ होने के सिवा, हर एक औरत अपनी औलाद की बिहतरी के वास्ते हर तरह की तद्बीर करना चाहती है, जिस से बहुत ख़राबियां पैद[illegible]ी हैं। इस लिये कर्नेल टाड ने ख़याल किया है, कि महाराणा सांगा[illegible] दोहे[illegible] के ख़ानदान में से किसी ने ज़हर दे दिया।"

अब पं० बलदेव[illegible] और पं० गनपतलाल चौबे की बात पर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन्हें शुद्ध भरम होगया है जरा भक्तमाल भी पढ़े होते तो सूरदास कितने हुए हैं मालूम हो जाता, फिर जिस सूरदास का सूरसागर बनाया है व्यर्थ उन में और सूरदास का हाल न लिखते।

नामक मासिक पत्रिका अनेक उत्तम विषयों से अर्थात् इतिहास, परिहास, पन्यास, जीवनचरित्र, काव्य, कोष, नाटक, रूपक, वैद्यक, नीति, धर्मशास्त्र, ान, विज्ञान, नियुद्ध, शिल्प आदि से पूरित होकर प्रतिमास की, शुक्ला दशमी ो छपती है इस में सब से बढ़कर उत्तमता तो यह है कि जिस विषय में हाथ गाया जाता है उसे पूरा कर के तब दूसरे विषय को लिखा जाता है और वह वेषय सालभर के अन्दर में पूरा कर दिया जाता है, प्रतिमास दस फार्म अर्थात ८० पेज छपती है जिन्हें इस के ग्राहक बनने की इच्छा होवे मुझे लिखें। वार्षिक मूल्य डाकव्यय समेत ६।⁄) है।

ब्राह्मण।

अनेकानेक उत्तमोत्तम गद्य तथा पद्य लेखों से विभूषित।

मासिक पत्र।

हिन्दुस्तान और इंग्लिस्तान के जितने हिन्दी रसिक सहृदय हैं तथा हिन्दी के जितने उत्तम पत्र हैं सब इस की उत्तमता पर शाक्षी हैं आठ वर्ष से यह पत्र मनो बिनोद एवं सदुपदेश पूर्ण विषयों के द्वारा देश के मंगल साधन में तत्पर है इस के सम्पादक पंडित प्रताप नारायण मिश्र की लेख शक्ति की प्रशंसा श्री मान् गोलोक बिहारी भारतेन्दु भारतभूषण बाबू हरिश्चन्द्र महोदय की लेखनी ने स्वयं लिखी है तथा कई एक सुप्रसिद्ध साप्ताहिक एवं मासिकपत्रों ने बारम्बार प्रकाशित किया है कि 'भारतेन्दु जी के उपरान्त उन के लेखों का सा आनन्द यदि कहीं मिलता है तो पंडित ही जी के लेखों में मिलता है' हमारे कहने को न मानिए तो भारत अथवा इंग्लैंड में जिन्हें आप हिन्दी का सुलेखक सत्कवि वा रसज्ञ समझते हों उन से पूछ देखिए वा किसी नम्बर का कोई आर्टिकिल पढ़ के स्वयं न्याय कर लीजिये तो आशा नहीं विश्वास है कि इसे अपने ढंग में अद्वितीय ही पत्र पाइएगा इस वर्ष से कईएक और भी सुप्रसिद्ध विद्वानों ने इस में लिखना आरम्भ किया है अतः अब सोने में सुगन्धि हो गई है और डाकव्यय समेत वार्षिक मूल्य केवल १ रु० है यदि इतने पर भी ग्राहक न हूजिए तो अंधेर है हिन्दी भाषा हिन्दू जाति और हिन्दुस्तान का अभाग्य है और क्या कहा जाय मिलने का पता।

मैनेजर "खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर।

श्रीरामचरितमानस

अर्थात्

श्री तुलसी दास कृत रामायण ।



यह ग्रन्थ बड़े परिश्रम और यत्न से श्रीतुलसीदास जी की लिखीहुई खास प्रति से शोध कर ज्यों का त्यों छापा गया है । इस भय से कि कदाचित् कोई इसे असंभव समझे, गोसाईं जी के हाथ की लिखी हुई प्रति के १० पृष्ठ का फोटोग्राफ़ भी पुस्तक में लगादिया है, और उस को दृढ़ पुष्टि केलिये गोसाईं जी के हाथ के लिखे हुए पञ्चनामा का फोटोग्राफ़ भी उसी के संग है, जिस में लोगों को यह भी न कहना पड़े कि गोसाईं जी के हाथ के लिखे हुए का प्रमाण ही क्या है ? और लोगों की भांति मैं नहीं चाहता कि इश्तिहार में नीचे से ऊपर तक प्रशंसा ही भर दूं क्योंकि जो इस के गुण ग्राहक हैं उन के लिये इतना ही बहुत है । इस ग्रन्थ में तुलसीदास जी का जीवनचरित्र भी दिया गया है और अक्षर बड़ा वो काग़ज़ अच्छा है । तीन सौ वर्ष पर यह अलभ्य पदार्थ हाथ लगा है, जिन को रामरस का अपूर्व स्वाद लेना हो वे न चूकें और नीचे लिखे हुए पते से मंगा लेवें । नहीं तो अवसर निकल जाने पर पछताना होगा ।

मूल्य फोटोग्राफ़ सहित ६) मूल्यबिना फोटो की ४) डाक महसूल १॥)

रसिकविनोद ।

हम किसी से क्यों कहें ? जो रसिक होगा, जो विनोद चाहेगा, जो राधा कृष्ण का प्रेमी होगा और जो रसीले कवित्तों का प्यासा होगा ; वह आपही इस ग्रन्थ केलिये हाथ उठा कर दौड़ेगा । यह ग्रन्थ मझौली के महाराजाधिराज कुमार श्री लाल साहब बहादुर का बनाया है केवल ।) भेज देने से यहां मिलैगा ।

साहबप्रसाद सिंह ।

खड्गविलास प्रेस बांकीपुर ।